सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 32, नई दिल्ली । शनिवार, 12 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 राम भक्त हनुमान सिखाते हैं जीवन जीने की कला
06 टूटती उम्मीदें, बिखरते युवा
08 वक्फ विधेयक बिल की बजे से बिजेड़ी दल का बिभाजन शुरु हुआ है

क्या दिल्ली में प्रदूषण से मुक्ति मिलेगी या यू ही प्रदूषण के नाम पर होती रहेगी जनता की जेब खाली ?

क्या सच में सरकार और सरकारी अधिकारी चाहते हैं दिल्ली से प्रदूषण मुक्ति ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली जो कभी ग्रीन सिटी के खिताब से सुसज्जित राज्य था में ऐसा क्या हुआ की 2014 से अब तक प्रदूषण के चैंबर में तब्दील हो गई। सबसे अधिक प्रदूषित राज्यों में गिना जाने वाला राज्य बनकर रह गया।

आखिर कौन है इसका जिम्मेदार, क्या जनता या सरकार और सरकारी अधिकारी ? बड़ा सवाल ?

दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में लिखित दिया गया था की **"दिल्ली में भारत मानक IV के डीजल और पेट्रोल उपलब्ध होने पर वाहनों का प्रदूषण जीरो हो जाएगा? और आज तो दिल्ली में भारत मानक VI का डीजल और पेट्रोल उपलब्ध है फिर वाहनों से प्रदूषण कैसे ?** दिल्ली परिवहन विभाग ने माननीय सुप्रीम कोर्ट को कहा था की **सीएनजी चालित वाहनो से प्रदूषण नहीं होता फिर आज सीएनजी चालित वाहनो से प्रदूषण कैसे ?** आखिर दिल्ली सरकार द्वारा ऐसी घोषणा करना की

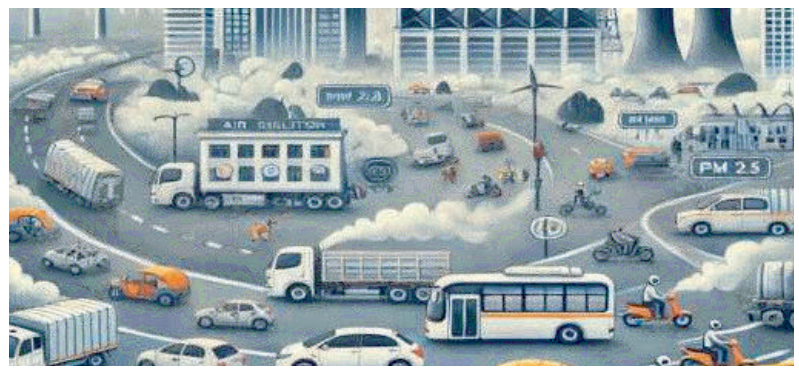

"जल्द ही दिल्ली में डीजल, पेट्रोल और सीएनजी वाहनों के पंजीकरण पर रोक लगा दी जाएगी और दिल्ली में सिर्फ इलेक्ट्रिक वाहनों को ही चलने की इजाजत होगी" व्यवसायिक गतिविधि में शामिल सभी श्रेणियों के वाहन सिर्फ इलेक्ट्रिक रहेंगे जो सीएनजी फ्यूल मोड में है और जिनकी समय सीमा बची हुई है उन्हें भी अपने वाहनों को चलाने के लिए इलेक्ट्रिक में परिवर्तित करवाना होगा का क्या अर्थ माना जाए ? **सन 2000 में सरकार ने माननीय सुप्रीम कोर्ट में सीएनजी को ग्रीन फ्यूल बता कर दिल्ली में व्यवसायिक गतिविधि में शामिल सभी श्रेणियों के डीजल और पेट्रोल के समय सीमा बचे वाहनों में सीएनजी किट लगवाना अनिवार्य करवा दिया था** और अब सीएनजी को भी डीजल और पेट्रोल की तरह प्रदूषण करने वाला फ्यूल बता कर इलेक्ट्रिक में परिवर्तित करने के आदेश जारी करने जा रहे है का अर्थ जनता क्या माने। **स्वयं सरकार और सरकारी विभागों के आला अधिकारी एक तरफ माननीय सुप्रीम कोर्ट में एफिडेविट देकर कहते हैं**

1. डीजल पेट्रोल फ्यूल मानक भारत IV भारत में उपलब्ध होने पर वाहनों का प्रदूषण उत्सर्जन जीरो हो जाएगा
2. सीएनजी फ्यूल ग्रीन फ्यूल है इसके प्रयोग से वाहनों का प्रदूषण उत्सर्जन जीरो है

फिर आज ऐसा क्या हुआ की दिल्ली में पेट्रोल, डीजल और पेट्रोलियम उत्पाद भारत मानक यूरो VI उपलब्ध होने पर भी वाहनों द्वारा प्रदूषण उत्सर्जन और साथ ही सीएनजी जो स्वच्छ फ्यूल ग्रीन फ्यूल था उसके उपयोग से वाहनों से प्रदूषण उत्सर्जन, कैसे ? कही सरकार और सरकारी अधिकारी अपनी नाकामी और अपनी कमियों और गलतियों का ठीकरा वाहन मालिकों पर वाहन के द्वारा प्रदूषण के नाम पर फोड़ कर अपना घर और राजस्व तो नहीं भर रहे हैं। सोचना अवश्य।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए **प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है** और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की **"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र"** का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

अमृत स्टेशन योजना के तहत ओडिशा के प्रमुख स्टेशनों का नवीनीकरण किया जाएगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मध्य ओडिशा में रेलवे के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के लिए एक परिवर्तनकारी कदम के रूप में, भारतीय रेलवे ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत प्रमुख स्टेशनों के व्यापक पुनर्विकास की पहल की है। इस पहल का उद्देश्य लाखों लोगों के यात्रा अनुभव को बेहतर बनाना तथा आर्थिक विकास और क्षेत्रीय सम्पर्क को बढ़ावा देना है ।इस महत्वाकांक्षी परियोजना में छह महत्वपूर्ण स्टेशनों - अंगुल, तालचेर, तालचेर रोड, मेरामंडली, ढेंकनाल और रेढ़ाखोल - का उन्नयन शामिल है, ताकि उन्हें डिजाइन, पहुंच, स्थिरता और यात्री सुविधाओं के विश्व स्तरीय मानकों के अनुरूप बनाया जा सके।

आधुनिकीकरण की मुख्य विशेषताएं:

उन्नत वास्तुकला, आधुनिक सुविधाओं और बेहतर यात्री सेवाओं के साथ नया स्टेशन भवन।

दृश्यता और सामने के यातायात के लिए स्टेशन के अग्रभाग में सुधार किया गया।

सभी यात्रियों की पहुंच में सुधार के लिए चौड़ा

फुट ओवरब्रिज (12 मीटर) और यात्री लिफ्ट।

बेहतर सतह गुणवत्ता, उन्नत आश्रय, डिजिटल साइनेज और सुरक्षा प्रणालियों के साथ बेहतर प्लेटफॉर्म।

हरित एवं टिकाऊ डिजाइन सिद्धांत, जिसमें ऊर्जा-कुशल प्रकाश व्यवस्था, जल संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हैं।

ड्रॉप-ऑफ/पिक-अप लेन और पर्याप्त पार्किंग सुविधाओं के साथ एकीकृत परिवहन बुनियादी ढांचा।

डिजिटल सुविधाएं जैसे वाई-फाई, एलईडी कोच साइनेज बोर्ड, ट्रेन सूचना डिस्प्ले और बेहतर लाउंज क्षेत्र।

महिलाओं को टू व्हीलर खरीदने पर मिल सकती है 36000 रुपये तक की सब्सिडी

दिल्ली सरकार जल्द ही अपनी प्रस्तावित इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीति 2.0 लागू करने वाली है। इसके तहत महिलाओं को इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन खरीदने पर 36000 रुपये तक की सब्सिडी मिल सकती है। यह लाभ पहली 10000 ड्राइविंग लाइसेंस धारक महिलाओं के लिए होगा। नीति में पुराने सीएनजी ऑटो और पेट्रोल-डीजल वाहनों को हटाने की योजना है जिससे दिल्ली में प्रदूषण कम करने में मदद मिलेगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार जल्द ही अपनी प्रस्तावित इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) नीति 2.0 को लागू करने की तैयारी में है, जिसका मकसद शहर में वायु प्रदूषण को कम करना और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना है। इस नीति के तहत महिलाओं को इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन खरीदने पर विशेष प्रोत्साहन के रूप में 36,000 रुपये तक की सब्सिडी दी जाएगी। अधिकारियों के अनुसार, यह लाभ पहली 10,000 महिलाओं के लिए होगा, जिनके पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस होगा। प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है और जल्द ही इसे मंजूरी मिलने की उम्मीद है।

ईवी नीति 2.0 में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए प्रति किलोवाट-घंटा (kWh) 12,000 रुपये की खरीद प्रोत्साहन राशि दी जाएगी, जो अधिकतम 36,000 रुपये तक होगी। यह नीति केंद्र सरकार की पीएम ई-ड्राइव योजना के साथ मिलकर दिल्ली में इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाने में मदद करेगी। नीति 31 मार्च 2030 तक प्रभावी रहेगी और इसमें दोपहिया, तिपहिया और व्यावसायिक वाहनों के लिए कई प्रोत्साहन शामिल हैं।

सीएनजी ऑटो-रिक्शा को इलेक्ट्रिक ऑटो से बदलना अनिवार्य

दोपहिया इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए सरकार प्रति kWh 10,000 रुपये की सब्सिडी दे सकती है, जो प्रति वाहन अधिकतम 30,000 रुपये तक होगी। इसके अलावा, जो लोग अपने 12 साल से पुराने ईंधन आधारित दोपहिया वाहनों को स्क्रैप करेंगे, उन्हें अतिरिक्त 10,000 रुपये का प्रोत्साहन मिलेगा। इलेक्ट्रिक ऑटो-रिक्शा (L5M श्रेणी) के लिए, जो मौजूदा सीएनजी ऑटो की जगह लेंगे, प्रति kWh 10,000 रुपये की सब्सिडी दी जाएगी, जो अधिकतम 45,000 रुपये तक होगी।

साथ ही, 12 साल से कम पुराने सीएनजी ऑटो को स्क्रैप करने पर 20,000 रुपये का प्रोत्साहन मिलेगा। नीति में यह भी प्रस्ताव है कि 10 साल पुराने सभी सीएनजी ऑटो-रिक्शा को इलेक्ट्रिक ऑटो से बदलना अनिवार्य होगा, जिसमें प्रति वाहन 1,00,000 रुपये की प्रतिस्थापन राशि दी जाएगी।

15 अगस्त 2025 से नए सीएनजी ऑटो का पंजीकरण बंद होगा

वाणिज्यिक माल वाहकों के लिए भी प्रोत्साहन प्रस्तावित हैं। इलेक्ट्रिक तिपहिया माल वाहक (L5N) को प्रति kWh 10,000 रुपये, अधिकतम 45,000 रुपये, और चार पहिया माल वाहक (N1 श्रेणी) को 75,000 रुपये तक की सब्सिडी मिलेगी। नीति में सीएनजी ऑटो-रिक्शा को चरणबद्ध तरीके से हटाने की सिफारिश की गई है, जिसमें 15 अगस्त 2025 से नए सीएनजी ऑटो का पंजीकरण बंद होगा। साथ ही, 15 अगस्त 2026 से पेट्रोल, डीजल और सीएनजी से चलने वाले दोपहिया वाहनों पर भी रोक लगेगी।

दिल्ली सरकार ने मौजूदा ईवी नीति को 31 मार्च के बाद 15 दिन के लिए बढ़ाया था। नई नीति को दिल्ली कैबिनेट की मंजूरी के बाद अधिसूचित किया जाएगा। यह कदम दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति को सुधारने के लिए आक्रामक तरीके से ईंधन आधारित वाहनों को हटाने की दिशा में एक बड़ा प्रयास है।

डिपो में खड़ी बस बनी आग का गोला

कड़ी मशक्कत के बाद फायर बिग्रेड ने पाया काबू

रोहिणी सेक्टर 37 स्थित डीटीसी डिपो में खड़ी एक बस में शुक्रवार सुबह अचानक आग लग गई। आग बस की छत पर लगी बैटरी केबिन में लगी थी लेकिन दमकल विभाग ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आग पर काबू पा लिया। एहतियात के तौर पर डिपो से अन्य बसों को हटा दिया गया।

दिल्ली। रोहिणी सेक्टर 37 स्थित डीटीसी में डिपो खड़ी बस में शुक्रवार सुबह अचानक आग लग गई। आग बस की छत पर बैटरी केबिन में लगी। आग को बैटरी केबिन में ही नियंत्रित कर लिया, इस वजह से आग पूरी बस को अपनी जद में नहीं ले पाई। एहतियाती तौर पर डिपो से अन्य बसों को हटा लिया गया। दिल्ली दमकल सेवा के अधिकारी ने बताया कि आग बुझाने के लिए चार गाड़ियों को मौके पर भेजा गया है। आग पर काबू पा लिया गया है।

हनुमान जी से स्वयंसेवाशाला – नेतृत्व की पहली सीढ़ी : एक पहल - डॉ. अंकुर शरण

जब भी हम किसी महानायक की बात करते हैं, तो उनके नेतृत्व गुणों की चर्चा जरूर होती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि एक सच्चा नेता बनने के लिए पहले एक सच्चा स्वयंसेवक बनना पड़ता है ? यही सन्देश हमें देते हैं हमारे सबसे प्रिय भक्त – बजरंगबली हनुमान जी।

डॉ. अंकुर शरण की पहल 'स्वयंसेवाशाला' #Volunteershala एक अद्भुत प्रयास है, जिसमें आज के युवाओं को यह सिखाया जा रहा है कि कैसे वे समाज के लिए सेवा भावना से कार्य करते हुए नेतृत्व की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

हनुमान जी – सेवा, समर्पण और संकल्प का प्रतीक

हनुमान जी का सम्पूर्ण जीवन सेवा और समर्पण की मिसाल है। उन्होंने कभी भी नेतृत्व की लालसा नहीं की, लेकिन उनकी निस्वार्थ सेवा, संकल्प और समर्पण के कारण वे रामायण के सबसे भरोसेमंद और शक्तिशाली पात्र बन गए।

आज्ञा पालन में निपुण: एक स्वयंसेवक की पहली पहचान है कि वह बिना शर्त अपने मार्गदर्शक की आज्ञा का पालन करे। हनुमान जी ने श्रीराम की हर आज्ञा को अपना धर्म समझा और उसे पूर्ण निष्ठा से निभाया।

स्वार्थरहित सेवा: चाहे वह माता सीता की खोज हो, संजीवनी बूटी लाना हो या लंका दहन – हनुमान जी का हर कार्य दूसरों के लिए था, अपने लिए नहीं।

ज्ञान और शक्ति का संयमित उपयोग: हनुमान जी में अपार शक्ति थी, लेकिन उन्होंने कभी उसका दुरुपयोग नहीं किया। एक सच्चे स्वयंसेवक को अपने ज्ञान और शक्ति का उपयोग समाज की भलाई के लिए करना चाहिए।

नम्रता और नेतृत्व: जब भी किसी कार्य का श्रेय उन्हें दिया गया, उन्होंने उसे अपने आराध्य प्रभु श्रीराम के चरणों में समर्पित कर दिया। एक सच्चा नेता वही होता है जो अपनी टीम को आगे रखे और स्वयं पीछे खड़ा रहे।

स्वयंसेवाशाला का उद्देश्य – लीडर बनने से पहले स्वयंसेवक बनो

डॉ. अंकुर शरण मानते हैं कि आज के युवाओं में क्षमता है, लेकिन उन्हें दिशा देने और सेवा की भावना जगाने की आवश्यकता है।

स्वयंसेवाशाला में उन्हें यह सिखाया जाता है कि –

कैसे छोटे-छोटे सामाजिक कार्यों से शुरुआत कर वे समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं

कैसे टीमवर्क और अनुशासन से वे नेतृत्व के गुण विकसित कर सकते हैं

कैसे सेवा, समर्पण और संवेदना उन्हें एक सच्चा नेता बना सकती है

हनुमान जयंती पर विशेष संदेश

हनुमान जयंती के पावन अवसर पर स्वयंसेवाशाला सभी युवाओं से आह्वान करती है कि वे हनुमान जी के जीवन से प्रेरणा लें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए स्वयंसेवक बनें।

सेवा से ही नेतृत्व आता है, और नेतृत्व से ही परिवर्तन।

जय बजरंगबली !

डॉ. अंकुर शरण के नेतृत्व में चल रही स्वयंसेवाशाला – एक संस्कार, एक संकल्प।

अगर आप भी इस पहल से जुड़ना चाहते हैं, तो आज ही अपने आस-पास किसी एक कार्य में स्वयंसेवक बनकर शुरुआत करें – क्योंकि बिना सेवा के नेतृत्व केवल एक पद होता है, भावना नहीं।

हनुमान जन्मोत्सव

हनुमान जन्मोत्सव की तिथि पंचांग के अनुसार हर वर्ष चैत्र पूर्णिमा तिथि पर बड़े ही धूम-धाम के साथ महाबली और महाप्रतापी हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इस बार पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 12 अप्रैल 2025 को सुबह 03 बजकर 20 मिनट से होगी जो अगले दिन यानी 13 अप्रैल को सुबह 05 बजकर 52 मिनट पर समाप्त हो जाएगी। उदयातिथि के आधार पर हनुमान जन्मोत्सव 12 अप्रैल को है।

हर वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि पर प्रभु श्रीराम के जन्मोत्सव के बाद चैत्र पूर्णिमा तिथि पर भगवान राम के सबसे अनन्य भक्त और संकटमोचन भगवान हनुमान का जन्मोत्सव बड़े ही धूम-धाम के मनाया जाता है। हिंदू धर्म में हनुमान जी को कलयुग का देवता माना गया है और ये आज भी इस पृथ्वी पर भ्रमण करते हैं और अपने भक्तों को आशीर्वाद देते हैं। शास्त्रों में हनुमान जन्मोत्सव का विशेष महत्व होता है। वैदिक पंचांग के अनुसार हर वर्ष चैत्र माह की पूर्णिमा तिथि को हनुमान जन्मोत्सव बड़े ही धूम-धाम के साथ मनाने की परंपरा है। हनुमान जन्मोत्सव पर भगवान बजरंगबली की विशेष रूप से पूजा-आराधना और चालीसा का पाठ करते हुए अपनी समस्त मनोकामनाओं को पूरा करने की इच्छा रखती हैं। हनुमान जन्मोत्सव पर हनुमान जी की पूजा करने से हर तरह के कष्टों से मुक्ति मिलती है।

हनुमान जन्मोत्सव की तिथि पंचांग के अनुसार हर वर्ष चैत्र पूर्णिमा तिथि पर बड़े ही धूम-धाम के साथ महाबली और महाप्रतापी हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इस बार पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 12 अप्रैल 2025 को सुबह 03 बजकर 20 मिनट से होगी जो अगले दिन यानी 13 अप्रैल को सुबह 05 बजकर 52 मिनट पर समाप्त हो जाएगी। उदयातिथि के आधार पर हनुमान जन्मोत्सव 12 अप्रैल को है।

हनुमान जन्मोत्सव पर पूजा का शुभ मुहूर्त

- सुबह पूजा करने के लिए 07 बजकर 35 मिनट से लेकर 09 बजकर 11 मिनट तक।

- शाम के समय पूजा करने लिए 06 बजकर 45 मिनट से लेकर रात 08 बजकर 08 मिनट तक।

हनुमानजी की पूजा का महत्व शास्त्रों के अनुसार हनुमानजी जल्द प्रसन्न होने वाले देवता हैं और यह आठ चिरंजीवियों में से एक हैं, जो आज भी इस पृथ्वी पर मौजूद हैं। ऐसी मान्यता है कि जो भी भक्त हनुमान जी पूजा-आराधना सच्चे मन और लगन से करता है उसकी हर एक मनोकामना जरूर पूरी होती है। सच्चे मन से हनुमानजी की पूजा करने पर व्यक्ति की हर एक मनोकामना पूरी होती है और जीवन में सुख-समृद्धि का आशीर्वाद उनसे मिलता है। हनुमान जन्मोत्सव पर हनुमान के दर्शन करते हुए चालीसा और सुंदरकांड का पाठ करना बहुत ही लाभकारी साबित होता है। इन दिन हनुमानजी का प्रिय भोग उनको अर्पित करना चाहिए। उनको पान का बीड़ा, बेसन के लड्डू, बूंदी और सिंदूर चढ़ाना बहुत ही शुभ होता है।

पान का बीड़ा हनुमान जन्मोत्सव के दिन आप अंजनीपुत्र को पान का बीड़ा भी भोग स्वरूप चढ़ा सकते हैं। ऐसा करने से दुश्मन से छुटकारा मिलता है। इतना ही नहीं जीवन की समस्याएं दूर होती हैं। इस बात का ध्यान रखें कि इसमें चूना, तंबाकू जैसी चीजें शामिल नहीं होनी चाहिए।

श्री हनुमान स्तोत्र पाठ का है विशेष महत्व हनुमान जन्मोत्सव पर हनुमान स्तोत्र पाठ का विशेष महत्व होता है। इस पाठ को करने से जीवन में चल रही समस्त परेशानियां दूर होती है। और यह स्त्रोत भगवान हनुमान की असीम शक्ति, भक्ति और कृपा को आकर्षित करने का एक सशक्त माध्यम है। इसलिए इस स्तोत्र का पाठ ना सिर्फ संकटों को टालता है। बल्कि सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी करता है।

साल में दो बार क्यों हनुमान जन्मोत्सव हनुमान जन्मोत्सव का पर्व साल में दो बार मनाए जाने की परंपरा है। दरअसल हनुमान जन्मोत्सव को तो साल में एक बार मनाया जाता है लेकिन दूसरी बार हनुमान जन्मोत्सव को विजय अभिनन्दन महोत्सव के रूप में मनाए जाने की परंपरा है। वाल्मीकि रामयाण के अनुसार, हनुमानजी का जन्म कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि, मेष लग्न और स्वाति नक्षत्र में एक गुफा में हुआ था। इसलिए इस दिन को हनुमानजी को प्राकट्य उत्सव के रूप में मनाया जाता है। वहीं चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को हनुमान जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। चैत्र मास की पूर्णिमा तिथि को हनुमान जन्मोत्सव तो कार्तिक मास की चतुर्दशी तिथि को विजय अभिनन्दन महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

पूजन विधि हनुमान जी की पूजा के लिए केसरिया या लाल रंग के वस्त्र धारण करें। हनुमानजी के मंदिर जाकर उनकी प्रतिमा पर सिंदूर लगाएं। उन्हें विधि-विधान से पूजा सामग्री अर्पित करें। बजरंग बाण का पाठ करें। हनुमान जी को बेसन के लड्डू, खीर, बूंदी, केले के फल आदि का भोग लगाएं।

हनुमान जन्मोत्सव विशेष

अंजनी माता की अद्भुत आराधना और गर्भसंस्कार

चैत्र पूर्णिमा का दिन केवल एक पर्व नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है – माँ अंजनी के तप, श्रद्धा और शक्ति की, और उनके गर्भ से जन्मे उस दिव्य बालक की, जो आगे चलकर रामभक्त, ज्ञानवान, अजेय और अमर बनकर पूरी सृष्टि के लिए आदर्श बन गया।

माता अंजनी (पूर्वजन्म में अप्सरा पुंजिकस्थला) ने वानरी योनि में जन्म लेने के बाद अपने जीवन को तपस्या और भक्ति के लिए समर्पित कर दिया। उत्तम संतान प्राप्ति की इच्छा से उन्होंने हिमालय की पर्वतों पर जाकर भगवान शिवजी की घोर तपस्या की। पवनदेव की सहायता से शिवजी की दिव्य ऊर्जा उनके गर्भ में प्रवेश कर गई, जिसके फलस्वरूप दिव्य बालक हनुमान जी का जन्म हुआ।

गर्भसंस्कार और माँ अंजनी की तपस्या गर्भकाल में माँ अंजनी प्रतिदिन राम नाम का जप करती थीं। उन्होंने शुद्ध आहार, सात्विक विचार, और ध्यानपूर्ण जीवनशैली अपनाई। वे जानती थीं कि उनका पुत्र कोई साधारण बालक नहीं, बल्कि युगपुरुष होगा।

पौराणिक कथा का सार पूर्व जन्म में अप्सरा पुंजिकस्थला को श्रापवश वानरी योनि में जन्म लेना पड़ा। इस जन्म में वह माँ अंजनी बनीं। उन्होंने गहन तपस्या और ईश्वर भक्ति के द्वारा शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी ने उन्हें एक दिव्य संतान को जन्म देने का वरदान दिया। पवनदेव के माध्यम से शिवजी की ऊर्जा उनके गर्भ में प्रविष्ट हुई और चैत्र पूर्णिमा के दिन हनुमानजी का जन्म हुआ। इसी कारण उन्हें पवनपुत्र हनुमान कहा जाता है।

चैत्र पूर्णिमा का विशेष महत्व यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि माँ अंजनी जैसी माताएँ गर्भकाल में भक्ति, ध्यान और सात्विक जीवनशैली से संतान के उज्ज्वल भविष्य की नींव रख सकती हैं। यह समय गुणों और भक्ति की ऊर्जा को अपने जीवन में उतारने का श्रेष्ठ अवसर है।

हनुमानजी को प्राप्त अष्ट सिद्धियाँ और नव निधियाँ

अष्ट सिद्धियाँ:

अणिमा – सूक्ष्म बनने की शक्ति

महिमा – विशाल रूप धारण करने की शक्ति

गरिमा – अत्यधिक भारी होने की शक्ति

लघिमा – अत्यंत हल्का होने की शक्ति

प्राप्ति – इच्छित वस्तु की प्राप्ति

प्राकाम्य – इच्छित कार्य की सिद्धि

ईशित्व – प्रभुता प्राप्त करने की शक्ति

वशित्व – दूसरों को वश में करने की शक्ति

नव निधियाँ:

पद्म

महापद्म

शंख

मकर

कच्छप

मुकुंद

नंद

नील

खर्व

साधक को क्या करना चाहिए?

1. गर्भधारण से पहले संयम, ब्रह्मचर्य और सात्विकता का पालन करें।

2. गर्भकाल में भक्ति, जप, ध्यान और सद्ग्रंथों का श्रवण करें।

3. बच्चों को भगवान के भक्तों की जीवनियाँ पढ़ाएँ।

4. हनुमानजी की भक्ति करें, राम नाम का जप करें और हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें।

हनुमान जन्मोत्सव – केवल तिथि नहीं, एक प्रेरणा हनुमान जन्मोत्सव केवल एक पावन तिथि नहीं, यह माता अंजनी के महान तप और श्रेष्ठ गर्भ संस्कार की प्रेरणादायी गाथा है। यह वह दिन है जब हम समझ सकते हैं कि एक माँ अपने तप और भक्ति से भगवान समान संतान को जन्म दे सकती है। संतान की उन्नति केवल शिक्षा से नहीं, बल्कि गर्भ संस्कार से होती है। हनुमानजी का जीवन इसका आदर्श प्रमाण है।

भारत में हनुमान जी के प्रमुख मंदिर

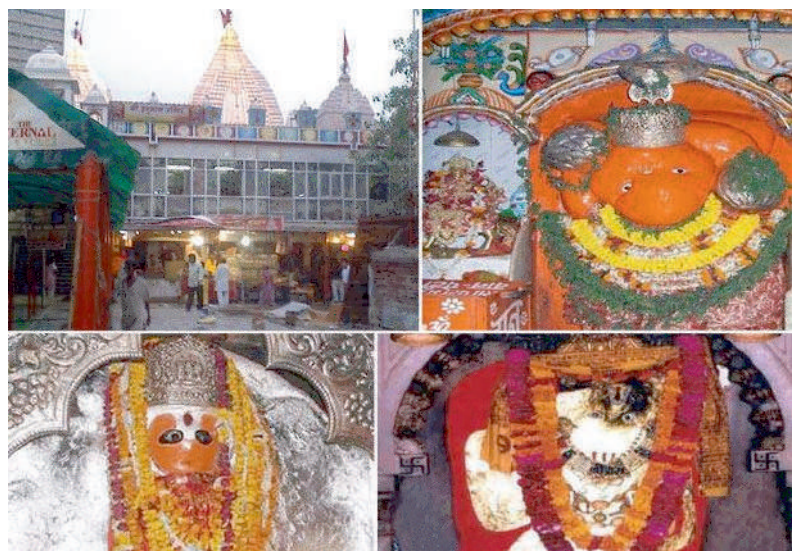

भारत सहित विश्वभर में हनुमान जी के कई चमत्कारी और प्रसिद्ध मंदिर हैं। यह ना सिर्फ धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि इनसे कई रोचक कथाएं और मान्यताएं भी जुड़ी हुई हैं। नीचे हनुमान जी के कुछ प्रमुख मंदिरों की सूची दी गई है:

1. संकटमोचन हनुमान मंदिर – वाराणसी, उत्तर प्रदेश गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा स्थापित। यहां भक्तों की मनोकामनाएं विशेष रूप से पूरी होती हैं।

2. हनुमानगढ़ी – अयोध्या, उत्तर प्रदेश श्रीराम की नगरी अयोध्या में स्थित यह मंदिर 76 सीढ़ियों के ऊपर बना है। मान्यता है कि हनुमान जी यहाँ अपने प्रभु श्रीराम की रक्षा करते हैं।

3. महेन्द्रगिरी हनुमान मंदिर – ओडिशा कहा जाता है कि हनुमान जी ने यहीं से संजीवनी बूटी के लिए उड़ान भरी थी। यह स्थान पौराणिक दृष्टि से अत्यंत महत्व रखता है।

4. सालासार बालाजी मंदिर – राजस्थान यह मंदिर बालाजी के चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है। यहां बिना आमंत्रण भी भक्त खिंचे चले आते हैं।

5. मेहंदीपुर बालाजी – दौसा, राजस्थान भूत-प्रेत बाधा निवारण के लिए अत्यंत प्रसिद्ध। यह मंदिर तांत्रिक बाधाओं से मुक्ति के लिए जाना जाता है।

6. जाखू मंदिर – शिमला, हिमाचल प्रदेश समुद्र तल से 8,500 फीट की ऊँचाई पर स्थित। कहा जाता है कि संजीवनी बूटी खोजते समय हनुमान जी यहीं रुके थे।

7. हनुमान टेकी – हंपी, कर्नाटक यह स्थान हनुमान जी का जन्मस्थान माना जाता है (आंजनाद्री पर्वत)। अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य के बीच स्थित यह मंदिर आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर है।

8. दिल्ली का प्राचीन हनुमान मंदिर – कनॉट प्लेस, दिल्ली यह मंदिर महाभारत काल से जुड़ा हुआ माना जाता है। यहां हनुमान जी की दायीं ओर की गदा वाली मूर्ति स्थापित है।

9. श्री हनुमान जी मंदिर – अंबा जी, गुजरात गुजरात के प्रमुख मंदिरों में से एक, यहाँ हनुमान भक्तों की अटूट श्रद्धा देखने को मिलती है।

भारत के बाहर प्रसिद्ध हनुमान मंदिर:

1. हनुमान मंदिर – बाली, इंडोनेशिया इंडोनेशिया में हिन्दू संस्कृति और हनुमान जी की पूजा आज भी बड़े भाव से की जाती है।

2. हनुमान रंगमंच मंदिर – थाईलैंड थाई संस्कृति में हनुमान एक योद्धा के रूप में पूजित हैं।

सच्चे राम भक्त

'हर एक सुख में, दु:ख में,
दीनानाथ के साथ रहे
अपने प्रभु का नाम रटते हुए,
वही सच्चे राम भक्त बने।

वह नौ निधि के दाता,
अंजनी जिनकी माता
सूरज को फल समझने वाले,
वही सच्चे राम भक्त बने।

वह प्रभु राम के दूत बन,
तपस्या करते रहे प्रभु मिलन की
विश्वास जिनका था अटूट,
तभी तो वह सच्चे राम भक्त बने।

वह संकट से हमें भी छुड़ाएंगे,
राम धुन जब हम गाएंगे
वह महावीर महाबली विक्रम बजरंगी,
वही सच्चे राम भक्त बने।

वह तो अपने आराध्य के लिए,
सौ योजन समुद्र लांघ गए
लंका पहुंचे और माता सीता को खोज निकाला,
तभी तो वह सच्चे राम भक्त बने।

धरती पर मूर्छित भैया
लखन देख सब घबराए
वह वीर हनुमान संजीवनी लाए,
तभी तो वह सच्चे राम भक्त बने।

वह ऐसे निराले भक्त जो,
मोती की माला में राम को ढूंढते हैं।
बिना राम के जिनके लिए सब बेकार,
ऐसे परम शक्तिशाली बजरंगबली
वह सच्चे राम भक्त बने॥

हरिहर सिंह चौहान

हनुमान जन्मोत्सव दिन पर करें ज्योतिष के 5 महाउपाय

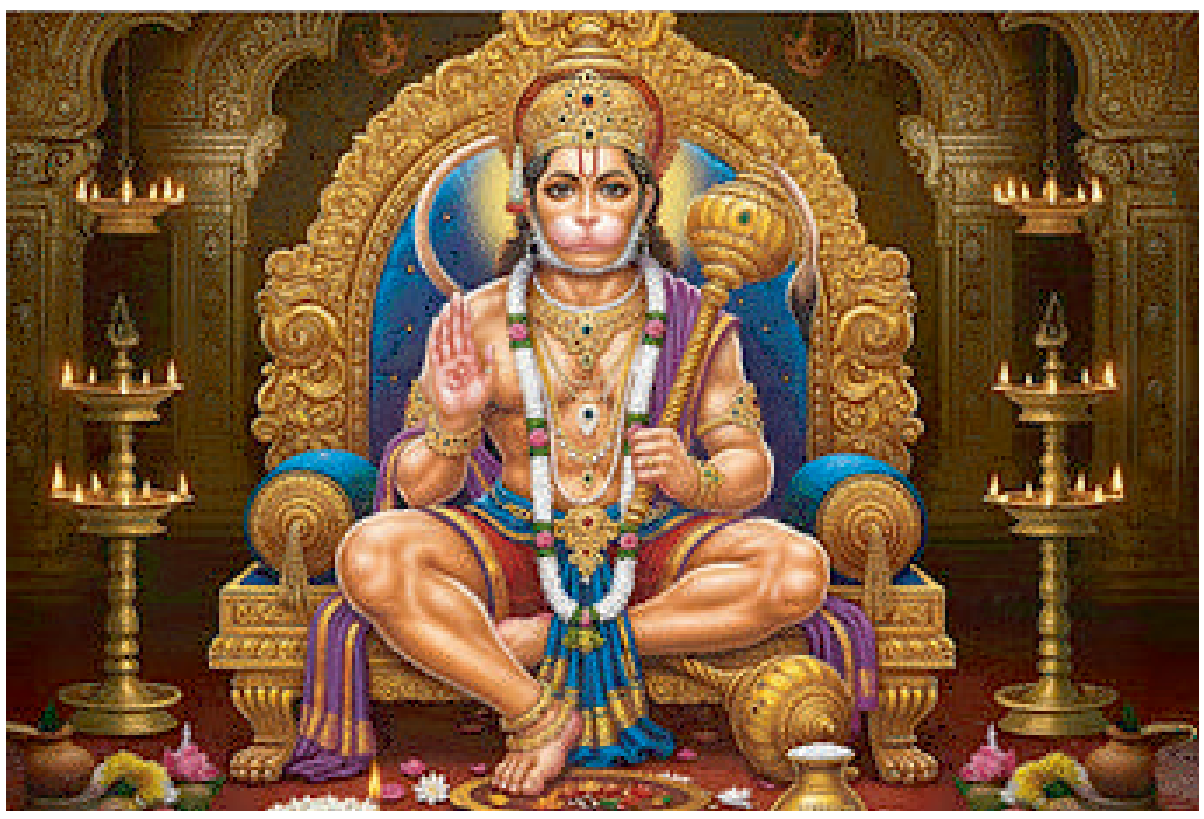

हिंदू धर्म में हनुमान जन्मोत्सव का विशेष महत्व है। चैत्र मास शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की तिथि के दिन हनुमान जन्मोत्सव के रुप में मनाया जाता है। इस खास दिन पर हनुमान जी को विशेष रुप से पूजा की जाती है। हनुमान जी को भगवान राम का परम भक्त माना जाता है। हनुमान जन्मोत्सव के दिन बजरंगबली की पूजा करना और उन्हें भोग में कुछ विशेष चीजें अर्पित करना अत्यंत शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन पूजा-पाठ करने के अलावा हनुमान जी के लिए कुछ विशेष ज्योतिष उपाय करने से व्यक्ति के जीवन से कष्ट दूर हो जाते हैं और हनुमान जी की कृपा दृष्टि बनी रहती है। कल यानी के 12 अप्रैल को हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाएगा। इस दिन आप ज्योतिष के महा उपायों को जरुर आजमाएं।

1. हनुमान जी को केले का भोग लगाएं हनुमान जन्मोत्सव के दिन हनुमान जी को आप कुछ विशेष प्रकार का भोग अर्पित कर सकते हैं। आप इस दिन हनुमान जी को केले का भोग अर्पित कर सकते हैं। माना जाता है कि हनुमान जी को केले का भोग अत्यंत प्रिय है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, हनुमान मंदिर जाकर उन्हें केले का भोग लगाएं। ऐसा करने से जीवन में आ रही सभी अड़चने दूर हो जाएगी। भोग अर्पित करने के बाद इस प्रसाद को घर के लोगों को वितरित करें।

2. हनुमान जी को जनेऊ अर्पित करें धार्मिक मान्यता के अनुसार, हनुमान जी ब्रह्मचारी, बल-बुद्धि और विद्या के देवता के रुप में पूजा की जाती है। हनुमान जन्मोत्सव के दिन आप हनुमान जी को जनेऊ अर्पित कर सकते हैं। माना जाता है कि हनुमान जी को जनेऊ अर्पित करने से व्यक्ति के जीवन में संस्कार, ज्ञान और आत्मबल की वृद्धि होती है। इस दिन मंदिर जाकर शुद्ध और पवित्र जनेऊ चढ़ाएं, तो जीवन के सभी क्षेत्रों में शुभ फल प्राप्त होते हैं। यह उपाय छात्रों और नौकरीपेशा लोगों के लिए बेहद लाभदायक माना गया है। इसके साथ ही मानसिक और आत्मिक बल का अभाव महसूस होता है। इस बात रखें ध्यान कि जनेऊ चढ़ाने से पहले हनुमान जी की प्रतिमा को शुद्ध जल से स्नान कराएं और इसके बाद जनेऊ अर्पित करें।

3. नारंगी सिंदूर चढ़ाएं इस दिन हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाने से शुभ लाभ प्राप्त होते हैं। हनुमान जी को नारंगी सिंदूर सबसे प्रिय है। पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार हनुमान जी ने माता सीता से उनकी मांग में सिंदूर लगाने का रहस्य पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि सिंदूर लगाने से प्रभु श्री राम की दीर्घायु मिलेगी। उसी समय से हनुमान जी ने अपने पूरे शरीर में सिंदूर का लेप लगाया, जिससे उनके आराध्य प्रभु श्री राम के जीवन में इसके सकारात्मक प्रभाव पड़े और प्रभु श्री राम प्रसन्न रहें। हनुमान जी को नारंगी सिंदूर चढाने से शत्रु बाधा भी समाप्त हो जाती है।

4. दो मीठे पान का दान करें इस दिन हनुमान जी को दी मीठे पान दान के रुप में अर्पित कर सकते हैं। मीठा पान दान करने से जीवन में मधुरता और सौभाग्य में वृद्धि होती है। बता दें कि, मीठा पान प्रेम, समर्पण और मधुर वाणी का प्रतीक माना जाता है। हनुमान जन्मोत्सव के दिन बजरंगबली को दो मीठे पान अर्पित करने से रिश्तों में मिठास, दांपत्य जीवन में मधुरता आती है और समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

5. अपनी मनोकामना हनुमान जी को बताएं मान्यता के अनुसार, हनुमान जी को संकटमोचक हनुमान माना गया है। बजरंगबली भक्तों के सभी संकट हर लेते हैं। इस दिन हनुमान जी के समक्ष अपनी मनोकामनाएं रख सकते हैं, जो अवश्य पूरी होगी। नौकरी में चल रही समस्या, विवाह में अड़चन हो या स्वास्थ्य संबंधी परेशानी, सारी मनोकामनाएं पूर्ण होगी। अपनी मनोकामना पूर्ण होने से पहले हनुमान जी का ध्यान करें और ॐ हं हनुमते नमः; मंत्र का 11 या 21 बार जाप करें।

नीम करोली बाबा के दर्शन का बना रहे मन, तो यहां देखें कैंची धाम की जाने का सही दिन और रूट

अगर आप भी बाबा नीम करोली के आश्रम जाना चाहते हैं, तो आप हनुमान जन्मोत्सव के मौके पर जा सकते हैं। यह दिन कैंची धाम की यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त होगा। इसलिए आज इस हम आपको बताने जा रहे हैं कि कैंची धाम की यात्रा कैसे करें और इसके लगभग कितना खर्च आएगा।

चैत्र माह की पूर्णिमा तिथि को हनुमान जी का अवतरण हुआ था। इसी वजह से हर साल चैत्र माह की पूर्णिमा तिथि को भगवान श्रीराम के परम भक्त हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इस बार 12 अप्रैल 2025 को हनुमान जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। हनुमान जन्मोत्सव पर भक्त हनुमान जी के दर्शन के लिए मंदिर जाते हैं। भारत में हनुमान जी से जुड़े कई ऐसे मंदिर हैं, जो भक्तों के लिए काफी विशेष महत्व रखते हैं। वहीं बाबा नीम करोली को भी हनुमान जी का बड़ा भक्त माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि बाबा नीम करोली को हनुमान जी के साक्षात दर्शन हुआ थे। तो वहीं कुछ लोग बाबा नीम करोली को हनुमान जी का अवतार भी मानते हैं। इसी वजह से हर साल भारी संख्या में भक्त बाबा नीम करोली के आश्रम पहुंचते हैं और वहां पर हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। ऐसे में अगर आप भी बाबा नीम करोली के आश्रम जाना चाहते हैं, तो आप हनुमान जन्मोत्सव के मौके पर जा सकते हैं। यह दिन कैंची धाम की यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त होगा। इसलिए आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि कैंची धाम की यात्रा कैसे करें और इसके लगभग कितना खर्च आएगा।

ऐसे पहुंचे कैंची धाम

उत्तराखंड के नैनीताल शहर के पास कैंची धाम में नीम करोली बाबा का आश्रम है। अगर आप दिल्ली से कैंची धाम की यात्रा पर जाते हैं, तो सबसे पहले आपको नैनताल पहुंचना होगा। दिल्ली से नैनीताल की दूरी 314 किमी है। आप ट्रेन या बस से साढ़े छह-सात घंटे में नैनीताल पहुंच सकते हैं। नैनीताल से कैंची धाम आश्रम की दूरी महज 17 किमी है। यहां पर सड़क मार्ग के जरिए पहुंच सकते हैं। नैनीताल से कैंची धाम आश्रम पहुंचने के लिए आप किराए पर स्कूटी ले सकते हैं।

हवाई अड्डा या रेलवे स्टेशन

अगर आप हवाई यात्रा करके कैंची धाम आश्रम आते हैं, तो यहां का सबसे करीबी एयरपोर्ट 70 किमी दूर पंतनगर है। फिर यहां से आप नीम करोली पहुंचने के लिए टैक्सी या बस कर सकते हैं। वहीं अगर आप ट्रेन से आना चाहते हैं, तो नजदीकी रेलवे स्टेशन काठगोदाम है। जहां से आश्रम की दूरी 38 किमी है।

जानिए कितना आएगा खर्च

अगर आप दिल्ली से नैनीताल ट्रेन या फिर बस से जा रहे हैं, तो करीब 300 से 800 रुपए टिकट पर खर्च करने पड़ सकते हैं। वहीं आगे का सफर आप बस या टैक्सी से कर सकते हैं। ऐसे में दिल्ली से बाबा नीम करोली के आश्रम तक पहुंचने के लिए 700-1000 रुपए तक खर्च आ सकता है। वहीं आश्रम में आपको रहने के लिए शयनगृह तक निजी कमरे मिल जाते हैं। यहां पर रुकने का किराया 100 रुपए प्रतिदिन हो सकता है। वहीं आपको खाने-पीने के लिए खर्च करना पड़ेगा।

इन चीजों को करें एक्सप्लोर

बता दें कि आप कैंची धाम में नीम करोली बाबा के आश्रम घूमने के साथ ही वहां के निवासी भिक्षुओं द्वारा आयोजित सत्संग में भाग ले सकते हैं। आश्रम में पुस्तकालय भी है, जहां पर आप आध्यात्मिक अनुभव के साथ दर्शन पर किताबें पढ़ सकते हैं। इसके साथ ही आप यहां की प्राकृतिक सुंदरता को निहार सकते हैं, पहाड़ियों में ट्रैकिंग कर सकते हैं और जंगल की सैर कर सकते हैं।

संस्कारशाला : जीवन मोबाइल के साथ और उसके बिना – एक भावनात्मक अपील

(– डॉ. अंकुर शरण)

प्रिय साथियों,

आज हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ मोबाइल फोन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। सुबह की शुरुआत मोबाइल से और रात का अंत भी उसी की रौशनी में होता है। ज्ञान, सूचना, मनोरंजन और संवाद – सब कुछ अब हमारी उंगलियों के इशारों पर है।

पर क्या कभी सोचा है कि इस डिजिटल जुड़ाव के बीच हम अपने अपनों से कितने दूर हो गए हैं? हमारे बच्चे, हमारे माता-पिता, हमारे जीवनसाथी – सभी हमारे आस-पास होते हुए भी कहीं खो गए हैं, क्योंकि हमारी नज़रें अक्सर मोबाइल स्क्रीन पर टिकी होती हैं।

मैं यह नहीं कहता कि मोबाइल बुरा है – यह तो हमारी प्रगति का प्रतीक है। लेकिन जब यह हमारी गुणवत्तापूर्ण पारिवारिक समय की जगह लेने लगे, तब यह चिंताजनक हो जाता है।

इसलिए मेरी आप सभी से एक विनम्र अपील है –

कुछ पल के लिए मोबाइल को एक ओर रखिए,

और देखिए अपने घर की आँखों में छिपा स्नेह,

अपने बच्चों की मुस्कान,

अपने बुजुर्गों की दुआएं,

अपने जीवनसाथी की थकान में छिपा प्रेम।

हर दिन कम से कम एक घंटा – सिर्फ अपनों के साथ बिताइए, बिना किसी रिंगटोन, नोटिफिकेशन या सोशल मीडिया के।

डिजिटल डिटॉक्स कीजिए – अपने आप से जुड़िए।

जो ज्ञान मोबाइल से मिल रहा है, उससे ज़्यादा अनुभव अपनों की आँखों में छिपा है।

"संस्कारशाला" का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला को सरल और आत्मीय बनाना है। और इसका सबसे सुंदर अभ्यास है – परिवार के साथ समय बिताना।

आइए, फिर से वही पुरानी परंपराएँ लौटाएँ – साथ खाना खाना, एक साथ हँसना, बच्चों की बातें सुनना, और अपने अनुभवों को साझा करना।

मोबाइल से जीवन आसान बनाइए, लेकिन अपनों से जुड़ाव कमजोर मत कीजिए।

आपका,
डॉ. अंकुर शरण

भाजपा सरकार में 10 साल बाद दोबारा लौटा हाथ पंखे का दौर, बिजली कटौती के कारण अब इन्वर्टर खरीदना मजबूरी हुई-जनता

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली में लगातार हो रहे पावर कट से लोग परेशान है। गर्मियों की अभी शुरुआत हुई है और दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों घंटों के पॉवरकट लग रहे है। ख़ुद दिल्ली के बिजली मंत्री आशीष सूद की विधानसभा जनकपुरी में भी बिजली कटौती से लोगों का बुरा हाल है।

भाजपा के लोगों का कहना है कि दिल्ली में बिजली कटौती नहीं हो रही है। भाजपा के इस झूठ को एक्सपोज़ करने के लिए शुक्रवार को नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने बिजली मंत्री आशीष सूद की विधानसभा जनकपुरी के महावीर एनक्लेव इलाके में लोगों से बातचीत की। इस दौरान लोगों ने भाजपा सरकार की नाकामी को एक्सपोज़ करते हुए बताया कि, रोजाना उनके क्षेत्र में बिना किसी पूर्व सूचना के घंटों की बिजली कटौती हो रही है। इसके कारण बीमार लोगों, बुजुर्गों, छोटे बच्चों को बहुत दिक्कत होती है।

इस मौके पर नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि, जनकपुरी के लोग बिजली कटौती से परेशान है। इस तपती गर्मी में जब अभी गर्मियों की शुरुआत ही हुई है, रोज़ाना घंटों बिजली कट रही है। इस कारण बीमार लोग तड़प रहे हैं, बुज़ुर्ग पंखा झलते-झलते थक गए है और छोटे बच्चे परेशान हो रहे है।

उन्होंने कहा कि, सबसे हैरानी की बात यह है कि, ये हाल ख़ुद बिजली मंत्री आशीष सूद की विधानसभा जनकपुरी का है। जब मंत्री के क्षेत्र में ही बिजली नहीं है, तो बाक़ी दिल्ली की क्या हाल होगा?

बिजली कटौती से परेशान लोगों ने कहा– "भाजपा को वोट देकर बड़ी गलती की, दिल्ली के लिए केजरीवाल जी सही थे"

बातचीत के दौरान कुछ बुजुर्ग महिलाओं ने नेता प्रतिपक्ष आतिशी से साझा किया कि, पिछले कुछ समय से उनके एरिया में घंटों बिजली चली जाती है, ऐसा पिछले 10 सालों में नहीं होता था। पहले न के बराबर बिजली जाती थी लेकिन अब रोज़ाना बिजली का जाना आम हो गया है। लोगों ने कहा कि, ₹भाजपा सरकार के आते ही आम लोगों की परेशानी बढ़नी शुरू हो गई है। अब तो ऐसा लगता है कि भाजपा को सरकार को लाकर हमनें बड़ी गलती कर दी है। दिल्ली के लिए तो केजरीवाल जी सही थे।

तपती गर्मी में बिजली के बिना जीना हुआ मुहाल, बीमार लोगों के लिए बिजली कटौती सजा की तरह

नेता प्रतिपक्ष आतिशी से बातचीत के दौरान एक महिला ने कहा कि ₹अभी गर्मियों की शुरुआत में ही इतनी बिजली जाने लगी है तो गर्मियां बढ़ने पर और ज़्यादा बुरी हालत हो जाएगी। उन्होंने साझा किया कि वो हृदय रोग से ग्रसित है और बिजली जाने की स्थिति में गर्मी के कारण घर में रहना मुहाल हो जाता है। ऐसा लगता है मानों हमें कोई सजा मिल रही हो।₹

बिजली न होने के कारण बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ रहा है, अब दिल्ली में दोबारा इन्वर्टर और हाथ पंखे का दौर शुरू हो गया है

नेता प्रतिपक्ष आतिशी से बातचीत के दौरान लोगों ने साझा किया कि, बिजली कटौती के कारण बच्चों की पढ़ाई के बहुत दिक्कतें हो रही है। इतनी गर्मी में बिजली न होने के कारण अब फिर से हाथ से पंखा झलने का दौर लौट आया है। लोगों ने कहा कि, एक समय था जब हमनें अपने घरों से इन्वर्टर हटा दिया था लेकिन अब बिजली के ऐसे हालात को देखते हुए अब दोबारा इन्वर्टर खरीदने का समय आ गया है।

वक्फ बोर्ड संशोधन बिल का संसद से पास होना एक ऐतिहासिक फैसला: हरीचंद जाखड़

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। महरौली जिला भाजपा के जुझारू कर्मठ प्रवक्ता एडवोकेट हरीचंद जाखड़ संसद के दोनों सदनों से वक्फ बोर्ड संशोधन बिल पास होने पर अपनी खुशी का इजहार करते हुए कहा की वक्फ बोर्ड को काफी अधिक शक्ति दे दी गई थी, जिस कारण जहां वह लूट खसोट में लगा था, वही गरीब मुसलमान को फायदा पहुंचाने की जगह उनकी जमीन भी जबरदस्ती हड़पने का काम कर रहा था। श्री जाखड़ ने यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह तथा वक्फ बोर्ड संशोधन बिल के समर्थन में वोटिंग करने वाले सभी सांसदों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देश के लिए यह एक ऐतिहासिक फैसला है, जिसका दूरगामी परिणाम होंगे तथा समाज के कमजोर वर्ग को इसका फायदा होगा। उन्होंने कहा कि वक्फ बोर्ड की हजारों एकड़ ऐसी बेनामी संपत्ति है जिसका कोई कागजात नहीं है। अब इन सभी विषय की गंभीरता से जांच होगी तथा वाजिद हकदार को उसकी जमीन वापस दिलाई जाएगी। उन्होंने कहा कि वक्फ बोर्ड के दावे के बाद इसे सिर्फ वक्फ बोर्ड ट्रिब्यूनल में ही चुनौती दी जा सकती थी। इस कारण पीड़ित पक्ष अपने आप को असहाय एवं असमर्थ महसूस करता था। वक्फ बोर्ड की संपत्तियों पर कुछ रसूखदारों का ही कब्जा है और वही दिन दूनी रात चौगुनी अपनी संपत्ति में इजाफा कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में वक्फ बोर्ड संशोधन बिल राष्ट्रहित एवं समाज हित में है, जिसके लिए केंद्र की भाजपा सरकार बधाई की पात्र है।

स्कूल में फीस वृद्धि को लेकर रेखा सरकार ने जारी की हेल्प लाइन

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। सरकार की ओर से स्कूल की फीस से जुड़ी शिकायत या समस्या के लिए हेल्पलाइन जारी की है। सीएम रेखा गुप्ता ने कहा है कि यदि अभिभावक फीस से जुड़ी समस्या से जूझ रहे हैं तो वे ddeact1@gmail.com पर मेल कर सकते हैं। दिल्ली सरकार द्वारा बच्चों और अभिभावकों की सुविधा के लिए दिल्ली सरकार ने फीस संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए हेल्पलाइन ईमेल जारी की है। यदि आपको फीस से जुड़ी कोई भी समस्या हो, तो ddeact1@gmail.com पर मेल करें।

दिल्ली में भाजपा सरकार आते ही निजी स्कूलों ने बढ़ाई फीस : आप

आम आदमी पार्टी (आप) ने निजी स्कूलों की फीस बढ़ने के पीछे भाजपा सरकार को जिम्मेदार बताते हुए कई आरोप लगाए। पार्टी ने आरोप लगाया पिछले 10 सालों में निजी स्कूल फीस नहीं बढ़ा पाए थे, लेकिन दिल्ली में भाजपा की सरकार आते ही निजी स्कूलों ने २० से ८१ फीसदी तक फीस वृद्धि कर दी है। बच्चों के माता-पिता इसके ख़िलाफ़ विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन भाजपा सरकार इस तरफ ध्यान नहीं दे रही।

आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दस साल में हमने निजी स्कूलों को फीस नहीं बढ़ाने दी। लेकिन, भाजपा सरकार बनने के एक महीने में ही निजी स्कूल फीस बढ़ाने लगे। शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर सौरभ भारद्वाज ने कहा कि आप की सरकार से गरीबों को बहुत कुछ मिला, लेकिन दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने के बाद से दिल्लीवालों को २४ घंटे बिजली मिलनी बंद हो गई है। अब दिल्ली के लगभग सभी निजी स्कूलों ने २० से ८१ फीसद तक फीस बढ़ा दी है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि सरकार को प्राइवेट स्कूलों की मनमानी के ख़िलाफ़ कड़े कदम उठाने चाहिए। ८१ फीसद फीस वृद्धि बहुत बड़ी बात है। नेता विपक्ष आतिशी ने भी इस फैसले को गलत बताया है। बुराड़ी के विधायक संजीव झा ने कहा कि दिल्ली में भाजपा की सरकार बनते ही रुझान आने लगे हैं और सबसे पहली मार निजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता पर पड़ी है।

गलत बयानबाजी कर रहीं आतिशी : कमलजीत

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा महामंत्री कमलजीत सहरावत ने बुधवार को कहा कि दिल्ली में कुछ निजी स्कूलों ने फीस बढ़ाई है। इस संबंध में शिकायतों का संज्ञान शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने लिया है और फीस वृद्धि पर रोक लगाते हुए सभी निजी स्कूलों के खाते ऑडिट करवाने का आदेश दिया है। ऑडिट रिपोर्ट आने के बाद ही स्कूल फीस बढ़ा सकेंगे। आप नेता बेवजह बयानबाजी कर रहे हैं। आप विधायक दल व संगठन के बीच शीतयुद्ध चल रहा है। इस आंतरिक लड़ाई पर आप संयोजक अरविंद केजरीवाल भी अंकुश नहीं लगा पा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि पार्टी की विधायक दल नेता आतिशी व प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज एक ही विषय पर रोज अलग-अलग बयान देते दिखते हैं। दिल्ली वाले स्तब्ध हैं कि जब सरकार ने फीस वृद्धि रोक दी है तो फिर आतिशी क्यों बयानबाजी कर रही हैं। वे पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष को दबाने में लगी हैं।

आप नेताओं की झूठी बयानबाजी सफल नहीं होने वाली : भाजपा

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने मंगलवार कहा कि आप नेताओं की झूठी बयानबाजी सफल नहीं होने वाली। आप नेता यह स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं कि दिल्ली के लोगों ने उन्हें ख़ारिज कर दिया है। पूर्व आप सरकार ने बिजली सब्सिडी ही नहीं निजी बिजली वितरण कंपनियों के साथ मिलकर भ्रष्टाचार किया। जल बोर्ड के अधिकारियों ने ६०,००० करोड़ रुपये से अधिक की लूट की।

अस्पतालों के निर्माण में अत्यधिक लागत, फर्जी दवाओं का वितरण, स्वास्थ्य क्षेत्र में भ्रष्टाचार करने से भी पीछे नहीं रहे। सरकार खोने के बाद अब आप नेता इस कोशिश में जुटे हैं कि दिल्ली सरकार में कुछ ठीक नहीं है। पुराने एक्स पोस्ट अकाउंट से झूठे मैसेज कर रहे हैं। दिल्ली में न तो बिजली-पानी की कटौती हो रही है और न ही स्कूल फीस में वृद्धि हो रही है। शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने सोमवार को आदेश दिया है कि दिल्ली के सभी 1665 निजी स्कूलों के खातों का ऑडिट होगा।

राम भक्त हनुमान सिखाते हैं जीवन जीने की कला

संदीप सृजन

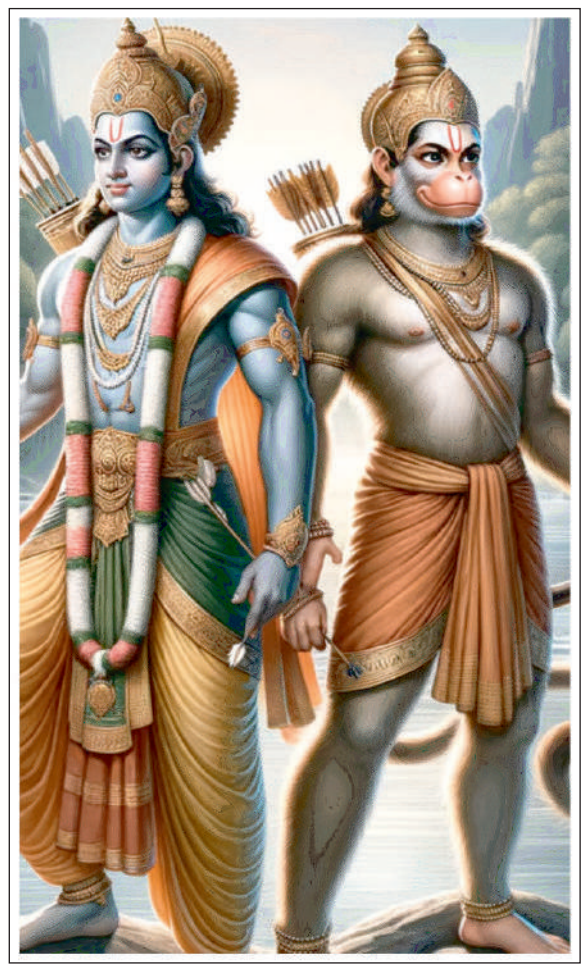

हनुमान जी भारतीय संस्कृति और धर्म में एक अद्वितीय स्थान रखते हैं। रामायण के इस महान पात्र को न केवल एक शक्तिशाली योद्धा और भक्त के रूप में जाना जाता है, बल्कि वे एक ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व भी हैं जो हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं। उनकी कहानियाँ, उनके गुण और उनका चरित्र हमें यह समझाते हैं कि जीवन की चुनौतियों का सामना कैसे करना चाहिए, अपने कर्तव्यों को कैसे निभाना चाहिए और एक संतुलित, सार्थक जीवन कैसे जीना चाहिए। हनुमान जी के जीवन से हमें जो शिक्षाएँ मिलती हैं, वे आज के आधुनिक युग में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी प्राचीन काल में थीं।

निष्ठा और समर्पण

हनुमान जी का सबसे प्रमुख गुण है उनकी भगवान राम के प्रति अटूट निष्ठा और समर्पण। रामायण में हनुमान जी का हर कार्य इस बात का प्रमाण है कि वे अपने स्वामी की सेवा में पूर्णतः समर्पित थे। चाहे वह लंका में सीता माता की खोज हो, संजीवनी बूटी लाने का कठिन कार्य हो, या रावण की सेना से युद्ध करना हो, हनुमान जी ने कभी अपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोड़ा। यह हमें सिखाता है कि जीवन में सफलता और संतुष्टि तभी मिलती है जब हम अपने लक्ष्यों, परिवार, और समाज के प्रति निष्ठावान रहते हैं।

आज के समय में, जहाँ लोग अक्सर स्वार्थ और तात्कालिक सुखों के पीछे भागते हैं, हनुमान जी का यह गुण हमें याद दिलाता है कि असली शक्ति और आनंद अपने कर्तव्यों को निभाने में है। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो अपने अध्ययन के प्रति समर्पित रहता है, एक कर्मचारी जो अपने काम के प्रति निष्ठा रखता है, या एक माता-पिता जो अपने बच्चों की परवरिश में पूरी मेहनत करते हैं—ये सभी हनुमान जी की निष्ठा से प्रेरणा ले सकते हैं। जीवन में जब हम किसी उद्देश्य के प्रति समर्पित होते हैं, तो वह हमें एक दिशा देता है और हमारे कार्यों को सार्थक बनाता है।

विनम्रता के साथ शक्ति

हनुमान जी की शक्ति का कोई मुकाबला नहीं था। वे पहाड़ उठा सकते थे, समुद्र लाँघ सकते थे, और राक्षसों की विशाल सेनाओं को परास्त कर सकते थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे अपनी शक्ति का कभी अहंकार नहीं करते थे। वे हमेशा नम्र बने रहे और अपनी शक्ति का उपयोग केवल दूसरों की भलाई के लिए किया। सुंदरकांड में जब वे लंका पहुँचते हैं, तो वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के बजाय पहले स्थिति को समझते हैं और फिर उचित कदम उठाते हैं।

यह हमें सिखाता है कि शक्ति तभी सार्थक है जब वह नम्रता के साथ हो। आज के समाज में लोग अक्सर अपनी सफलता, धन, या प्रभाव का दिखावा करते हैं, लेकिन हनुमान जी हमें बताते हैं कि असली ताकत वह है जो दूसरों की मदद के लिए इस्तेमाल की जाए। उदाहरण के तौर पर, एक नेता जो अपनी शक्ति का उपयोग जनता की सेवा के लिए करता है, या एक शिक्षक जो अपने ज्ञान को नम्रता से छात्रों तक पहुँचाता है, वे हनुमान जी के इस गुण को अपनाते हैं। हमारे जीवन में भी, चाहे हम कितने ही सफल क्यों न हों, नम्रता हमें जमीन से जोड़े रखती है और हमारे रिश्तों को मजबूत बनाती है।

आज के समय में, जहाँ लोग अक्सर स्वार्थ और तात्कालिक सुखों के पीछे भागते हैं, हनुमान जी का यह गुण हमें याद दिलाता है कि असली शक्ति और आनंद अपने कर्तव्यों को निभाने में है। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो अपने अध्ययन के प्रति समर्पित रहता है, एक कर्मचारी जो अपने काम के प्रति निष्ठा रखता है, या एक माता-पिता जो अपने बच्चों की परवरिश में पूरी मेहनत करते हैं—ये सभी हनुमान जी की निष्ठा से प्रेरणा ले सकते हैं। जीवन में जब हम किसी उद्देश्य के प्रति समर्पित होते हैं, तो वह हमें एक दिशा देता है और हमारे कार्यों को सार्थक बनाता है।

साहस और आत्मविश्वास

हनुमान जी का जीवन साहस और आत्मविश्वास की मिसाल है। जब उन्हें लंका जाने का कार्य सौंपा गया, तो शुरू में वे संकोच में थे। लेकिन जामवंत के प्रोत्साहन से उन्होंने अपनी शक्ति को पहचाना और समुद्र को लाँघ कर लंका पहुँच गए। यह घटना हमें सिखाती है कि हमारे अंदर भी अपार संभावनाएँ छिपी हैं, बस हमें अपने आप पर विश्वास करने की जरूरत है। हनुमान जी ने यह भी दिखाया कि साहस का मतलब सिर्फ शारीरिक बल नहीं, बल्कि मन की दृढ़ता भी है।

आधुनिक जीवन में कई बार हम मुश्किलों से घबरा जाते हैं, चाहे वह नौकरी में असफलता हो, पारिवारिक समस्याएँ हों, या व्यक्तिगत चुनौतियाँ। हनुमान जी हमें प्रेरणा देते हैं कि हमें अपने डर को पीछे छोड़कर आगे बढ़ना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक युवा जो नई नौकरी शुरू करने से डरता है, या एक उद्यमी जो व्यवसाय शुरू करने में हिचकिचाता है, वे हनुमान जी के साहस से सीख सकते हैं। आत्मविश्वास और साहस हमें न केवल मुश्किलों से लड़ने की ताकत देता है बल्कि हमें बेहतर इंसान भी बनाता है।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद राज्यपाल विधेयकों को नहीं रोकेगें?

रामस्वरूप रावतसरे

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और आर. महादेवन की बेंच ने तमिलनाडु सरकार बनाम तमिलनाडु के राज्यपाल (आर एन रवि) मामले में यह फैसला दिया है। कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल के पास राज्य विधानसभा की तरफ से भेजे गए विधेयकों पर वीटो का अधिकार नहीं है। वे किसी बिल को अनिश्चितकाल के लिए रोक नहीं सकते। जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और जस्टिस आर. महादेवन की पीठ ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल के पास कोई विवेकाधिकार नहीं है और उन्हें मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर अनिवार्य रूप से कार्य करना होता है। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा था कि राज्यपाल सहमति को रोककर 'पूर्ण वीटो' या 'आंशिक वीटो' (पॉकेट वीटो) की अवधारणा को नहीं अपना सकते।

शीर्ष अदालत के अनुसार राज्य विधानसभा द्वारा विधेयक को पुनः पारित किए जाने के बाद उसे पेश किए जाने पर राज्यपाल को एक महीने की अवधि में विधेयकों को मंजूरी देनी होगी। राज्यपाल के पास कोई विवेकाधिकार नहीं है। संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत राज्यपाल द्वारा अपने कार्य निर्वहन के लिए कोई स्पष्ट समय सीमा निर्धारित नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु विधानसभा द्वारा पास किए गए 10 लंबित विधेयकों को राज्यपाल द्वारा मंजूर मान लिया है। कोर्ट ने भविष्य के सभी विधेयकों पर कार्रवाई के लिए समय सीमा भी तय कर दी है। संविधान के अनुच्छेद 200 में यह प्रावधान नहीं था।

जानकारी के अनुसार तमिलनाडु सरकार और राज्यपाल के बीच काफी समय से विवाद चल रहा था। राज्यपाल विधानसभा द्वारा पास किए गए विधेयकों को मंजूरी देने में देरी कर रहे थे। कुछ बिल तो 2020 से ही लंबित थे। ज़्यादातर बिलों में राज्यपाल को विश्वविद्यालयों के चांसलर के तौर पर मिलने वाले अधिकारों को कम करने की बात थी। इससे राज्यपाल और सरकार के बीच टकराव बढ़ गया था। आरोप लगाया जाता है कि राज्यपाल जानबूझकर विधायी प्रक्रिया को रोकने की कोशिश करते हैं। तमिलनाडु ही नहीं, छत्तीसगढ़, हरियाणा, बंगाल और केरल जैसे राज्यों में भी राज्यपालों के साथ ऐसे ही विवाद हुए। पुडुचेरी में भी एलजी (लेफ्टिनेंट गवर्नर) और सरकार के बीच मतभेद थे। तेलंगाना, पंजाब और केरल के राज्यपाल भी लंबित विधेयकों को पास नहीं करने के कारण कोर्ट में गए।

संविधान के अनुच्छेद 153 में हर राज्य के लिए एक राज्यपाल का प्रावधान है। अनुच्छेद 154 के तहत कार्यकारी शक्तियां राज्यपाल के पास होती हैं लेकिन संविधान में उनकी भूमिका और शक्ति सीमित है। अनुच्छेद 163(1) के अनुसार, राज्यपाल को अपने मंत्रिपरिषद की सलाह पर काम करना होता है। संविधान में राज्यपाल को कुछ मामलों में अपने विवेक से काम करने की शक्ति दी गई है लेकिन, यह शक्ति भी सीमित है। सुप्रीम कोर्ट ने 1974 में शमशेर सिंह बनाम पंजाब राज्य मामले में फैसला दिया था कि राज्यपाल सिर्फ एक संवैधानिक प्रमुख हैं। राज्य की कार्यकारी शक्तियां वास्तव में मंत्रिपरिषद द्वारा इस्तेमाल की जाती हैं।

अनुच्छेद 200 के मुताबिक विधानसभा द्वारा पास किए गए सभी विधेयकों को राज्यपाल की मंजूरी चाहिए होती है। राज्यपाल के पास चार विकल्प होते हैं- विधेयक को मंजूरी देना, मंजूरी रोकना, विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित रखना या विधेयक को पुनर्विचार के लिए विधानसभा को वापस भेजना। यह अनुच्छेद भारत सरकार अधिनियम, 1935 की धारा 75 पर आधारित है। इसमें इन विकल्पों का इस्तेमाल करने के लिए कोई समय सीमा नहीं दी गई है।

सरकारिया आयोग (1987), राष्ट्रीय संविधान समीक्षा आयोग (2002) जिसके अध्यक्ष जस्टिस वेंकटचलैया थे, और जस्टिस एम.एम. पुंछी आयोग (2010) ने सिफारिश की थी कि राज्यपालों को विधेयकों पर फैसला लेने के लिए एक समय सीमा तय की जानी चाहिए।

कर्नाटक विधि आयोग की 22वीं रिपोर्ट ''विधेयकों पर सहमति-देरी की समस्याएं (भारत के संविधान के अनुच्छेद 200 और 201)'' में जस्टिस वी.एस. मलीमठ ने कहा था कि यह अजीब होगा कि राज्य के प्रमुख को एक विधेयक पर सहमति देने में उतना ही समय लगे जितना कि विधानसभा को उसे पास करने में लगता है। यह अच्छी तरह से स्थापित है कि हर राज्य कार्रवाई उचित होनी चाहिए। शक्ति का उचित प्रयोग एक उचित समय के भीतर किया जाना चाहिए। ऐसा न करना अनुचित होगा।

सुप्रीम कोर्ट के अनुसार राज्यपाल किसी भी बिल को हमेशा के लिए नहीं रोक सकते। उन्हें बिल पर फैसला लेना ही होगा। कोर्ट ने तमिलनाडु को कहा कि उन्हें बिलों को जल्दी पास करना चाहिए। कई राज्यों में राज्यपाल और सरकार के बीच झगड़ा चल रहा है। राज्यपाल बिलों को पास करने में देरी करते हैं जिससे सरकार का काम रुक जाता है। सुप्रीम कोर्ट ने अब इस पर लगाम लगा दी है। संविधान में लिखा है कि राज्यपाल को सरकार की सलाह पर काम करना चाहिए लेकिन, कई बार राज्यपाल अपनी मनमानी करते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यह गलत है। राज्यपाल को संविधान के हिसाब से चलना चाहिए। आयोगों ने भी कहा है कि राज्यपाल को बिलों पर फैसला लेने के लिए एक समय सीमा होनी चाहिए। इससे सरकार का काम आसानी से चलेगा।

पिछले 40 वर्षों (1985 से 2025 तक) में भारत में कई राज्यपाल ऐसे रहे हैं जिनके कार्यों ने राज्यों के साथ विवादों को जन्म दिया। ये विवाद अक्सर विधायी देरी, राज्य सरकारों के साथ टकराव, या संवैधानिक सीमाओं के कथित उल्लंघन से जुड़े रहे। नीचे कुछ प्रमुख राज्यपालों की सूची दी गई है जिन्हें उनके कार्यकाल के दौरान विवादों के लिए जाना गया।

केरल के राज्यपाल और सरकार के बीच मनमुटाव का मामला काफी विवादों में रहा था। केरल के तत्कालीन राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने कहा था कि केरल सरकार कई ऐसे काम करती है जो कानून के मुताबिक नहीं होते। दरअसल एपीजे अब्दुल कलाम प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (केटीयू) के कुलपति का चयन करने के लिए कुलाधिपति के नामित व्यक्ति के बिना चयन समिति बनाने को लेकर आरिफ मोहम्मद नाराज थे। उन्होंने कहा था कि सरकार पर निर्भर करता है कि वे क्या करना चाहते हैं। वे कई ऐसे काम कर रहे हैं जो कि कानून के मुताबिक नहीं हैं। राज्य के विश्वविद्यालयों में कुलपतियों सहित नियुक्तियों के मुद्दे पर आरिफ मोहम्मद खान और केरल सरकार लंबे अरसे तक आमने-सामने थे।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रोमेश भंडारी के एक विवादित निर्णय से जुड़ा है, जो 1998 में हुआ था। राज्यपाल रोमेश भंडारी ने मध्यरात्रि में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को पद से हटा दिया और जगदंबिका पाल को नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ दिला दी। सुप्रीम कोर्ट ने बाद में राज्यपाल के निर्णय को अवैध घोषित किया और कल्याण सिंह को बहाल कर दिया। इस घटना ने उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक बड़ा विवाद पैदा कर दिया और राज्यपाल की शक्तियों पर प्रश्नचिन्ह उठाया।

ऐसा ही मामला बिहार के राज्यपाल बूटा सिंह के इस्तीफे से जुड़ा है, जो 2005 में बिहार विधानसभा के विघटन से संबंधित एक मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा फटकार लगाए जाने के बाद हुआ था। 2005 में बिहार विधानसभा को भंग कर दिया गया था, जिसे बाद में सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक करार दिया। राज्यपाल बूटा सिंह पर आरोप लगा कि उन्होंने केंद्र सरकार को गलत जानकारी दी, जिसके आधार पर विधानसभा को भंग किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने बूटा सिंह की भूमिका की आलोचना की और कहा कि उन्होंने केंद्र सरकार को गलत जानकारी दी।

हंसराज भारद्वाज के राज्यपाल कार्यकाल के दौरान कई विवाद हुए जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं। केंद्रीय कानून मंत्री वीरप्पा मोइली ने कर्नाटक के राज्यपाल हंसराज भारद्वाज के एक निर्देश को सही ठहराया जिसमें राज्यपाल ने विधानसभा अध्यक्ष केजी बोपय्या को निर्देश दिए थे। इस निर्देश के बारे में कुछ लोगों ने सवाल उठाए थे।

कमला बेनीवाल राज्यपाल विवाद 2009-2014 के बीच हुआ, जब उन्होंने गुजरात, त्रिपुरा और मिजोरम के राज्यपाल के रूप में कार्य किया। इस दौरान, उनका तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ कई मुद्दों पर टकराव हुआ। कमला बेनीवाल ने राज्यपाल रहते हुए आरए मेहता को लोकायुक्त नियुक्त किया जिसे गुजरात सरकार ने विवादित माना। उनका नरेंद्र मोदी के साथ कई मुद्दों पर टकराव हुआ जो राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में रहा।

बंगाल में सीएम ममता और राज्यपाल जगदीप धनखड़ के बीच विवाद काफी चर्चा में रहा है। दोनों कई मुद्दों पर टकराते रहे हैं। जगदीप धनखड़ जब बंगाल के राज्यपाल थे तब बंगाल की सीएम ममता बनर्जी धनखड़ पर केंद्र के आदेश थोपने का आरोप लगाती रही हैं तो वहीं, राज्यपाल कहते रहे हैं कि वह जो भी कार्य करते हैं वह संविधान के मुताबिक होता है। चाहे बात विधानसभा का सत्र बुलाने की हो या किसी नए विधायक को शपथ दिलाने की, बंगाल में तकरीबन हर मामले पर सीएम गवर्नर के बीच सियासी विवाद पैदा हो जाता था। चुनाव के बाद राज्य में हुई हिंसा को लेकर भी सीएम और राज्यपाल में टकराव हुआ था। हालांकि, सीवी आनंद बोस का पश्चिम बंगाल का राज्यपाल बनकर आना भी सीएम ममता बनर्जी को रास नहीं आ रहा है। राज्यपाल सीवी आनंद बोस और ममता सरकार में शुरू से जंग लगातार जारी है।

2021 में पंजाब के राज्यपाल बने बनवारी लाल पुरोहित का कार्यकाल काफी विवादित था। पंजाब में उनका कार्यकाल आम आदमी पार्टी सरकार के साथ लगातार टकराव भरा रहा। खासकर पंजाब राजभवन द्वारा विभिन्न विधेयकों को मंजूरी नहीं मिलने के मुद्दे पर। हर बार जब भी राज्यपाल पुरोहित ने चिंता जताई या स्पष्टीकरण मांगा, तो मुख्यमंत्री, कैबिनेट मंत्री और आधिकारिक प्रवक्ता सहित आम आदमी पार्टी ने कड़ा जवाब दिया। उन्होंने अक्सर पुरोहित पर भाजपा से प्रभावित होने और उनकी सरकार के खिलाफ साजिश रचने का आरोप लगाया।

प्रायः यह देखा गया है कि राज्यपाल की नियुक्ति केन्द्र सरकार करती है। केन्द्र चाहता है कि राज्य का शासन उसकी रीतिनीति के अनुसार चले। ऐसे में राज्य में विपक्ष की सरकार होने के कारण अक्सर टकराव रहता ही है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद संभव है इसमें कमी आयेगी और आपसी सकारात्मकता की भावना से जनहित के मामले जल्दी निस्तारित होगें।

...तो क्या 'जूनियर मोदी' के बाद अब 'सीनियर मोदी' को निपटा पाएंगे अश्विनी चौबे ?

कमलेश पांडेय

बीजेपी के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने कहा है कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को उपप्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए। चूंकि केंद्रीय राजनीति में आने से पहले श्री चौबे बिहार में नीतीश कुमार के मंत्रिमंडल में अपनी सेवाएं दे चुके हैं, इसलिए उनकी ताजा और दिलचस्प टिप्पणी के सियासी मायने तलाशे जा रहे हैं। इस ताजा तरीन बयानबाजी की टाइमिंग भी महत्वपूर्ण है।

तो क्या 'जूनियर मोदी' के बाद अब 'सीनियर मोदी' को निपटा पाएंगे अश्विनी चौबे, यह यक्ष प्रश्न सियासी गलियारों में तैर रहा है !

जहां एक ओर राष्ट्रीय भाजपा अध्यक्ष बदले जाने वाले हैं तो वहीं दूसरी तरफ बिहार विधानसभा चुनाव 2025 सिर पर है। इसके अलावा, वक्फ संशोधन बिल पर भाजपा के साथ अडिग रहकर जदयू ने दिखा दिया कि अब वह राजग के प्रति सियासी रूप से निष्ठावान है। ऐसे में अश्विनी चौबे ने एक तीर से कई सियासी शिकार करने की कोशिश की है जिसके राजनीतिक निहितार्थ गम्भीर माने जा रहे हैं क्योंकि यह सब कुछ अनायास नहीं बल्कि भाजपा-जदयू के विक्षुब्ध गुट की एक सोची समझी सियासी रणनीति के तहत किया गया प्रतीत होता है।

ऐसा इसलिए कि अश्विनी कुमार चौबे ने कहा है कि वह जनता दल (यूनाइटेड) के प्रमुख व बिहार में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री पद पर जमे रहने वाले नीतीश कुमार को दिवंगत कांग्रेस नेता जगजीवन राम के बाद बिहार से दूसरे उपप्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने यहां तक कहा है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में नीतीश कुमार का उल्लेखनीय योगदान है। वह गठबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथ मजबूत कर रहे हैं। इसलिए उनकी (चौबे की) व्यक्तिगत इच्छा है कि उन्हें उपप्रधानमंत्री बनाया जाए। यदि उनकी यह इच्छा पूरी हुई तो बिहार बाबू जगजीवन राम के बाद अपनी धरती के दूसरे बेटे को इस पद पर आसीन होते देखेगा।

सवाल है कि अब तक पीएम मेटेरियल समझे जाने वाले नीतीश कुमार को श्री चौबे उपप्रधानमंत्री बनवाने को आखिर क्यों लालायित हैं ? आखिर विगत सवा साल से भाजपा-संघ के सियासी बियावान में भटक रहे अश्विनी कुमार चौबे ने अपनी राजनीतिक सांझ में ऐसा बयान क्यों दिया ? क्या आरएसएस के किसी नेता ने उन्हें इसके लिए उकसाया है ? या फिर भाजपा के किसी दिग्गज नेता के इशारे पर उन्होंने यह बयान दिया है ? या फिर पार्टी में अपनी उपेक्षा से वह इतने क्षुब्ध हैं कि जदयू में शामिल होने की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे हैं ? या फिर एक पुराने कांग्रेस नेता की तारीफ करके कांग्रेसियों के दिल में अपनी जगह बनाने में जुटे हैं जो भागलपुर में मजबूत स्थिति में हैं और उनकी सीट पर काबिज भी हैं।

बता दें कि भागलपुर को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले बक्सर पुत्र अश्विनी कुमार चौबे कोई साधारण राजनेता नहीं हैं। उनके मौसा प्रभाष चंद्र तिवारी भागलपुर के पूर्व सांसद रह चुके हैं जिसका क्रेडिट उन्हें ही जाता है क्योंकि संघ से जुड़े रहे श्री तिवारी के सहयोग से श्री चौबे भागलपुर में अपनी सियासी पैर जमाए थे और अपनी ऊंची सियासी उड़ान के साथ ही उन्होंने अपने मौसा श्री तिवारी को भी संसदीय पारी खेलवा दी।

ऐसा इसलिए कि बिहार के कद्दावर भाजपा नेता और गुजरात के राज्यपाल रहे कैलाशपति मिश्रा की सियासी जड़ें खोदने वाले बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी को अश्विनी कुमार चौबे की जरूरत एक सवर्ण चेहरे के तौर पर थी क्योंकि बिहार विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, कैबिनेट मंत्री प्रेम कुमार आदि जो उनके गुड बुक के नेता थे, वह उनके ओबीसी वर्ग से आते थे। अपनी इसी राजनीतिक दोस्ती का फायदा उठाते हुए श्री चौबे ने गोड्डा, झारखंड के मौजूदा सांसद निशिकांत दूबे का सियासी पांव भागलपुर में नहीं जमने दिया।

हालांकि जब वक्त ने पलटा खाया तो चौबे को भागलपुर भी छोड़ना पड़ा और बक्सर लोकसभा सीट से केंद्रीय राजनीति में प्रवेश लेना पड़ा जिसके बाद मोदी कैबिनेट में वो केंद्रीय मंत्री तक बने हालांकि, जिस तरह से मोदी 3.0 पारी शुरू होने से पहले बक्सर से उनका टिकट काटा गया, फिर राज्यसभा में भी जगह न दी गई और न ही किसी राज्य का राज्यपाल ही उन्हें बनाया गया। इससे उनका सियासी प्रभाव अब कम हुआ है।

एक बात और, भागलपुर के कद्दावर नगर विधायक और तेजतर्रार कैबिनेट मंत्री समझे जाने वाले अश्विनी चौबे अपने बेटे अर्जित शाश्वत उर्फ प्रिंस चौबे के लिए पार्टी का टिकट तो ले आए लेकिन मतदाताओं ने उन्हें खारिज कर दिया जिससे उनकी सियासी साख गिरी। यह सब तब हुआ जब भागलपुर की सियासी गंगा में भाजपा-संघ का राजनीतिक पानी बहुत बह चुका था। अपने राजनीतिक मित्र सुशील कुमार मोदी की सियासी जड़ें खोदने के चक्कर में भागलपुर का वैश्य मतदाता उनसे छिटक गया।

वहीं, स्वभाव से शातिर पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी न केवल भागलपुर की सियासत में दिलचस्पी लेने लगे बल्कि प्रभाष चंद्र तिवारी की जगह खुद भागलपुर सांसद भी बन बैठे। जब वह उपमुख्यमंत्री बने तो पूर्व केंद्रीय कैबिनेट मंत्री शाहनवाज हुसैन को भागलपुर सांसद बनवा दिया जो निशिकांत दूबे के मित्र माने जाते थे। इस प्रकार मोदी-हुसैन ने मिलकर भागलपुर से चौबे की विदाई सुनिश्चित कर दी। इसी का फायदा उठाकर कांग्रेस ने भागलपुर में अपनी सियासी जड़ें जमा ली। फिलवक्त कांग्रेसी नगर विधायक अजीत शर्मा उनके व उनकी पार्टी के लिए मजबूत चुनौती साबित हो रहे हैं।

इससे क्षुब्ध अश्विनी चौबे ने जूनियर मोदी समझे जाने वाले सुशील कुमार मोदी की ऐसी जड़ें खोदी कि पहले उन्हें उपमुख्यमंत्री पद से हटवाया। फिर जब वो बिहार छोड़कर राज्यसभा के रास्ते दिल्ली पहुंचे तो उनके कैबिनेट मंत्री बनने में अड़ंगा डाला। दरअसल, बिहार भाजपा की सियासत में मुख्य भूमिका में रहे उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने पहले राजद सुप्रीमो व तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद की ओबीसी स्वामी भक्ति में भाजपा में मजबूत हुए और फिर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ओबीसी स्वामी भक्ति में अपनी पार्टी भाजपा को जदयू का पिछलग्गू बना दिया।

बता दें कि इससे पहले सुशील मोदी नेता प्रतिपक्ष और बाद में उपमुख्यमंत्री तो बने रहे लेकिन पार्टी का बहुत ही रणनीतिक अहित किया। यही वजह है कि पूर्व केंद्रीय रविशंकर प्रसाद, पूर्व केंद्रीय मंत्री राधामोहन सिंह आदि को तो बहुत राजनीतिक ऊंचाई मिली लेकिन मौजूदा केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह आदि को कड़ी राजनीतिक मशक्कत करनी पड़ी। यही वजह है कि अश्विनी कुमार चौबे ने टीम सुशील मोदी को तोड़कर बिहार की भाजपा राजनीति में एक संतुलन स्थापित किया जिसका लाभ अभी नंदकिशोर यादव व प्रेम कुमार आदि को भी मिल रहा है।

वहीं, मौजूदा उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी व उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा की खोज इसी राजनीतिक कशमकश का नतीजा समझा जाता है। शायद इससे उपजी सियासी कुंठा से भी जूनियर मोदी शीघ्र ही परलोक वासी हो गए। उनके दिल्ली संरक्षक पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली पर भी यही बात लागू होती है। इसलिए चर्चा है कि अश्विनी कुमार चौबे ने अपने मन से यह बात नहीं बोली है। या तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लोगों ने उन्हें उकसाया है या फिर राष्ट्रीय भाजपा का अध्यक्ष बनने के दावेदार संजय जोशी या फिर कैबिनेट मंत्री नितिन गडकरी की संघ समर्थित लॉबी ने उन्हें इस बयानबाजी के लिए राजी किया है।

चूंकि खुद भी अश्विनी चौबे एक सुलझे हुए नेता हैं, जो भाजपा और संघ दोनों के प्रति समर्पित समझे जाते हैं। पार्टी की केंद्रीय राजनीति से जहां बिहार में कभी उन्हें सियासी ग्रेस मिला तो कभी मुँह की भी खानी पड़ी। अभी पूर्वी बिहार और उत्तरी झारखंड की राजनीति में भागलपुर मूल के गोड्डा सांसद निशिकांत दूबे की जो राजनीतिक धमक दिखाई दे रही है, उससे भी अश्विनी चौबे अपने बेटे के सियासी भविष्य को लेकर चिंतित हैं। शायद इसलिए वो पीएम नरेंद्र मोदी व उनके गुट से नाराज चल रहे हैं।

मसलन, जिस भागलपुर में भाजपा का मतलब अश्विनी चौबे समझा जाता रहा हो, वहां पर ही किसी और के साथ पीएम-राष्ट्रपति का नाम जुड़ना भला कोई दूसरा कद्दावर नेता कैसे बर्दाश्त कर सकता है। इसलिए उन्होंने जूनियर मोदी को निपटाने के दौरान अर्जित सियासी अनुभवों से सीख लेते हुए सीनियर मोदी यानी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अप्रत्यक्ष हमला बोला है। जिस तरह से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की तरह उन्हें भी उपप्रधानमंत्री बनाने की जरूरत बताई है और वह भी अल्पमत वाली भाजपा के लिए गठबंधन सहयोगी जदयू के उस व्यक्ति का नाम सुझाया है जिसे प्रधानमंत्री फूटे आंखों नहीं सोहाते।

यदि अपना अपना राजनीतिक अस्तित्व बचाने की दोनों की मजबूरी नहीं होती तो ये कभी भी एक साथ, एक मंच पर नहीं दिखते। 2014 से पहले नीतीश कुमार ने क्या किया, उसके बाद फिर क्या क्या किया, यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है। वहीं, उपप्रधानमंत्री रहे गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी का सियासी हश्र क्या हुआ, यह उनसे ज्यादा कौन समझ सकता है। इसलिए यह भी समझा जा रहा है कि क्या नीतीश कुमार को उनकी असली औकात में रखने की राजनीतिक कवायद एक बार फिर तेज हो चुकी है क्योंकि वक्फ बिल पर भाजपा के समक्ष जिस तरह से उन्होंने धर्मनिरपेक्ष हथियार डाले हैं, उसके दृष्टिगत इस तरह की ललकार सही नहीं है। हो सकता है भाजपा द्वारा भागलपुर से उनके बेटे का टिकट पिछली बार काट दिए जाने के बाद इस बार वो जदयू या कांग्रेस से टिकट दिलवाने के जुगाड़ में नई पैंतरेबाजी की है। अब उनके मन में क्या है, ये तो चौबे जानें, लेकिन टीम मोदी के लिए चौबे ने एक नई कब्र खोद दी है, मिट्टी उस पर कौन कौन डालेगा, आये दिन बदलते सियासी वक्त का इंतजार कीजिए।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

वैशाखी: खालसा की नींव से खेतों की मुस्कान तक

जब सूरज की किरणें खेतों में लहलहाते गेहूं की बालियों पर पड़ती हैं और पंजाब की धरती ढोल की थाप पर थिरकने लगती है, तब वैशाखी का पर्व अपनी पूरी रंगत के साथ आता है। यह पर्व केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंतता और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। रंग-बिरंगे परिधानों में सजे लोग, भांगड़ा और गिद्दा के जोशपूर्ण नृत्य, गुरुद्वारों में गूंजता कीर्तन और लंगर की सोंधी महक—यह सब मिलकर वैशाखी को एक अविस्मरणीय अनुभूति बनाता है। यह वह समय है जब प्रकृति और मानव का रिश्ता और गहरा हो जाता है, जब श्रम का सम्मान और अध्यात्म का आलोक एक साथ चमकता है। बैसाख मास की संक्रांति को मनाया जाने वाला यह पर्व पंजाब और उत्तर भारत में विशेष रूप से उत्साह और श्रद्धा के साथ जीवंत हो उठता है।

यह पर्व रबी की फसल की कटाई का उत्सव है, जब किसान अपनी मेहनत का फल सुनहरी फसलों के रूप में देखते हैं। खेतों में लहलहाते गेहूं उनके श्रम और प्रकृति के आशीर्वाद का प्रतीक हैं। किसानों के चेहरों पर संतुष्टि की मुस्कान और नए वर्ष के प्रारंभ की खुशी इस दिन को और खास बनाती है। वे प्रकृति और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, क्योंकि यह उनके लिए समृद्धि और सुख-शांति का प्रतीक है। मेलों की चहल-पहल, ढोल की थाप पर थिरकते कदम और पारंपरिक नृत्यों का जोश वैशाखी को एक जीवंत उत्सव बनाता है। भांगड़ा और गिद्दा के माध्यम से पंजाब की संस्कृति अपनी पूरी शान के साथ उभरती है, जो न केवल आंखों को सुकून देती है, बल्कि दिलों को भी जोड़ती है। यह पर्व हमें सिखाता है कि श्रम और प्रकृति का यह अटूट बंधन ही जीवन की सच्ची समृद्धि का आधार है।

वैशाखी का महत्व केवल कृषि तक सीमित नहीं, बल्कि यह सिख धर्म के लिए भी एक पवित्र और ऐतिहासिक दिन है। 13 अप्रैल, 1699 को आनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। उन्होंने 'पांच प्यारों' को सामने लाकर साहस, समर्पण और सेवा के मूल्यों को स्थापित किया। खालसा पंथ की स्थापना एक ऐसी क्रांति थी, जिसने समाज में समानता और निष्ठा की भावना को जागृत किया। इस दिन गुरुद्वारों में कीर्तन और अरदास की गूंज होती है, और लंगर में हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी जाति या वर्ग का हो, एक साथ बैठकर भोजन करता है। लंगर की यह परंपरा सेवा और समानता का प्रतीक है, जो सिख धर्म की पहचान को विश्व भर में उजागर करती है। वैशाखी हमें यह सिखाती है कि सच्चा धर्म वही है, जो मानवता को जोड़े और हर हृदय में प्रेम का दीप जलाए।

यह पर्व भारतीय इतिहास में एक दुखद और प्रेरणादायक घटना से भी जुड़ा है। 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में निहत्थे और शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर अंग्रेज जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियां चलवाईं,

जिसमें सैकड़ों लोग शहीद हुए। यह अमानवीय कृत्य स्वतंत्रता संग्राम में एक चिंगारी बन गया, जिसने देशवासियों में आजादी की ललक को और प्रबल किया। वैशाखी इस बलिदान की स्मृति को भी अपने में समेटे हुए है। यह हमें याद दिलाती है कि स्वतंत्रता और सम्मान के लिए कितने लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी। यह केवल उत्सव का दिन नहीं, बल्कि आत्मबलिदान और आत्मसम्मान की चेतना का भी प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि हमारे आज के सुख और स्वतंत्रता के पीछे अनगिनत बलिदानों की कहानी छिपी है।

वैशाखी सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गौरव का भी अनुपम अवसर है। मेलों में लोक नृत्य, संगीत और हस्तशिल्प की बहार देखते ही बनती है। पंजाबी लस्सी, सरसों का साग, मक्के की रोटी और मिठाइयों की मिठास इस पर्व को और स्वादिष्ट बनाती है। यह वह समय है जब लोग पुराने गिले-शिकवे भुलाकर एक-दूसरे के साथ खुशियां बांटते हैं। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी इस उत्सव में एक साथ शामिल होते हैं, जिससे सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को बल मिलता है। यह पर्व हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ता है और यह सिखाता है कि विविधता में ही हमारी एकता की ताकत है। यह समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य करता है, जहां हर व्यक्ति एक-दूसरे के साथ प्रेम और सम्मान का रिश्ता बनाता है।

आज के आधुनिक युग में, जब हम भागदौड़ भरी जिंदगी में अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं, वैशाखी जैसे पर्व हमें हमारी परंपराओं की याद दिलाते हैं। यह पर्व केवल पंजाब या सिख समुदाय तक सीमित नहीं, बल्कि यह हर उस व्यक्ति के लिए प्रासंगिक है जो श्रम, श्रद्धा और भाईचारे में विश्वास रखता है। विदेशों में बसे भारतीय भी वैशाखी को पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं। कनाडा के सरे में होने वाली भव्य वैशाखी परेड हो या ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम, यह पर्व भारतीय संस्कृति के वैश्विक गौरव का प्रतीक बन चुका है। यह हमें हमारी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करना सिखाता है और विश्व भर में भारतीयता की धाक जमाता है।

वैशाखी महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत संवेदना है, जो खुशियों की लहर, कृतज्ञता की गहराई, बलिदान की गरिमा और एकता की सुगंध को एक साथ समेटे हुए है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति श्रद्धा, समाज के प्रति निःस्वार्थ सेवा और स्वयं के प्रति अटूट आत्मसम्मान का अनमोल पाठ पढ़ाता है। आज के युग में, जब तनाव की छाया और अलगाव की दीवारें जीवन को घेर रही हैं, वैशाखी एक मधुर स्वर की तरह हमें बुलाती है—एक साथ आने, हंसी-ठिठोली में डूबने और जीवन के सादगी भरे सुखों को गले लगाने के लिए। यह हमें जताती है कि सच्ची समृद्धि बाहरी चकाचौंध में नहीं, बल्कि हृदय की गहराइयों में बसे मूल्यों की रोशनी में छिपी है। यह वह सुनहरा पल है, जब हम अपने अतीत की गौरव गाथाओं को संजोते हैं, वर्तमान की हर धड़कन को जीते हैं और भविष्य के लिए प्रेरणा लेते हैं।

वैशाखी का पर्व हमें अपनी परंपराओं के अनमोल रत्नों का मोल समझाता है, जो हमें न केवल हमारी जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि हमारे इतिहास और संस्कृति की गौरवमयी विरासत को भी जीवंत करते हैं। यह उत्सव हमें यह विश्वास दिलाता है कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर वह दीप है, जो समय की आंधियों में भी कभी नहीं बुझता। इसे केवल रस्मों का निर्वाह मानकर नहीं, बल्कि इसके गहन संदेश को हृदय में उतारकर मनाना चाहिए। यह वह पवित्र क्षण है, जब हम प्रण लें कि इस अमूल्य सांस्कृतिक खजाने को न केवल संजोएंगे, बल्कि इसे प्रेम और गर्व के साथ अगली पीढ़ियों तक पहुंचाएंगे। वैशाखी की यह रंग-बिरंगी और जोश से भरी यात्रा हर हृदय में उमंग का सागर उड़ेल देती है, जैसे ढोल की थाप पर थिरकता पंजाब सारी दुनिया को अपनी धुन पर नचाए। यह पर्व एकता, प्रेम और सम्मान का ऐसा अमर संदेश लिए आता है, जो जीवन के हर पड़ाव पर हमें प्रेरणा देता है और हमें सिखाता है कि सच्ची समृद्धि हमारी संस्कृति के गर्व में ही बसती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बांग्लादेश को बड़बोलापन भारी पड़ा ? -भारत की आर्थिक सर्जिकल स्ट्राइक का असर सैन्य कार्रवाई से ज्यादा मारक

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आधुनिक युग में आपसी रिश्तों. नातों, संबंधों की प्रगाढ़यता का बहुत बड़ा असर न केवल निजी जिंदगी पर पड़ता है बल्कि सार्वजनिक राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तरपर भी पड़ता है। ठीक उसी तरह अपनी वाणी की शालीनता से भी निजी राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तरपर बहुत फर्क पड़ता है, जो हम अपनी निजी जिंदगी में तो देखते ही हैं, परंतु हम इसका असर राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तरपर भी आए दोनों देखते ही रहते हैं। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि इन दोनों बातों का सटीक उदाहरण हमें 8 अप्रैल 2025 को देखने को मिला, जब भारतीय विदेश मंत्रालय ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि बांग्लादेश पर 8 अप्रैल 2025 से ट्रांसशिपमेंट की सुविधा पर रोक लगा दी गई है, परंतु दो देशों नेपाल भूटान को इससे छूट दी गई है। बता दें यह ट्रांसशिपमेंट की सुविधा 2020 से दी गई थी परंतु बता दें 26-29 मार्च को चीन की अपनी चार दिवसीय यात्रा के दौरान बांग्लादेश के कार्यवाहक प्रमुख नें टिप्पणी की थी, उनके बयान को विवादास्पद माना गया।हालांकि,भारतीय अधिकारियों ने ये पुष्टि नहीं की है कि ट्रांसशिपमेंट फैसिलिटी हटाने का कारण उनके बयान ही हैं या नहीं एक प्रिंट मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, प्रवक्ता के बयान कुछ इस प्रकार से हैं,बांग्लादेश को दी गई ट्रांसशिपमेंट फैसिलिटी की वजह से हमारे हवाई अड्डों और बंदरगाहों पर बहुत ज्यादा भीड़ हो गई थी, इससे हमारे काम में देरी हो रही थी और लागत भी बढ़ रही थी, जिससे भारत के अपने एक्सपोर्ट पर असर पड़ रहा था, इसलिए 8 अप्रैल,2025 से ये सुविधा बंद कर दी गई है,लेकिन ये साफ कर देना जरूरी है कि ये फैसला नेपाल और भूटान को भेजे जा रहे बांग्लादेशी सामान पर लागू नहीं होता, वो पहले की तरह भारत के रास्ते जा सकेंगे। बता दें, भारतीय निर्यातकों, खासकर कपड़ा उद्योग से जुड़े निर्यातकों ने पहले भी सरकार से पड़ोसी देश को दी जाने वाली इस सुविधा को वापस लेने का आग्रह किया था। जून 2020 में, भारत ने भारतीय भूमि सीमा शुल्क स्टेशनों के माध्यम से बांग्लादेश से माल के परिवहन की अनुमति दी थी, अब फर्क यह होगा कि भारत में ट्रांसफर शिपमेंट बैंक के आदेश से बांग्लादेश का एक्सपोर्ट खर्च तीन गुना बढ़ सकता है व प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता पर घास घातक असर पड़ेगा इसलिए आज मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बांग्लादेश को बड़बोलापन भारी पड़ा, भारत की आर्थिक सर्जिकल स्ट्राइक का असर सैन्य कार्रवाई से भी अधिक मारक होगा।

साथियों बात अगर हम भारत ने बांग्लादेश के लिए ट्रांसशिपमेंट की सुविधा बंद करने की करें तो, इस सुविधा से वह भारतीय जमीन का इस्तेमाल करके कई देशों में सामान एक्सपोर्ट करता था, विदेश मंत्रालय का कहना है कि भारतीय हवाई अड्डों और बंदरगाहों पर ट्रांसशिपमेंट की वजह से काफी भीड़भाड़ रहती थी, जिसके चलते हमारे अपने एक्सपोर्ट में देरी हो रही थी और बैकलॉग हो रहा था।विदेश मंत्रालय ने कहा कि काफी समय से एपेरेल एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउंसिल बांग्लादेश की ट्रांसशिपमेंट सुविधा बंद करने की मांग कर रहा था, जिसे अब स्वीकार कर लिया गया है। हालांकि, पिछली व्यवस्था के तहत जो बांग्लादेशी एक्सपोर्ट कार्गो भारत में प्रवेश कर चुके हैं, उन्हें शिपमेंट की अनुमति है। साल 2020 में भारत सरकार ने बांग्लादेश को ट्रांसशिपमेंट की सुविधा दी थी, जिसके तहत उसके एक्सपोर्ट गुड्स को भारतीय जमीन के जरिए नेपाल, भूटान, म्यांमार और दूसरे देशों को भेजा जाता था। सेंट्रल बोर्ड ऑफ इनडायरेक्ट टैक्सेज एंड कस्टम्स (सीबीआईसं)

ने 8 अप्रैल को नोटिफकेशन जारी करके इस सुविधा को तत्काल प्रभाव से खत्म कर दिया था, जिसके बाद चर्चा थी कि अब बांग्लादेश इन मुल्कों को सामान एक्सपोर्ट नहीं कर पाएगा। हालांकि, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने साफ किया है कि ढाका भारत के जरिए नेपाल और भूटान में एक्सपोर्ट कर सकता है। भारत सरकार के इस फैसले को मोहम्मद यूनुस के उस बयान से जोड़कर देखा जा रहा है, जिसमें उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों का हवाला देते हुए चीन से आर्थिक विस्तार की अपील की थी। पिछले महीने बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस चीन के दौरे पर थे, यहां 28 मार्च को उन्होंने चीन से समंदर के जरिए व्यापार बढ़ाने और बांग्लादेश में आकर उत्पादन करने की अपील की थी, ताकि उनके देश को आर्थिक लाभ मिले, उन्होंने कहा था कि भारत के सात पूर्वोत्तर राज्य लैंडलोक्ड हैं यानें जमीन से घिरे हैं, इसलिए समंदर तक उनकी पहुंच नहीं है। उन्होंने कहा कि इस पूरे क्षेत्र में बांग्लादेश अकेला समंदर का संरक्षक है इसलिए यह चीनी अर्थव्यवस्था के लिए एक विस्तार हो सकता है। उन्होंने चीन से ये भी कहा कि वह बांग्लादेश में उत्पादन करे और चीजें बाजार तक ले जाए, फैक्ट्रियां स्थापित करे।उन्होंने लालमोनिरहाट में एयरबेस को पुनर्जीवित करने के लिए भी चीन को न्योता दियाथालालमोनिरहाट जिला बंगाल के सिलीगुड़ी कॉरिडोर या चिकन नेक से ज्यादा दूर नहीं है. चिकन नेक नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और चीन की सीमाओं से लगता है।

साथियों बात अगर हम ट्रांसशिपमेंट बंद करने से बांग्लादेश को निर्यात आयात पर भारी असर पड़ने की करें तो, माल हस्तांतरण सुविधा के बंद होने से बांग्लादेश के निर्यात और आयात पर असर पड़ेगा। खासकर भूटान, नेपाल और म्यांमार के साथ व्यापार में दिक्कत आएगी। ये देश तीसरे देशों के साथ व्यापार के लिए भारतीय रास्तों पर निर्भर हैं। पहले भारत से होकर जाने वाला रास्ता आसान था। इससे समय और पैसा दोनों बचता था। अब बांग्लादेश के व्यापारियों को ज्यादा समय लगेगा, ज्यादा खर्चा आएगा और अनिश्चितता भी बढ़ेगी। नेपाल और भूटान दोनों ही जमीन से घिरे हुए देश हैं। वे बांग्लादेश के साथ व्यापार के लिए भारत के रास्ते का इस्तेमाल करते हैं। व्यापार विशेषज्ञों के अनुसार, इस निर्णय से परिधान, जूते, रत्न एवं आभूषण जैसे कई भारतीय निर्यात क्षेत्रों को लाभ होगा। परिधान क्षेत्र में बांग्लादेश भारत का बड़ा प्रतिस्पर्धी है। भारतीय कपड़ों के निर्यात को बढ़ावा देने वाली संस्था ने कहा कि राजधानी में हर दिन 20-30 बांग्लादेशी ट्रक आते हैं, जिससे कार्गो टर्मिनलों पर जाम लग जाता है और माल ढुलाई की लागत बढ़ जाती है। एक अन्य संघ का बयान आया कि अब हमारे पास अपने माल के लिए अधिक हवाई क्षमता होगी।

साथियों बात अगर हम बांग्लादेश के बड़बोलेपन वाले बयान की करें तो, दरअसल, बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार ने पिछले महीने चीन का दौरा किया था। वहां उन्होंने भारत के पूर्वोत्तर राज्यों पर टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि भारत के पूर्वोत्तर राज्य लैंड लॉक्ड (जमीन से घिरे हुए) हैं, और समुद्र तक उनकी पहुंच का एकमात्र रास्ता बांग्लादेश है।उन्होंने चीन को बांग्लादेश की स्थिति का लाभ उठाने के लिए आमंत्रित किया था।उनकी यह टिप्पणी भारत को नागवार गुजरी थी। इसके बाद दोनों देशों के बीच राजनयिक तनाव भी देखने को मिला था।ये फैसला ऐसे समय में लिया गया है जब बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख सलाहकार के एक बयान की चर्चा हो रही है।कुछ दिनों पहले ही वो चीन की राजधानी बीजिंग में उन्होंने कहा कि चीन और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के बीच व्यापार बढ़ाया जाना चाहिए, और इसमें बांग्लादेश के बंदरगाहों का इस्तेमाल किया जा सकता है।उन्होंने कहा था,पूर्वी भारत के सात राज्य, जिन्हें सात बहनों के नाम से जाना जाता है, ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनकी समुद्र तक कोई सीधी पहुंच नहीं है, हम इस पूरे क्षेत्र के लिए समुद्र के एकमात्र संरक्षक हैं. इससे एक बड़ा अवसर खुलताहै, ये चीनी अर्थव्यवस्था का विस्तार बन सकता है, चीजें बनाएं, चीजें उत्पादित करें, मार्केटिंग करें, चीन में सामान लाएं और उन्हें बाकी दुनिया में निर्यात करें। चीन के साथ मिलकर भारत के खिलाफ चालबाजियां करने वाले और बांग्लादेश को समंदर का एकमात्र गार्जियन बताने वाले को भारत ने तोल-मोल कर मगर ठोस जवाब दिया है। भारत के संसाधनों के सहारे विदेश व्यापार करने वाले बांग्लादेश से भारत ने ट्रांस शिपमेंट की अहम सुविधा छीन ली है।

साथियों बात अगर हम ट्रांसशिपमेंट सुविधा को जानने की करें तो, भारत ने बांग्लादेश को दी गई एक खास सुविधा, जिसे ट्रांसशिपमेंट फैसिलिटी कहा जाता है, खत्म कर दी है। इस सुविधा के तहत बांग्लादेश अपने निर्यात का माल भारत की ज़मीन से होकर किसी तीसरे देश तक भेज सकता था, इसके लिए वह भारत के हवाई अड्डों या बंदरगाहों का उपयोग कर सकता था। अब बांग्लादेश के पास यह विकल्प नहीं रहेगा, यह सुविधा बांग्लादेश को वर्ल्ड मार्केट में आसान एंट्री देता था। बांग्लादेश अपने माल को भारत के लैंड कस्टम स्टेशनों से ट्रकों या कंटेनरों में भारतीय बंदरगाहों तक पहुंचाता था, जहां से इसे आगे शिपिंग या हवाई मार्ग से भेजा जाता था. यह प्रक्रिया समय और लागत बचाने में मदद करती थी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि बांग्लादेश को बड़बोलापन भारी पड़ा ?-भारत की आर्थिक सर्जिकल स्ट्राइक का असर सैन्य कार्रवाई से ज्यादा मारक।भारत ने बांग्लादेश के लिए ट्रांसशिपमेंट की सुविधा बंद की- बांग्लादेशी एक्सपोर्टर्स मुसीबत में - नेपाल भूटान बैन से से बाहर।भारत के ट्रांसशिपमेंट के आदेश से बांग्लादेश का एक्सपोर्ट खर्च तीन गुना बढ़ सकता है - प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता पर घातक असर होगा।

एमजी विंडसर बनी भारत में सबसे तेजी से बिकने वाली ई.वी, 6 महीने में बिके 20 हजार मॉडल

परिवहन विशेष न्यूज

एमजी विंडसर ईवी काफी किफायती कीमत शानदार फीचर्स और स्पेस के साथ आती है जिसकी वजह से इसने भारतीय बाजार में धूम मचा दी है। इसकी वजह से इसके 20000 मॉडल महज 6 महीने में बिक गए। इसके साथ ही यह 15.6-इंच का बड़ा टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम 135 डिग्री तक रिक्लाइन होने वाली रियर सीट्स पैनोरमिक ग्लास रूफ जैसे फीचर्स के साथ आती है।

नई दिल्ली। JSW MG की MG Windsor EV ने बिक्री के मामले में रिकॉर्ड बना दिया है। इसने महज 6 महीने में 20,000 यूनिट्स की बिक्री का आंकड़ा पार कर दिया है। इसके साथ ही यह भारत में सबसे तेजी से बिकने वाली इलेक्ट्रिक कार बन गई है। आइए जानते हैं कि MG Windsor EV के उन फीचर्स के बारे में जिसकी वजह से यह सबकी पसंदीदा इलेक्ट्रिक कार बन गई है।

MG Windsor EV की बैटरी और रेंज

MG Windsor EV में 38 kWh की बैटरी पैक मिलता है, जिसे एक बार फुल चार्ज करने के बाद 332 किलोमीटर तक की रेंज मिलती है। हालांकि, असल जिंदगी में यह 260 से 280 किलोमीटर के बीच का रेंज देती है, जो आपको ड्राइविंग स्टाइल, ट्रैफिक और मौसम पर निर्भर करता है। यह रेंज शहर में रोजाना इस्तेमाल के लिए काफी अच्छी है, लेकिन आपको लंबी दूरी तय करने के लिए चार्जिंग की प्लानिंग करनी पड़ सकती है। इसमें DC फास्ट चार्जर मिलता है, जिससे कार की बैटरी 55 मिनट में फुल चार्ज हो जाती है।

बैटरी पर वारंटी

JSW MG मोटर इंडिया इसकी बैटरी पर शानदार बैटरी वारंटी देती है। पहले मालिक के तौर पर आपको इसकी बैटरी पर लाइफटाइम वारंटी मिलती है यानी आपको बैटरी की चिंता करने की जरूरत नहीं होगी। अगर आप इस इलेक्ट्रिक कार को बेचते हैं, तो दूसरे मालिक को 8 साल या 1,60,000 किलोमीटर की वारंटी मिलेगी, इसमें से जो भी पहले पूरा हो। इससे ग्राहकों को यह भरोसा मिलता है कि उनकी गाड़ी की बैटरी लंबे समय तक टिकाऊ रहेगी।

MG Windsor EV की कीमत

हाल ही में कंपनी ने MG Windsor EV की कीमतों में 50,000 रुपये की बढ़ोतरी की है। इसके बेस वेरिएंट Excite की कीमत 13,99,800 रुपये, मिडिल वेरिएंट Exclusive की कीमत 14,99,800 रुपये और टॉप वेरिएंट Essence की कीमत 15,99,800 रुपये (एक्स-शोरूम) है। इसे आप बैटरी-एज़-अ-सर्विस (BaaS) मॉडल के तहत 9.99 लाख रुपये में खरीद सकते हैं, जिसके तहत आपको 3.5 रुपये प्रति किलोमीटर बैटरी की रेंट के लिए देना होगा।

MG Windsor EV की खासियत

इसमें फ्रंट-माउंटेड इलेक्ट्रिक मोटर दिया गया है, जो 134 hp की पावर और 200 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह मोटर चार ड्राइविंग मोड्स- Eco+, Eco, Normal और Sport के साथ आती है, जो आपके अलग-अलग ड्राइविंग जरूरतों को पूरा करता है। इसमें 15.6-इंच का बड़ा टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 135 डिग्री तक रिक्लाइन होने वाली रियर सीट्स, पैनोरमिक ग्लास रूफ और 604 लीटर का बूट स्पेस मिलता है। इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग्स, 360-डिग्री कैमरा और इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

किआ सिरोस कितनी है सुरक्षित? बीएनसीएपी क्रैश टेस्ट में हुआ खुलासा, जानिए सेफ्टी रेटिंग

परिवहन विशेष न्यूज

किआ सिरोस बीएनसीएपी क्रैश टेस्ट हाल ही में लॉन्च हुई Kia Syros का BNCAP क्रैश टेस्ट हुआ है। इसने BNCAP क्रैश टेस्ट में 5-स्टार रेटिंग हासिल की है। इसे एडल्ट ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (AOP) में 32 में से 30.21 पॉइंट और चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (COP) में 49 में से 44.42 पॉइंट मिले हैं। Kia Syros कई एडवांस सेफ्टी फीचर्स के साथ आती है।

नई दिल्ली। किआ इंडिया ने हाल ही में Kia Syros को लॉन्च किया है। कंपनी की नई SUV, Kia Syros ने भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (BNCAP) में 5-स्टार रेटिंग हासिल की है। इसने एडल्ट ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (AOP) में 32 में से 30.21 पॉइंट और चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (COP) में 49 में से 44.42 पॉइंट हासिल किए हैं। अपनी बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स और शानदार परफॉर्मेंस के साथ साइरोस सब-कॉम्पैक्ट SUV सेगमेंट में अपनी पकड़ को और भी मजबूक बना लिया है। आइए जानते हैं कि Kia Syros के BNCAP क्रैश टेस्ट रिजल्ट, सेफ्टी फीचर्स और कीमत के बारे में।

एडल्ट ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (AOP)

Kia Syros ने AOP टेस्ट में बेहतरीन परफॉर्मेंस किया है। इसने फ्रंटल ऑफसेट डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में 16 में से 14.21 पॉइंट हासिल किया है। इस टेस्ट में ड्राइवर और को-ड्राइवर दोनों के सिर, गर्दन और पेल्विस को अच्छी सुरक्षा मिली है। इस टेस्ट में को-ड्राइवर को पैर की हड्डी को सिर्फ पर्याप्त सेफ्टी मिली है।

साइड मूवेबल डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में Syros ने 16 में से पूरे 16 पॉइंट हासिल किया है। इसमें ड्राइवर और को-ड्राइवर के सभी बॉडी पार्ट्स को अच्छी सुरक्षा मिली है।

चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (COP)

इसमें Syros ने 24 में से 23.42 पॉइंट हासिल किया है। 18 महीने के बच्चे के लिए फ्रंटल इम्पैक्ट में 8 में से 7.58 और साइड इम्पैक्ट में 4 में से 4 पॉइंट मिले हैं। वहीं, 3 साल के बच्चे के लिए फ्रंटल इम्पैक्ट में 8 में से 7.84 और साइड इम्पैक्ट में 4 में से 4 पॉइंट हासिल किए हैं।

Kia Syros के सेफ्टी फीचर्स

यह कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स के साथ आती है। कंपनी ने इसे रीइन्फोर्स्ड K1 प्लेटफॉर्म पर बनाया है, जो इसे मजबूत स्ट्रक्चर देता है। इसमें 20 स्टैंडर्ड सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं, जो 6 एयरबैग्स, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC), हिल स्टार्ट असिस्ट (HSA), व्हीकल स्टेबिलिटी मैनेजमेंट (VSM), ISOFIX चाइल्ड सीट एंकर पॉइंट्स, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक ऑटो होल्ड के साथ, सभी यात्रियों के लिए 3-पॉइंट सीटबेल्ट्स और सीटबेल्ट रिमाइंडर है। इसके अलावा इसमें लेवल-2 ADAS फीचर्स भी मिलते हैं, जिसमें लेन कीप असिस्ट और स्मार्ट क्रूज कंट्रोल दिया जाता है।

Kia Syros की कीमत

भारतीय बाजार में इसकी एक्स-शोरूम कीमत 9 लाख रुपये से शुरू होकर 17.8 लाख रुपये तक जाती है। भारत में इसका मुकाबला Tata Nexon, Hyundai Venue, Mahindra XUV 3XO, Maruti Suzuki Brezza और हाल में लॉन्च हुई Skoda Kylaq से देखने के लिए मिलेगा।

2025 सुजुकी हायाबुसा नए इंजन के साथ लॉन्च, नया कलर ऑप्शन के साथ मिले ये अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया मे अपनी सबसे पॉपुलर स्पोर्ट्स बाइक Suzuki Hayabusa 2025 वर्जन को भारत में लॉन्च कर दिया है। इस बार बाइक को न सिर्फ नए डुएल-टोन कलर ऑप्शन के साथ पेश किया गया है। इसके साथ ही इसमें नया इंजन भी दिया गयाहै। नई हायाबुसा OBD-2B उत्सर्जन मानकों के अनुरूप हो गई है। आइए जानते हैं कि नई Hayabusa को क्या नए फीचर्स मिले हैं?

नए कलर ऑप्शन

2025 Suzuki Hayabusa को तीन शानदार डुअल-टोन कलर में लॉन्च किया गया है। यह तीनो कलर ऑप्शन बाइक को और भी ज्यादा प्रीमियम और एयरोडायनामिक लुक देते हैं।

1.मेटैलिक मैट स्टील ग्रीन/ग्लास स्पार्कल ब्लैक

2.ग्लास स्पार्कल ब्लैक/मेटैलिक मैट टाइटेनियम सिल्वर

3.मेटैलिक मिस्टिक सिल्वर/पर्ल विगोर ब्लू

इंजन और परफॉर्मेंस

इस नई Hayabusa वहीं, दमदार 1,340cc इन-लाइन 4-सिलेंडर, फ्यूल-इंजेक्टेड, लिक्विड-कूल्ड DOHC इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 190 PS की पावर और 150 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन स्मूद एक्सीलेरेशन के लिए एक ब्रॉड टॉर्क वेव देता है। इसमें हल्के क्रैंकशाफ्ट, कनेक्टिंग रॉड और पिस्टन का इस्तेमाल किया गया है, जिसकी वजह से वाइब्रेशन कम होता है और इंजन की लाइफ ज्यादा रहती है। अब यब इंजन OBD-2B मानकों के अनुरूप हो गया है। यह भारत सरकार द्वारा निर्धारित लेटेस्ट एमिशन नॉर्म्स को फॉलो करती है, जिससे पर्यावरण पर इसका असर कम होता है। इसका बाइक की परफॉर्मेंस पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा।

टेक्नोलॉजी और इलेक्ट्रॉनिक्स

2025 Suzuki Hayabusa में कई एडवांस फीचर्स दिए गए हैं, जो राइडर को सेफ और पावरफुल बनाते हैं।

- पावर मोड सलेक्टर
- लॉन्च कंट्रोल सिस्टम
- बी-डाइरेक्शन क्विक शिफ्ट सिस्टम
- क्रूज कंट्रोल
- मोशन ट्रैक ट्रैक्शन कंट्रोल (TC)
- लो RPM असिस्ट और सुजुकी इजी स्टार्ट सिस्टम

इन फीचर्स के साथ ही हायाबुसा में LED हेडलाइट्स, ब्रेकिंग और स्टेबिलिटी कंट्रोल सिस्टम, और ट्रैक्शन मैनेजमेंट जैसी तकनीकें भी मिलती है।

डिजाइन और अंडरपिनिंग

Hayabusa को हाई-स्पीड परफॉर्मेंस और स्टेबिलिटी के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें सुजुकी सुजुकी रैम एयर डायरेक्ट (SRAD) मिलता है, जो बाइक की स्पीड बढ़ने के साथ ही परफॉर्मेंस को बूस्ट करता रहता है। साथ ही ट्विन स्विर्ल कंबस्टन चैंबर (TSCC) भी मिलता है, जो फ्यूल और हवा के मिश्रण को तेज और प्रभावी तरीके से जलाता है। इसके अलावा, KYB इनवर्टेड फ्रंट फोर्क्स, Brembo Stylema 4-पिस्टन फ्रंट ब्रेक कैलिपर्स और BATTLAX HYPERSPORTS 22 टायर्स मिलते हैं।

कितनी है नई कीमत

2025 Suzuki Hayabusa भारतीय बाजार में 16,90,000 रुपये एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है।

भारतीय कार खरीदारों की पहली पसंद बन गई है ये फीचर, नई रिपोर्ट में हुआ खुलासा

परिवहन विशेष न्यूज

जैसे-जैसे पूरे देश में तापमान चढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे कार खरीदने वालों की प्राथमिकताएं भी बदल रही हैं। सर्वे में यह भी सामने आया कि अब लोग एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) और सेफ्टी फीचर्स पर भी लोगों का नजरिया बदला है।

जैसे-जैसे पूरे देश में तापमान चढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे कार खरीदने वालों की प्राथमिकताएं भी बदल रही हैं। एक ताजा सर्वे में ये बात सामने आई है कि अब लोग कार में सनरूफ नहीं, बल्कि वेंटिलेटेड सीट्स को सबसे जरूरी फीचर मानने लगे हैं। पार्क+ रिसर्च लैब्स के एक सर्वे के मुताबिक, 78 प्रतिशत कार मालिकों ने वेंटिलेटेड सीट्स को अपनी सबसे बड़ी जरूरत बताया है।

देशभर से मिले दिलचस्प आंकड़े

पार्क+ का ये पैन-इंडिया सर्वे 6,000 कार मालिकों के अनुभवों पर आधारित था। सर्वे में पाया गया कि तेज गर्मी के चलते लोगों को अब कार के अंदर ठंडक बनाए रखने वाले फीचर्स की ज्यादा जरूरत महसूस हो रही है। पहले जहां वेंटिलेटेड सीट्स सिर्फ महंगी कारों में मिलती थीं। वहीं अब ह्यूंदै, किआ, एमजी, फॉक्सवैगन जैसी कंपनियां इसे मिड-रेंज कारों में भी देने लगी हैं।

सनरूफ का क्रेज अब हुआ पुराना

एक समय था जब सनरूफ को स्टाइल और लग्जरी का सिंबल माना जाता था। लेकिन अब हालात बदल गए हैं। इस सर्वे में सिर्फ 11 प्रतिशत लोगों ने सनरूफ को जरूरी फीचर माना। ज्यादातर लोगों ने बताया कि बारिश में लीक होना, मेंटेनेंस की दिक्कत और प्रैक्टिकल इस्तेमाल न होना जैसे कारणों से अब ये फीचर उतना काम का नहीं लगता। हां, कुछ लोगों के लिए ये अभी भी एक 'ड्रीम फीचर' है। लेकिन जरूरत की लिस्ट में अब यह ऊपर नहीं है।

ADAS और सेफ्टी फीचर्स पर भी बदला नजरिया

सर्वे में यह भी सामने आया कि अब लोग एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) और बाकी सेफ्टी फीचर्स को 'ऐड-ऑन' नहीं बल्कि 'बेसिक एक्सपेक्टेशन' की तरह देखने लगे हैं। सिर्फ 8 प्रतिशत लोगों ने इन्हें 'जरूरी फीचर' बताया। विश्लेषकों का मानना है कि यह उपभोक्ताओं के बीच बदलती मानसिकता की ओर इशारा कर सकता है।

लोग अब मानकर चल रहे हैं कि नई कारों में सेफ्टी फीचर्स स्टैंडर्ड होंगे, इसलिए उन्हें अलग से 'फीचर' के तौर पर नहीं देखा जा रहा। यह स्टैंडर्ड सेफ्टी पैकेजों के लिए वाहन निर्माताओं की प्रतिबद्धता में बढ़ते विश्वास को भी दर्शाता है।

बड़ी स्क्रीन का क्रेज भी घटा

जहां हाल की कई कार लॉन्च में बड़ी-बड़ी इंफोटेनमेंट स्क्रीन को हाईलाइट किया गया। वहीं इस सर्वे में पता चला कि सिर्फ 3 प्रतिशत लोग ही इसे जरूरी मानते हैं। इससे साफ है कि अब भारतीय ग्राहक स्टाइल से ज्यादा फंक्शनल कम्फर्ट पर ध्यान दे रहे हैं।

होंडा सीबी300आर की इस बाइक में आई बड़ी खराबी, कंपनी फ्री में कर रही ठीक

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा सीबी300आर के हेडलाइट में बड़ी खराबी आई है। जिसकी वजह से आपको रात में ड्राइव करने के दौरान बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसे ठीक करवाना काफी जरूरी है नहीं तो आपको रात में बाइक को ड्राइव करने के दौरान हादसा भी हो सकता है। इसे साल 2018 से 2020 के बीच बने मॉडल्स के लिए जारी किया गया है।

नई दिल्ली। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने अपनी पॉपुलर बाइक CB300R के कुछ यूनिट के लिए भारत में रिकॉल जारी किया है। इसे साल 2018 से 2020 के बीच बनी CB300R बाइक के लिए जारी किया गया है। कंपनी ने एक स्वैच्छिक रिकॉल बताया है और कहा है कि वह अपने ग्राहकों की सुरक्षा को सबसे ज्यादा अहमियत देते है। आइए जानते हैं कि Honda CB300R में क्या खराबी आई है और इसे कैसे ठीक करवा सकते हैं? आइए इसके बारे में जानते हैं।

Honda CB300R में क्या आई खराबी?

Honda की तरफ से CB300R के लिए रिकॉल जारी किया गया है। इसके हेडलाइट में खराबी आई है। इसमें लगे इंटरनल PCB (प्रिंटेड सर्किट बोर्ड) एक तकनीकी खराबी है। जिसकी वजह से लंबे समय तक बाइक चलाने और सड़क पर होने वाले कंपनी यानी वाइब्रेशन्स की वजह से हेडलाइट से जुड़े हुए वायर टूट सकते हैं या फिर अपनी जगह से हट सकते हैं। इसकी वजह से रात के समय में बाइक चलाने के दौरान हेडलाइन ऑन करने पर रुक-रुक कर रोशनी होने यानी फ्लिकरिंग की समस्या हो सकती है, या फिर हेडलाइट पूरी तरह से बंद हो सकती है। रात में बाइक चलाने के दौरान यह समस्या खतरनाक हो सकती है, क्योंकि हेडलाइट के बंद होने से राइडर को सड़क पर कुछ दिखाई नहीं देगा, जिसकी वजह से वह हादसे का शिकार हो सकता है।

ठीक करवाने के लिए क्या करना होगा?

Honda ने इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए सभी प्रभावित बाइक के लिए मुफ्त हेडलाइट के खराब हिस्से को बदलने का फैसला किया है। इसके तहत उन बाइक की हेडलाइट भी ठीक की जाएगी, जिनकी वारंटी खत्म हो चुकी है। कंपनी ने ग्राहकों से अपील की है कि वे अपनी बाइक का व्हीकल आइडेंटिफिकेशन नंबर (VIN) होंडा बिगविंग की ऑफिशियल वेबसाइट पर डालकर चेक करें कि उनकी बाइक इस रिकॉल का हिस्सा है या फिर नहीं। इसके अलावा, होंडा के डीलरशिप प्रभावित ग्राहकों से फोन, ईमेल या SMS के जरिए संपर्क करके पता कर सकते हैं कि उनकी बाइक इस रिकॉल का हिस्सा है या फिर नहीं। यह रिप्लेसमेंट प्रक्रिया सिर्फ होंडा बिगविंग सर्विस सेंटर पर होगी, जहां सर्विस टेक्नीशियन बाइक की जाँच करेंगे और जरूरी पार्ट्स को बदल देंगे।

किआ का फ्यूचर रोडमैप; 2030 तक बेचेगी हर 100 में 43 इलेक्ट्रिक कारें, जल्द लॉन्च होंगे कई के ईवी वर्जन

परिवहन विशेष न्यूज

किआ ने हाल में दक्षिण कोरिया में हुए CEO Investor Day में अपने फ्यूचर रोडमैप के बारे में बताया। कंपनी ने इसके साथ ही भी बताया कि वह भारतीय बाजार में साल 2030 तक कुल बिक्री में से 43% इलेक्ट्रिक व्हीकल को शामिल करना है। वहीं कंपनी ने बताया कि जल्द भी भारत में Seltos Hybrid EV2 और Syros EV को भी लॉन्च कर सकती है।

नई दिल्ली। हाल ही में दक्षिण कोरिया में CEO Investor Day का आयोजन हुआ। इसमें Kia ने अपनी नया और अपडेटेड 'Plan S Strategy' पेश की। यह प्लान कंपनी की मिड-टू-लॉन्ग टर्म बिजनेस स्ट्रैटेजी और फाइनेंशियल टारगेट को दिखाती है। इसके जरिए कंपनी साल 2030 तक 41.9 लाख ग्लोबल यूनिट्स की बिक्री करना है, जिसमें 23.3 लाख यूनिट्स इलेक्ट्रिफाइड व्हीकल्स (EV और हाइब्रिड) शामिल होंगी।

Kia का विजन 2030

- Kia के अनुसार, 2030 तक कंपनी अपनी ग्लोबल प्रोडक्शन कैपेसिटी को 17% तक बढ़ाकर 42.5 लाख यूनिट्स तक पहुंचाना है। इस लक्ष्य को पाने के लिए कंपनी अपने प्रोडक्ट लाइनअप को EV2, EV3, EV4, EV5 जैसे इलेक्ट्रिक मॉडल्स के साथ बढ़ा रही है। इसके साथ ही कंपनी PBV (Platform Beyond Vehicle) और पिकअप ट्रक जैसे नए सेगमेंट में एंट्री भी कर रही है।
- CEO Investor Day के दौरान कंपनी ने अपना B2B फोकस भी साफ कर दिया। इस दौरान उन्होंने बताया कि वह 2030 तक 2.5 लाख यूनिट्स PBVs बेचने की योजना बना रहे हैं। इसकी शुरुआत वह PV5 से करने वाली है। इसके बाद PV7 को 2027 में और PV9 को 2029 में पेश किया जाएगा। इस इलेक्ट्रिक पिकअप को कंपनी अमेरिका में भी पेश करने की प्लानिंग कर रही है।

भारत के लिए Kia का प्लान

- भारतीय बाजार भी Kia की इस प्लान को पूरा करने में अहम भूमिका निभाएगा। किआ इंडिया का लक्ष्य साल 2030 तक उसकी कुल बिक्री में से 43% इलेक्ट्रिक व्हीकल को शामिल करना है। इसका सीधा मतलब है कि हर 100 में से 43 कारें या तो पूरी तरह इलेक्ट्रिक होंगी या फिर हाइब्रिड।
- इसके साथ ही कंपनी की हाल ही में लॉन्च हुई Kia Syros को साल 2030 तक चाल लाख यूनिट की बिक्री करना लक्ष्य भी है और इसके इलेक्ट्रिफाइड वर्जन की संभावना काफी ज्यादा है। इसके नए प्रीमियम MPV पर भी काम चल रहा है, जो ICE (पेट्रोल/डीजल) और EV दोनों पावरट्रेन में देखने के लिए मिलेगी।

भारत में जल्द लॉन्च होगी Kia Seltos Hybrid

कंपनी की तरफ से पुष्टि की गई है कि Seltos और Telluride जैसे पॉपुलर मॉडल्स को हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ भारत में लॉन्च किया जाएगा। इसके बाद से ही माना जा रही है कि सेकंड जनरेशन Kia Seltos हाइब्रिड वर्जन के साथ लॉन्च होगी। यह भारत में कब तक लॉन्च होगी, यह फिलहाल स्पष्ट नहीं है।

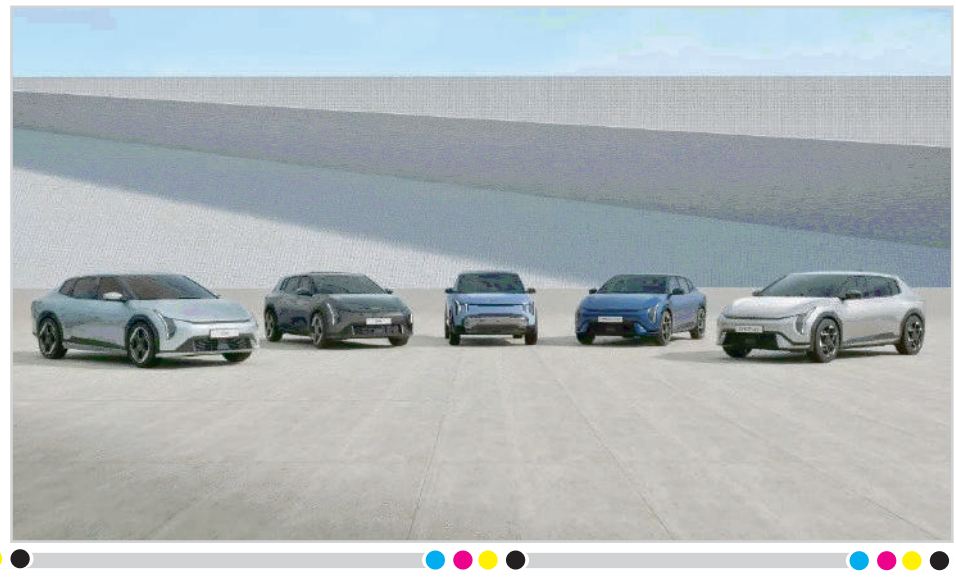

टूटती उम्मीदें, बिखरते युवा

विजय गर्ग

विश्व के कुछ सर्वेक्षणों में कहा गया है कि भारत क युवा देश है, मगर यहां पर लोगों को काम की आदत नहीं है। लगभग आधी जनसंख्या देश के सकल घरेलू उत्पादन में कोई योगदान नहीं देती। इसमें बुजुर्ग शामिल हैं, तो वे महिलाएं भी, जो घर और बाहर दोनों जगह मोर्चा संभाल रही हैं। अफसोस कि उन्हें अपने ही खेतों या घरों में काम करने पर कोई भुगतान नहीं किया जाता। देश की आधी जनसंख्या कार्ययोग्य है, लेकिन उसे सही ढंग से काम नहीं मिलता। यह सचमुच निराशाजनक है कि इस देश में रोजगार : की कोई गारंटी नहीं। अलबत्ता, भूख से न मरने देने की गारंटी अवश्य है। अपने से सत्तारूढ़ होने की इच्छा रखने वाली राजनीतिक पार्टियां प्रायः उनकी अनुकंपा से सत्ता की थाल जाती रहती हैं। सीमा से निकल कर और प्रवासी बन कर अपनी जिंदगी संवारने के सपने ह। वहीं युवा पीढ़ी, देश की देखती है। जबकि अब अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सत्तारूढ़ होने के बाद नौजवानों का विदेशी धरती पर जाना और स्थायी नागरिकता पाना कठिन हो गया है। वहां जो गए, अब उन्हें अवैध प्रवासी बता कर बैरंग लौटाया जा रहा है। डिग्रीधारी नौजवानों के सामने किस कदर चुनौती है, इसे समझा जा सकता है।

अभी कृत्रिम मेधा और इंटरनेट शक्ति का बोलबाला है। देश डिजिटल और स्वचालित हो रहा है, लेकिन विद्यालयों में इसके अनुरूप न तो पाठ्यक्रम बदलते हैं और न ही प्रशिक्षित और प्रवीण अध्यापक रखे गए हैं। इसलिए युवा पीढ़ी को अपनी डिग्रियां अप्रासंगिक लगने लगी हैं। इन डिग्रियों से वे इस समय कोई अच्छी नौकरी नहीं पा सकते। नतीजा, वे पराजित और अवसादग्रस्त महसूस कर रहे हैं। कुछ समय बाद वे खुद को नशे के दलदल बाद व खुद का में पाते हैं। हैं। इससे वे बाहर नहीं निकलते, क्योंकि उन्हें कोई विकल्प नजर नहीं आता। आंकड़े भी बताते हैं कि देश में आत्महत्या के मामले बढ़े हैं। इनमें किसान हैं, तो नौजवान भी, जिन्हें मेहनत करने पर भी बेहतर जिंदगी नहीं मिलती। नतीजतन, वे नशे की कंदराओं में चले जाते हैं। हर राज्य में नशे के सौदागरों और तस्करों ने अपने साम्राज्य खड़े कर लिए हैं। हर तालाब में बड़ी मछली से प्रेरित छोटी मछलियां उनका हुक्म बजा रही हैं।

पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के अनुसार हम इस देश की युवा शक्ति को जिंदा लाश नहीं बनने दे सकते। अभी हाल यह है कि चाहे हरियाणा हो या हिमाचल, राजस्थान हो या दिल्ली या फिर पंजाब, सब जगह बड़ी संख्या में नौजवान नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं। ड्रोन की सहायता से

घुसपैठ कर नशीले पदार्थों के पैकेट गिराए और पहुंचाए जाते हैं। हैरत की बात है कि जेलों में बंद माफिया और तस्कर भी इस अवैध व्यापार में शामिल हैं। मगर सब आंखें मूंदे हुए हैं। आखिर इस नशेबाजी बढ़ावा दे के पीछे कौन लोग हैं? इस सांठगांठ में शामिल काली भेड़ें प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवस्था में सरेआम विचरती हैं। मगर चौकसी करने वालों को ये दिखाई नहीं देतीं। इस तरह नशे का कारोबार लगातार फलता-फूलता है और नौजवान नशे के एक शिखर से दूसरे शिखर तक छलांग लगाते हुए अपने आप को मौत के हवाले कर देता है।

पिछले दिनों पंजाब में नशे के विरुद्ध महाअभियान चलाने का प्रण लिया गया। पुलिस बल जगह-जगह लगातार छापे मार रहे हैं। इस छापामारी में न केवल करोड़ों के नशीले पदार्थ बरामद हुए, बल्कि कई बड़े तस्कर भी पकड़े गए। इस अभियान को एक महीना हो चुका है।

अब तक इस नशा - विरोधी अभियान में, जिसे शुरू में इसे 'आपरेशन सील' नाम दिया गया, इस दौरान 2384 प्राथमिकियां दर्ज की गई। अभियान के तहत 4142 तस्कर गिरफ्तार किए गए और 146.3 किलो हेरोइन जब्त हुई। इसके साथ अफीम, चूरा पोस्त और नशीली गोलियां आदि पकड़ी गई। पंजाब पुलिस तस्करों की अवैध संपत्तियों पर बुलडोजर कार्रवाई कर रही है। पहले पंजाब के कुछ सांसदों ने इस कार्रवाई पर सवाल किया था, लेकिन बाद में इसका समर्थन कर दिया। इस कार्रवाई के बाद और नशे को जड़ से उखाड़ने का संकल्प करने जो भी तस्कर पकड़े जाते हैं, उनमें से दंडित होने वालों की के बावजूद, संख्या बहुत कम है। इसलिए अब कानून का अनुपालन तेजी से करना होगा, , ताकि समाज को बर्बाद करने वाले तस्करों को जल्दी सजा मिले। इससे दूसरों को भी सबक मिलेगा।

अभी नशे के सौदागरों के जो अड्डे सामने आए हैं, उनमें से कुछ तो स्कूलों में भी पाए गए। यह बात नहीं कि हरियाणा या हिमाचल में नशीले पदार्थों की वजह से बर्बादी कम हो रही है, अभी हरियाणा के मुख्यमंत्री ने भी नशे के विरुद्ध एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। हिमाचल में चौंकाने वाली बात यह है कि वहां कुछ इलाकों में जो तस्कर गिरफ्तार किए गए उनमें से नब्बे फीसद नशे का धंधा कर रहे थे। । प्रतिदिन सीमा पार से तस्करी करने वाले गिरोह के भंडाफोड़ होते हैं। केवल पंजाब में नहीं, बल्कि राजस्थान की सीमा तक से। इसको चाहे सभी राज्य एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर रहे हैं, लेकिन पंजाब ने तो इसे अपने ने प्रमुख एजेंडे में रखा है। । कोई दो मत नहीं कि पूरी तरह नशा उन्मूलन कर दिया जाए, तो पंजाब के नौजवान अपनी शक्ति का सही इस्तेमाल कर सकेंगे। जब नशा-विरोधी मुहिम का हम मूल्यांकन करते हैं, तो पा हैं कि इस मुहिम में जिन्हें बड़ी मछलियां कहा जाता है, उन पर पर तो ही नहीं डाला जाता। इसके अलावा पंजाब और राजस्थान जैसे इलाकों में अवैध शराब निकालने का धंधा भी बड़े जोर-शोर से किया जाता है। भारत इस समय एक बड़ी शक्ति बन चुका है। हम कृत्रिम मेधा

के विकास और डिजिटल बनने में किसी से कम नहीं। पश्चिमी देशों से भी बहुत पीछे नहीं। इसके अतिरिक्त हमारा अंतरिक्ष खोज अभियान भी बड़ी कामयाबी के साथ चल रहा है। हमने । हमने इन अभियानों को किफायत के साथ संपन्न करने और चंद्रयान-3 द्वारा चांद के दक्षिणी भाग उतारने में सफलता प्राप्त कर ली है, लेकिन सवाल कि नौजवानों की नई खेप इन अनुसंधानों में शामिल होती नजर क्यों नहीं आती ? नशे के इस्तेमाल ने उनके दिमागों को जैसे कुंद कर दिया है। जब शिक्षा संबंधी सर्वेक्षण ये बताएं कि आठवीं और दसवीं का छात्र दूसरी कक्षा का गुणा- भाग भी नहीं कर सकता और अंग्रेजी की पूर्ण वर्णमाला भी नहीं बता सकता, तो हम इस शिक्षा के स्तर की क्या बात करें ? इसका बड़ा कारण यह है कि स्कूलों तक नशा पहुंच चुका है। इसको जड़ से उखाड़ने के लिए न केवल प्रशासन को आगे आना होगा, बल्कि लोगों को भी 'सब चलता है' की प्रवृत्ति को त्यागना होगा। अभिभावकों का उतना ही दायित्व है, जितना सरकार का है। निस्संदेह युवाओं का भविष्य का बचाना जरूरी है। अगर उन्हें समुचित शिक्षा मिले और बेहतर भविष्य की गारंटी दी जाए, तो वे नशे के अंधे गलियारे में कभी नहीं भटकेंगे।

संघर्ष की की गरिमा

इस जगत में हर किसी के साथ कोई न कोई संघर्ष चलता ही रहता है। बचपन में अच्छी तरह पढ़ाई करने, अच्छे संस्कार सीखने, अनुशासन में रहकर अच्छा नागरिक बनने और किशोर बनते-बनते मन और शरीर से सुगठित तथा संतुलित बनने का संघर्ष, फिर अपने पैरों पर खड़े होने का संघर्ष आदि । मगर जीवन को तो चलते रहना होता है, संघर्ष का परिणाम चाहे कैसा भी हो, सकारात्मक या नकारात्मक ।फिर भी कोशिश करते रहना पड़ता है। कोशिश करके कामयाब होने की उम्मीद में हम सभी जुटे रहते हैं ।फिर उम्मीद तो आखिर उम्मीद नहीं, एक संजीवनी साबित होती है। कहते हैं, एक कदम ही हमारी आगे की यात्रा तय कर देता है। एक-एक कदम को मिलाकर हजार कदम होते हैं। यही जीवन की निरंतरता का सूत्र है । मगर जो कदम रुकने न दे, वह उम्मीद है।

अक्सर संघर्ष को केवल एक ही नजर से देखा जाता है, जबकि संघर्ष बहुआयामी होता है। आशा और उमंग ही संघर्ष को हमारे स्वभाव में शामिल करते हैं । कभी सफलता, कभी ठोकर, कभी असफलता, कभी अंधेरा, कभी उजाला, कभी तूफान के रूप में संघर्ष परिलक्षित होता है। कई बार तो कुछ लोगों का संघर्ष सही से अभिव्यक्त भी नहीं होता। जैसे एक गृहिणी का जीवन संघर्ष। उसे दूर से देखने वाले यही मान लेते हैं कि सरल और आसान सा जीवन है। आनंद ही आनंद है। मगर इन अनुमानों से परे एक गृहिणी का जीवन संघर्ष से लबरेज, अदृश्य और मौन भी होता है । उसकी दिनचर्या में कशमकश और जद्दोजहद होती है। सबको संभालना, सबका खयाल रखना, सबके विचारों के हिसाब से घर का एक सुखद माहौल बनाना, यह सब गृहिणी का ही संघर्ष है।

एक गतिमान और खुश घर उसके संघर्ष के बारे में सब कुछ कह देता है। अगर सही नजरें हों तो इस अद्भुत संघर्ष की एक झलक में उसका पूरा जीवन दिख जाता है। बच्चों के लिए पावन प्रेम उसकी आंखों से ही दिख जाता है। इसीलिए कहते हैं कि एक मां और पत्नी के लिए संघर्ष का पर्यायवाची खुशी और संतोष भी है। दुख या मलाल का उसमें कोई स्थान नहीं है। आज कहीं-कहीं, कभी-कभार किसी गृहिणी की बातों में अगर दुख दिखाई भी देता है, तो उसकी वजह उसकी कोई मजबूरी ही हो सकती है या फिर उसके सोचने का तरीका, जिसमें संघर्ष की सहजता की परतों को देखने-समझने की उसकी दृष्टि नए तरह विकसित हुई हो।

सामान्य तौर पर अपने जीवन में किसी भी तरह का संघर्ष करते हुए हम अपने 'निज' से ऊपर उठते हैं तो पाते हैं कि प्रकृति का कण-कण संघर्ष के बाद संतोष की अनुपम अभिव्यक्ति है। हमारे पास तो और भी विकल्प हैं पसंद-नापसंद, सुख-दुख को पहचानने के, लेकिन प्रकृति कोई विकल्प नहीं रखती । हमें भरोसा होना चाहिए कि हम ऐसे जगत का अभिन्न हिस्सा हैं जहां संघर्ष की ही गूंज है। दस साल तक भूदान आंदोलन के जनक विनोबा भावे सारे देश मे पैदल घूमते रहे। वे प्यार से उन लोगो से जमीन लेते, जिनके पास थी और प्यार से उन्हें दे देते थे, जिनके पास नहीं थी। उनसे संबंधित एक प्रसंग पढ़ा था । विनोबाजी के पेट मे अल्सर था, जो कभी - कभी बहुत दर्द करता था, लेकिन उनकी यात्रा नहीं रुकती थी। एक बार जब दर्द बढ़ गया तो चिकित्सकों ने उनकी जांच की। अच्छी तरह से देखभाल करके उन्होंने विनोबा जी से कहा, 'आपकी हालत गंभीर है। आप आठ महीने आराम करें ।' विनोबा जी ने मुस्कुराकर कहा कि हालत अच्छी नहीं है तो आपने चार महीने क्यों छोड़ दिए ? आपको कहना चहिए था कि बारहों महीने आराम करो । चिकित्सकों ने कहा कि आप पैदल चलना छोड़ दें। विनोबाजी ने उसी लहज में जवाब दिया, 'मेरे पेट में दर्द है, पैरों में नहीं ।' विनोबाजी ने एक दिन के लिए भी अपनी पदयात्रा बंद नहीं की। लोगों ने जब बहुत कहा तो उन्होंने जवाब दे दिया, 'सूर्य कभी नहीं रुकता, नदी कभी नहीं ठहरती, उसी अखंड गति से मेरी यात्रा चलेगी । ' उनकी इस एकाग्रता का ही नतीजा है कि बिना किसी दबाव के, प्यार की पुकार पर उन्हें कोई पैंतालीस लाख एकड़ भूमि मिल गई । यह है आशा सहित संघर्ष का सुपरिणाम । जाहिर है, संघर्ष को लेकर सकारात्मक सोच रखने से उसका फल बहुत अच्छा ही मिलता है।

यह संघर्ष वास्तव में अनंत है और संघर्ष करते हुए उम्मीद से परिपूर्ण व्यक्ति को इसीलिए अनमोल कहा जाता है। यह दुनिया कुछ भी कर ले, पर इस जगत में रहने के लिए आखिरकार हमें संघर्ष का सामना करने की सहमति पर ही आना होगा। संघर्ष को चुनने की आदत ही हमारी आत्मा से रोजमर्रा की जिंदगी से शिकायत की धूल और मैल को धो देती है। जो लोग ऐसा करते है वे खुद ही पाते हैं कि यह विचार ही सबसे अच्छा है और इसमें ऐसा कुछ है जो जीवन को सार्थक बनाता है। यों भी संघर्ष के बाद जो कामयाबी मिलती है, उसका स्वाद ही खास होता है। ठीक इसके उलट जब किसी व्यक्ति को बिना मेहनत और संघर्ष के कोई बड़ी कामयाबी मिल जाती है, तब उसके भीतर नाहक ही दंभ अपना घर बना लेता है । फिर संघर्ष की गरिमा नहीं रह जाती और वहां खोखली बुनियादी पर खड़े होकर ऊंचे सपने देखे जाते हैं ।

-विजय गर्ग

अंतहीन प्यास

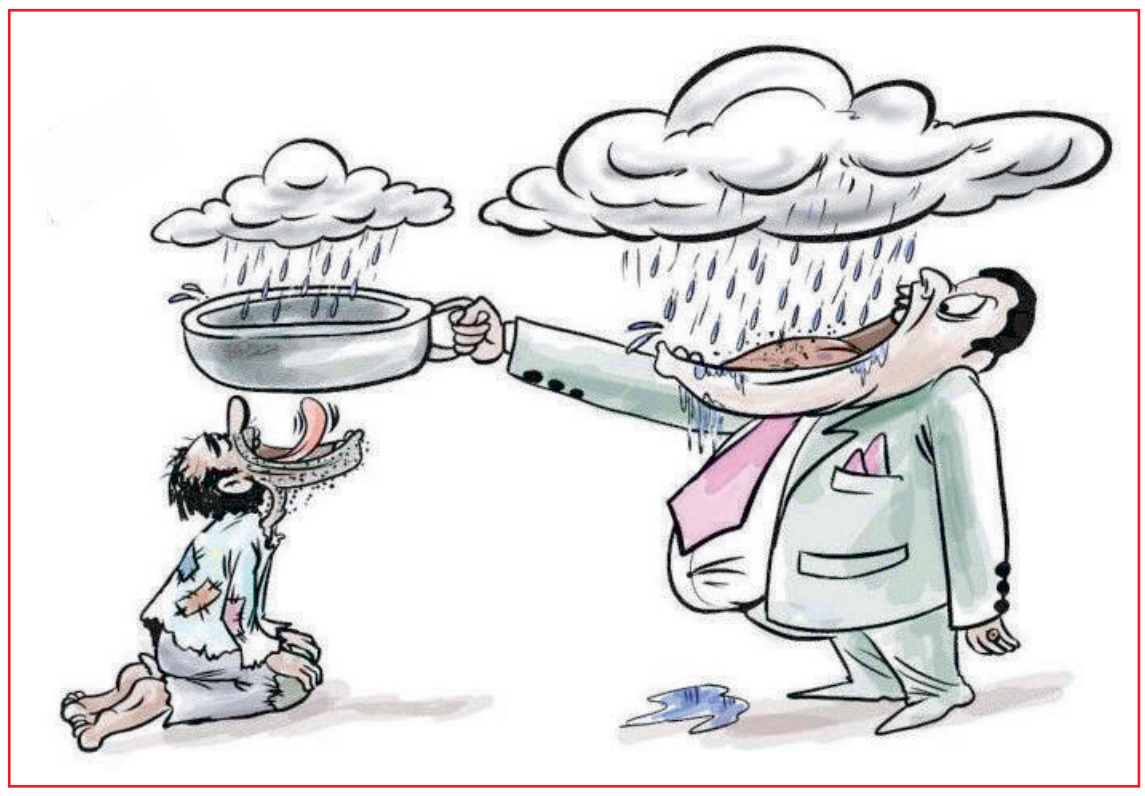

लालच बुरी बला है - यह वाक्य हम सभी ने सुना है, पर क्या हमने कभी इस पर गंभीरता से विचार किया है ? लालच केवल एक मानसिक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि एक ऐसा अंधकारमय दलदल है, जिसमें हम जितना उतरते हैं, उतना ही गहराई में धंसते जाते हैं। यह एक ऐसी आग है, जो जलाने वाले को ही राख कर देती है। लालच की कोई सीमा नहीं होती । यह इंसान को हमेशा और अधिक पाने की चाह में उलझाए रखता है। यह एक ऐसा मायाजाल है, जो व्यक्ति को सुख और संतोष से दूर कर देता है । महात्मा गांधी ने कहा था कि जो संतोषी है, वही अमीर है; जो लालची है, वह सदा दरिद्र है । इस कथन में जीवन का गूढ़ सत्य छिपा है । जो व्यक्ति अपने पास उपलब्ध साधनों में संतोष करता है, वही वास्तव में सुखी होता है, जबकि जो लालच के जाल में फंस जाता है, वह कभी भी वास्तविक आनंद प्राप्त नहीं कर पाता ।

लालच की प्रवृत्ति मनुष्य को कभी संतुष्ट नहीं होने देती । यह उस प्यास की तरह है, जो नदियों में मिलकर भी नहीं बुझती । एक व्यक्ति सोचता है कि काश मेरे पास दस हजार रुपए होते ! इसके बाद अगर किन्हीं हालात में उसे दस हजार मिल जाते हैं तब वह सोचता है कि अब एक लाख चाहिए ! इसके बाद भी उसकी इच्छा नहीं थमती । फिर गाड़ी, बंगला, शान-ओ-शौकत की भूख उसे सताने लगती ' है । यह भूख अमीर और सबसे अमीर व्यक्ति में भी समान रूप से पाई जाती । यह अंतहीन दौड़ है, जिसमें इंसान भागता रहता है, पर मंजिल कभी नहीं मिलती। लालच इंसान को आत्मिक शांति से दूर कर देता है और उसे भौतिक सुखों की अंधी दौड़ में धकेल देता है। इसलिए जीवन में संतोष को अपनाना ही सच्चा धन है, क्योंकि असली संपत्ति धन नहीं, बल्कि मन की तृप्ति है।

लालच एक ऐसा रोग है, जो यह कभी नहीं कहता कि बस अब और नहीं चाहिए ! बल्कि हर सफलता के बाद यह एक नई चाहत को जन्म देता है । चाणक्य का कहना है अगर आप एक लालची व्यक्ति को नियंत्रित नहीं कर सकते, तो समझ लीजिए कि आप खुद अपने विनाश की राह पर हैं । इतिहास साक्षी है कि लालच के कारण महल भी धराशायी हुए और साम्राज्य भी नष्ट हुए । दुर्योधन की अनियंत्रित इच्छाओं ने महाभारत जैसे महायुद्ध को जन्म दिया और रावण का लालच न केवल उसे, बल्कि संपूर्ण लंका को विनाश के गर्त में धकेल गया। यही प्रवृत्ति है, जो एक इच्छा को पूरी करने के बाद दूसरी, फिर तीसरी और अंतहीन इच्छाओं की श्रृंखला को जन्म देती है ।

भगवान बुद्ध कहते हैं, 'मनुष्य के लिए सबसे बड़ा शत्रु उसका लोभ और मोह है।' लालच व्यक्ति को विवेकहीन बना देता है, जिससे वह नैतिकता, ईमानदारी और करुणा को ताक पर रखकर केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति में लग जाता है । वह यह नहीं देखता कि उसके लालच का असर समाज पर क्या पड़ेगा। रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अनैतिक व्यापार, अपराध- ये सभी लालच की ही शाखाएं हैं। लालची व्यक्ति क्षणिक सुखों के पीछे भागते-भागते आत्मिक शांति और संतोष से वंचित हो जाता है। जो व्यक्ति लालच को नियंत्रित नहीं करता, आखिरकार लालच ही उसे नियंत्रित कर लेता है। यह एक ऐसी सुरंग है, जो निरंतर बढ़ती जाती है और अंत में व्यक्ति को निगल जाती है। इसलिए सच्चा सुख तृप्ति में है, न कि अंतहीन इच्छाओं के पीछे भागने में।

एक समय था जब लोग अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए मेहनत करते थे, पर आज की दुनिया में चाहतें जरूरतों से बड़ी हो गई हैं। मनुष्य अब आवश्यकताओं को पूरा करने के बजाय अनावश्यक इच्छाओं के पीछे भागने लगा है। पैसा कमाना बुरा नहीं, लेकिन अगर वह इंसानियत और नैतिकता को ताक पर रखकर अर्जित किया जाए, तो वही धन अभिशाप बन जाता है। यह सत्य है कि धन आवश्यक है, पर जब वह जीवन का अंतिम लक्ष्य बन जाता है, तब विनाश का कारण बनता है। लालच जितना खाता है, उतना ही बढ़ता जाता है । यही कारण है कि आज रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार और अनैतिक व्यापार समाज में अपनी जड़ें गहरी कर चुके हैं। जो लोग लालच के पीछे भागते हैं, वे अंततः अपने ही मूल्यों को तिलांजलि दे देते हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि असली सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि आंतरिक संतोष में है। स्वामी विवेकानंद का कहना है, 'जो मिला उसमें संतोष करो, क्योंकि इच्छाएं समुद्र की लहरों की तरह हैं, जो कभी नहीं रुकतीं।' यह कथन हमें यह सिखाता है कि इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती, और जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर काबू नहीं पा सकता, वह कभी भी वास्तविक सुख नहीं पा सकता।

यह संसार अनमोल है, पर हम उसे तुच्छ इच्छाओं के बोझ से बोझिल कर देते हैं। हमें यह समझना होगा कि संतोष ही सबसे बड़ी पूंजी है। एक गरीब किसान, जो दिनभर मेहनत करता है और रात को चैन की नींद सोता है, वह वास्तव में किसी अमीर व्यक्ति से अधिक सुखी होता है, जो अपार धन-संपत्ति होते हुए भी रातों को चैन से सो नहीं पाता। हालांकि इससे गरीब * व्यक्ति के अभाव की दुनिया और तकलीफों को सही नहीं ठहराया जा सकता। मगर लालच व्यक्ति को हमेशा बेचैन रखता है, वह उसे अपने ही बनाए जाल में फंसा देता है । इसी संदर्भ में कबीर ने कहा है- 'साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय, मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाए।' इस दोहे में संत कबीर ने यह संदेश दिया है कि जीवन में उतना ही पाना चाहिए, जितना हमें और हमारे समाज को उचित रूप से जीवित रख सके । अगर हर व्यक्ति इस सोच को अपनाए, तो समाज में ईमानदारी, प्रेम और करुणा का संचार होगा । लालच से मुक्त होकर जीने में ही असली आनंद है। जीवन में धन कमाना आवश्यक है, पर नैतिक मूल्यों के साथ। संतोष और सद्गुणों से परिपूर्ण जीवन ही सच्ची संपत्ति है, और वही हमें आंतरिक शांति प्रदान कर सकता है।

-विजय गर्ग

कक्षा से परे

ऐसी दुनिया में जहां पाठ्यपुस्तकों की तुलना में नौकरी के बाजार तेजी से विकसित हो रहे हैं, आज के छात्रों को अपने वायदा के बारे में अनिश्चितता का एक अभूतपूर्व स्तर का सामना करना पड़ता है । फिर भी, इस स्थानांतरण परिदृश्य के बावजूद, स्कूल और कॉलेज परीक्षा कारखानों के रूप में कार्य करना जारी रखते हैं, कुशल, आत्मविश्वास और नौकरी के लिए तैयार व्यक्तियों के बजाय डिग्री धारकों को मंथन करते हैं। हमें जो चाहिए वह सिर्फ अधिक शिक्षा नहीं है, बल्कि सही तरह की शिक्षा है - जो व्यावहारिक कैरियर परामर्श, बाजार उन्मुख कौशल विकास और वास्तविक जीवन की तैयारियों में निहित है।

अधिकांश भारतीय स्कूलों में कैरियर परामर्श या तो टोकन या गैर-मौजूद है। कई छात्र अभी भी पुरानी धारणाओं, माता-पिता के दबाव या सरासर अज्ञानता के आधार पर स्ट्रीम और करियर चुनते हैं। इंजीनियरिंग और दवा डिफ़ॉल्ट आकांक्षाएं बनी हुई हैं, यहां तक कि इन क्षेत्रों में रोजगार संतृप्त या तेजी से स्वचालित हो जाता है। छात्रों को वास्तव में समय पर, संरचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जो उन्हें अपने हितों की खोज करने, उद्योग के रुझानों को समझने और सूचित विकल्प बनाने में मदद करता है। कैरियर परामर्श को माध्यमिक स्तर से पाठ्यक्रम में एम्बेडेड किया जाना चाहिए, प्रशिक्षित पेशेवरों की भागीदारी और वास्तविक दुनिया के करियर के लिए नियमित संपर्क के साथ। हालांकि, केवल काउंसलिंग ही अंतर को नहीं भर सकती है यदि छात्र जीवित रहने और पनपने के लिए कुशल नहीं हैं। क्या सिखाया जाता है और क्या नौकरी बाजार की मांग के बीच बेमेल चौंका देने वाला है । नियोक्ता आज डिग्री से परे दिखते हैं - वे महत्वपूर्ण सोच, डिजिटल साक्षरता, रचनात्मकता, सहयोग और समस्या को सुलझाने की क्षमता चाहते हैं। संचार, टीम वर्क, अनुकूलनशीलता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे नरम कौशल समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से टमटम अर्थव्यवस्था और वैश्विक कार्यस्थलों में। अफसोस की बात है कि ये हमारे शिक्षण संस्थानों में शायद ही कभी पढ़ाए जाते हैं।

इसके अलावा, कई प्रतियोगी परीक्षाओं - चाहे सरकारी नौकरियों, छात्रवृत्ति या उच्च शिक्षा के लिए - शैक्षणिक ज्ञान से अधिक की आवश्यकता हो। वे रणनीति, गति, योग्यता और रचना की मांग करते हैं। अधिकांश छात्र, विशेष रूप से अल्पसेवित पृष्ठभूमि से, जोखिम और प्रशिक्षण की कमी के कारण इन परीक्षाओं से निपटने के लिए बीमार हैं। फाउंडेशन पाठ्यक्रमों और मेंटरशिप कार्यक्रमों के माध्यम से नियमित स्कूली शिक्षा में प्रतियोगी परीक्षा की तत्परता को एकीकृत करना, खेल के क्षेत्र को समतल कर सकता है।

महत्वपूर्ण रूप से, कौशल और नरम कौशल विकास को शैक्षणिक उत्कृष्टता के विकल्प के रूप में नहीं बल्कि इसके लिए एक आवश्यक पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। एक समग्र दृष्टिकोण जो बुद्धि और रोजगार दोनों का पोषण करता है, वह समय की आवश्यकता है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी, इंटर्नशिप, बूट शिविर और परियोजना-आधारित शिक्षण अपवाद के बजाय आदर्श होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, लचीलेपन और बहु-विषयक सीखने पर जोर देने के साथ, एक रूपरेखा प्रदान करती है - लेकिन इसकी सफलता कार्यान्वयन और इरादे में निहित है।

अगर हमें भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का दोहन करना है, तो हमें रटने की शिक्षा और मार्कशीट से परे जाना चाहिए। छात्रों को न केवल परीक्षा पास करने के लिए, बल्कि जीवन का सामना करने के लिए सुसज्जित होने की आवश्यकता है। उन्हें बाजार के लिए तैयार किया जाना चाहिए, न कि केवल डिग्री-तैयार। अन्यथा, हम बिना किसी दिशा, कुछ कौशल और खोए हुए अवसरों के साथ शिक्षित युवाओं की एक पीढ़ी बनाने का जोखिम उठाते हैं।

भविष्य उन लोगों का है जो अनुकूलनीय, जागरूक और सशक्त हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली को कल की नौकरियों के लिए छात्रों को तैयार करना बंद कर देना चाहिए - और उन्हें कल की संभावनाओं के लिए तैयार करना शुरू कर दें।

-विजय गर्ग

'नरसंहारी' का प्रत्यर्पण

दरअसल 26/11 मुंबई आतंकी हमला एक 'नरसंहार' था। उसमें 166 लोग मार दिए गए थे। यह दीगर है कि 9 आतंकियों को भी ढेर कर दिया गया। करीब 300 लोग घायल हुए। एक आतंकवादी अजमल कसाब जिंदा पकड़ा गया था, जिसे बाद में फांसी दे दी गई। पाकिस्तान ने ही उस 'नरसंहार' की साजिश रची थी। इसका बुनियादी सबूत यह है कि साजिशकारों में तहव्वुर राणा भी शामिल था, जो पाकिस्तानी फौज में डॉक्टर था। साजिश और हमले के दौरान वह पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई के मेजर इकबाल के लगातार संपर्क में रहा। अब 16 लंबे सालों और कुछ महीनों के बाद आतंकी साजिशकार तहव्वुर राणा भारत की गिरफ्त में है। हम राष्ट्रपति ट्रंप के आभारी हैं, क्योंकि उनके प्रशासन के तहत ही राणा का प्रत्यर्पण संभव हो सका है। 2014 में प्रधानमंत्री मोदी की सत्ता के बाद ही अमरीका के साथ प्रयास शुरू कर दिए गए थे, लेकिन राणा ने वहां की सर्वोच्च अदालत तक गुहार लगाई कि उसे भारत न भेजा जाए, क्योंकि उसे वहां की जेल में मारा जा सकता है, लेकिन नरसंहार की साजिश के साक्ष्य इतने पुख्ता थे कि अंततः अदालत ने प्रत्यर्पण के पक्ष में फैसला सुनाया। अब भारत में राणा के खिलाफ 'राष्ट्रीय जांच एजेंसी' (एनआईए) की अदालत में केस चलेगा। राणा के खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, यूएपीए, भारत के खिलाफ युद्ध आदि की धाराओं के तहत केस चलेगा। बेशक बहुत देर हो चुकी है, लेकिन साक्ष्य आज भी जिंदा हैं। राणा भारत की गिरफ्त में है और सह-साजिशकार डेविड हेडली अब भी अमरीकी जेल में कैद है। उसके प्रत्यर्पण की प्रक्रिया अभी शुरू भी नहीं हुई है। वह अमरीकी नागरिक है। हालांकि भारतीय एजेंसियां एक बार उसके साथ सवाल-जवाब कर चुकी हैं। उसी के बाद वह 'सरकारी गवाह' किस्म का आरोपित बन गया था। भारत सरकार को उसे भी हासिल करने की कोशिशें छोडनी नहीं चाहिए। बहरहाल एनआईए के आरोप-पत्र के मुताबिक, राणा ने भारत में ही हेडली से 231 बार संपर्क किया था। उन्होंने 8 रेकी मिशन भी चलाए थे और नरसंहार से पहले, अपने आखिरी मुंबई प्रवास के दौरान, राणा ने 66 फोन कॉल की थीं। राणा नवंबर, 2008 में ही दिल्ली में भी 11 दिनों तक ठहरा था। फिर पवई के एक होटल में रहा।

आतंकी हमले से पहले राणा दुबई चला गया था। भारत सरकार का मकसद है कि अब तहव्वुर राणा के खुलासों के जरिए पाकिस्तान की आतंकी भूमिका, दुनिया के सामने, बेनकाब की जानी चाहिए। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि भारत सरकार ने अमरीकी प्रशासन को जो डोजियर भेजा था, उसमें राणा और हेडली के अलावा हाफिज सईद, जकीउर रहमान लखवी, इलियास कश्मीरी, साजिद मीर और आईएसआई के मेजर इकबाल से संबंधित ब्यौरे भी दिए गए थे। राणा को आईएसआई, हेडली और लश्कर-ए-तैयबा के दरमियान का संपर्क बताया गया था। अब इन खुलासों को भारत सरकार राणा के जरिए सत्यापित करना चाहती है। इनमें अधिकतर आरोपित पाकिस्तान में आज भी सक्रिय हैं। गौरतलब यह है कि यदि भारत सरकार नए सिरे से फाट्फ के सामने, पाकिस्तान के खिलाफ, पुख्ता सबूत रखती है और फाट्फ पाकिस्तान को 'ग्रे लिस्ट' में डालने का फैसला करता है, तो दुनिया में पाकिस्तान को भीख मिलना भी मुश्किल हो जाएगा। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई, निर्णायक तौर पर, इसी तरह लड़ी जा सकती है। एनआईए के लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण अवसर है। राणा से बेहतर पूछताछ के जरिए आतंकी नेटवर्क पर प्रहार करने की क्षमता वह बढ़ा सकती है। राणा को अमरीका में सजा भी होती रही और सजा से माफी भी मिलती रही, लेकिन फिलहाल वह एक 'हिरासत केंद्र' में कैद था। राणा और हेडली ने डेनमार्क पर भी आतंकी हमले की साजिश रची थी। उसका रहस्य खुल गया, लिहाजा दोनों ही जेल में थे। बेशक पाकिस्तान मूल का राणा अब कनाडा का नागरिक है, लेकिन भारत का गुनाहगार है। जब हमारी अदालत राणा और दूसरे साजिशकारों को सजा सुनाएगी, तभी पीड़ितों को 'इंसाफ' मिलेगा।

(कलम से खींची गई नई सरहदें)
स्याही की सादगी: प्रियंका सौरभ की चुपचाप क्रांतिकारी कहानी

प्रियंका सौरभ: एक झलक

जन्मस्थान: आर्य नगर, हिसार, हरियाणा
शिक्षा: एम.ए. और एम.फिल (राजनीति विज्ञान)
प्रकाशित कृतियाँ:
समय की रेत पर (निबंध संग्रह)
दीमक लगे गुलाब (कविता संग्रह)
निर्भया (सामाजिक विषयक लेखन)
परियों से संवाद (बाल साहित्य)
फीयरलेस(अंग्रेज़ी में)
प्रकाशन: देश-विदेश के 10 हजार से अधिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में दैनिक संपादकीय प्रकाशन।
सम्मान और पुरस्कार:
1. आईपीएस मनुमुक्त 'मानव' पुरस्कार, 2020
2. नारी रत्न पुरस्कार, दिल्ली 2021
3. हरियाणा की शक्तिशाली महिला पुरस्कार, दैनिक भास्कर समूह, 2022
4. जिला प्रशासन भिवानी द्वारा 2022 में पुरस्कृत
5. यूके, फिलीपींस और बांग्लादेश से डॉक्टरेट की मानद उपाधि, 2022
6. विश्व हिंदी साहित्य रत्न पुरस्कार, संगम अकादमी और प्रकाशन 2023
7. सुपर वुमन अवार्ड, FSIA, 2023
8. ग्लोबल सुपर वुमन अवार्ड, जीएसआईआर फाउंडेशन गाजियाबाद, 2023
9. महिला रत्न सम्मान, द विलेज टुडे ग्रुप, 2023
10. विद्यावाचस्पति मानद पीएच.डी. साहित्य, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, बिहार 2023

उद्धरण बॉक्स:
"मैंने अपने हिस्से का आकाश नहीं माँगा,
मैंने बस इतना चाहा —
कि जो ज़मीन मेरी सोच को उगने दे,
वो बंजर न हो।" — *प्रियंका सौरभ*

हर युग में कुछ आवाज़ें होती हैं जो चीखती नहीं, बस लिखती हैं — और फिर भी गूंजती हैं। ये आवाज़ें न नारे लगाती हैं, न मंचों पर दिखाई देती हैं, लेकिन उनके शब्द पिघलते लोहे की तरह समाज के ज़मीर को गढ़ते हैं। प्रियंका सौरभ ऐसी ही एक आवाज़ हैं — जो लेखनी की नोंक से स्त्रीत्व, संघर्ष और संवेदना का नया भूगोल रच रही हैं।

एक गाँव, एक सपना, और एक लड़की:
हरियाणा के हिसार जिले का एक साधारण सा गाँव — आर्य नगर। यहाँ से उठी एक असाधारण सोच, जिसने कलम को हथियार नहीं, हथेली बनाया — समाज के चेहरे पर सहलाती भी रही और थपकी देती रही। प्रियंका का साहित्यिक सफर किसी किताब की कहानी जैसा लगता है — लेकिन उसकी जड़ें उस मिट्टी में हैं, जहाँ लड़कियों को आज भी चुप रहना सिखाया जाता है।

राजनीति विज्ञान में एम.ए. और एम.फिल करते हुए उन्होंने देश की नीतियों को न सिर्फ़ समझा, बल्कि उनके प्रभाव को महसूस भी किया। फिर उन्होंने एक सरकारी नौकरी को चुना, लेकिन समाज की सेवा को सिर्फ़ दफ्तर की दीवारों तक सीमित नहीं रखा।

महामारी और साहित्य का पुनर्जन्म:
जब 2020 की महामारी आई, तो पूरी दुनिया ठहर गई — लेकिन प्रियंका की कलम चल पड़ी। जहाँ ज़्यादातर लोग Netflix और डर के बीच फंसे थे, वहाँ उन्होंने 'समय की रेत पर' लिखा — एक ऐसा निबंध संग्रह, जो उस दौर की मनःस्थिति, असमंजस और सामाजिक दरारों को बेबाकी से सामने लाता है। यह उनकी लेखकीय यात्रा की सिर्फ़ शुरुआत थी। इसके बाद एक के बाद एक कई किताबें आईं — 'दीमक लगे गुलाब', 'निर्भया', 'परियों से संवाद', और महिलाओं के लिए लिखी गई 'Fearless'।

स्त्रीत्व की अनकही परिभाषा:
प्रियंका की रचनाएं किसी आदर्शवादी स्त्री विमर्श की नक़ल नहीं हैं। वे उस जमीन से उपजी हैं, जहाँ महिलाओं के सपने अक्सर परिवार की 'इज्जत' से दबा दिए जाते हैं। 'निर्भया' उनकी कलम का ऐसा प्रतिरोध है जो चीखता नहीं, लेकिन सन्नाटा चीर देता है।

वह 'स्त्री विमर्श' नहीं लिखतीं, बल्कि 'स्त्री का विस्मृत इतिहास' फिर से दर्ज करती हैं। वह सवाल उठाती हैं — क्या महिला सिर्फ़ संघर्ष की कहानी है? या वह समाज को बदलने का सपना भी है?

शब्दों की नहीं, दृष्टिकोण की क्रांति:
प्रियंका का लेखन किसी आंदोलन जैसा नहीं है — वह एक धीमी बारिश की तरह है जो आत्मा की ज़मीन को भिगोता है। उनकी भाषा में कोई नाटकीयता नहीं, कोई चमत्कार नहीं — बस यथार्थ है, और उसे देखने का साहस।

उनका लेखन पढ़ते हुए लगता है जैसे कोई अपनी माँ की चिट्ठी पढ़ रहा हो — सीधा, सच्चा और दिल के बेहद करीब। उन्होंने हमेशा उन आवाज़ों को जगह दी है जो अक्सर दबा दी जाती हैं — अकेली महिलाएं, विकलांग बच्चे, बुज़ुर्गों की उदासी, और शिक्षित पर चुप समाज।

कर्म और कलम का सामंजस्य:
सरकारी नौकरी और लेखन का मेल अक्सर असंभव लगता है, लेकिन प्रियंका ने दोनों को एक दूसरे का पूरक बना दिया। वह स्कूल में पढ़ाती हैं, बच्चों को सोचने की आदत सिखाती हैं — और फिर घर आकर समाज को लिखकर आईना दिखाती हैं।

उनके लिए लेखन सिर्फ़ एक काम नहीं, जिम्मेदारी है। जैसे कोई नर्स हर ज़ख्म को सहला कर भी मुस्कुराती है, वैसे ही प्रियंका हर सामाजिक पीड़ा को महसूस कर, उसमें कविता ढूंढ लाती हैं।

सम्मान नहीं, सवालों की तलाश:
उन्हें 'सुपर वुमन 2023' का खिताब मिला — लेकिन उनके लेखों में कोई 'महानता' की चकाचौंध नहीं है। वह हर उस औरत को महान मानती हैं जो हार के बाद भी फिर खड़ी होती है, हर उस शिक्षक को जो परीक्षा के बाहर सोच सिखाता है, और हर उस बच्चे को जो ₹क्यों?₹ पूछना नहीं छोड़ता।

प्रियंका की असली उपलब्धि वह सम्मान नहीं हैं, जो आयोजनों में मिलते हैं — बल्कि वे पल हैं, जब कोई पाठक उनके लेख को पढ़कर कहे, "मैंने अपने भीतर कुछ बदलता हुआ महसूस किया।"

प्रियंका सौरभ क्यों ज़रूरी हैं?
क्योंकि आज जब साहित्य ब्रांडिंग का शिकार हो गया है, प्रियंका अब भी अपने शब्दों को जमीन से उठाती हैं, प्रकाशन की चमक से नहीं।

क्योंकि जब मीडिया टीआरपी के पीछे भागता है, वह उन कहानियों को उठाती हैं जो टीआरपी नहीं, टीआर (तप, रचना) की मांग करती हैं।

क्योंकि जब महिलाएं सोशल मीडिया के 'फिल्टर' में फँसी हैं, वह अपने चेहरे से नहीं, अपनी सोच से सुंदर बनती हैं।

उपनिषद की स्त्री, इंटरनेट की दुनिया में:
प्रियंका उस पुरानी परंपरा की लेखिका हैं, जहाँ ज्ञान और करुणा का संगम होता है — लेकिन उनकी लेखनी नए समय के हर कोने को पहचानती है। वे परंपरा की धड़कनों को आधुनिकता के स्टेथोस्कोप से सुनती हैं।

उनकी सोच 'बोल्ड' नहीं है, लेकिन स्पष्ट है। उनकी भाषा 'जादुई' नहीं है, लेकिन आत्मा को छूती है। वे 'ट्रेंड' नहीं करतीं, लेकिन एक दिशा ज़रूर दिखाती हैं।

प्रियंका सौरभ का जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक साधारण इंसान भी समाज को असाधारण रूप से छू सकता है — अगर वह लिखना जानता हो, और लिखने से डरता न हो।

उन्होंने सिद्ध कर दिया कि साहित्य आज भी क्रांति कर सकता है — बिना मोर्चा खोले, बिना शोर मचाए, बिना किसी हैशटैग के।

उनकी कहानी नारे नहीं देती, बल्कि एक सवाल छोड़ती है —
"जब हर ओर शोर है, तब क्या आप अब भी सुन पा रहे हैं — वो एक स्त्री की चुपचाप चलती कलम की आवाज़?"

प्राइवेट सिस्टम का खेल: आम आदमी की जेब पर हमला

भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी अधिकार आज निजी संस्थानों के लिए मुनाफे का जरिया बन चुके हैं। प्राइवेट स्कूल सुविधाओं की आड़ में अभिभावकों से मनमाने शुल्क वसूलते हैं–ड्रेस, किताबें, यूनिफॉर्म, कोचिंग–सब कुछ महँगा और अनिवार्य बना दिया गया है। वहीं, प्राइवेट हॉस्पिटल डर और भ्रम का माहौल बनाकर मरीजों से मोटी रकम वसूलते हैं। सामान्य बीमारी को गंभीर बताकर महंगी जांच, दवाइयाँ और भर्ती का दबाव बनाया जाता है। इन संस्थानों के पीछे राजनीतिक संरक्षण है, जिस कारण कोई कठोर कार्रवाई नहीं होती। सबसे अधिक संकट में मध्यम वर्ग है, जिसे न सरकारी सेवाओं पर भरोसा है, न प्राइवेट सिस्टम से राहत। यह एक चेतावनी है कि यदि जनता ने अब भी आवाज़ नहीं उठाई, तो शिक्षा और स्वास्थ्य सिर्फ विशेषाधिकार बनकर रह जाएंगे।

डॉ सत्यवान सौरभ

भारत एक ऐसा देश है जहाँ शिक्षा और स्वास्थ्य को बुनियादी अधिकार माना जाता है। लेकिन जब यही अधिकार एक व्यापार का रूप ले लें, तो आम आदमी की जिंदगी में यह अधिकार बोझ बन जाते हैं। आज के दौर में प्राइवेट स्कूल और प्राइवेट हॉस्पिटल सुविधाओं के नाम पर ऐसी व्यवस्था खड़ी कर चुके हैं जो आम नागरिक की जेब पर सीधा हमला करती है। यह हमला सिर्फ आर्थिक नहीं, मानसिक और सामाजिक भी है।

शिक्षा या व्यापार?
प्राइवेट स्कूलों की बात करें तो अब ये शिक्षण संस्थान कम और फाइव स्टार होटल ज्यादा लगते हैं। स्कूल में दाखिले के लिए लाखों की डोनेशन, एडमिशन फीस, एनुअल चार्जेस, ड्रेस, किताबें, जूते, बस फीस – हर चीज में अलग-अलग मदों के नाम पर वसूली होती है। किताबें स्कूल के किसी 'अधिकृत वेंडर' से ही खरीदनी होती हैं, जिनका मूल्य बाज़ार दर से दोगुना होता है क्योंकि उसमें स्कूल का कमीशन जुड़ा होता है। स्कूल यूनिफॉर्म भी उन्हीं से लेनी पड़ती है, जो आम बाजार में मिलती ही नहीं।

यह सब इसलिए नहीं कि अभिभावक इन सुविधाओं की मांग करते हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि स्कूलों ने इसे 'अनिवार्य' बना दिया है। पढ़ाई नाम की चीज अब कक्षा में कम और कोचिंग संस्थानों में ज्यादा होती है – और दिलचस्प बात ये है कि उन कोचिंग संस्थानों के मालिक भी कई बार उन्हीं स्कूल संचालकों से जुड़े होते हैं। बच्चा दिनभर स्कूल, फिर कोचिंग, फिर होमवर्क, और फिर ट्यूशन – खुद के लिए ना समय, ना सोच, ना बचपन। इन सबका उद्देश्य एक ही होता है – '99% लाओ'। और जब ये नंबर नहीं आते, तो बच्चे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। अभिभावक दूसरों के बच्चों से तुलना करने लगते हैं, और ये पूरी प्रक्रिया मानसिक उत्पीड़न में बदल जाती है।

स्वास्थ्य का नाम, व्यापार का काम
अब अगर शिक्षा में ये स्थिति है, तो स्वास्थ्य क्षेत्र उससे भी भयावह है। प्राइवेट हॉस्पिटल्स का ढांचा अब इलाज से ज्यादा 'कमाई' पर केंद्रित हो गया है। अस्पताल में घुसते ही 'पर्ची' कटती है, फिर तरह-तरह की जाँचें, महंगी दवाइयाँ, ICU, और 'एडवांस पेमेंट' की माँग – और वो भी बिना यह बताए कि मरीज़ की स्थिति क्या है।

सामान्य सर्दी-खांसी या बुखार को भी डॉक्टर ऐसा बताते हैं मानो जीवन संकट में हो। डर दिखाकर लोगों को लंबी दवाओं और भर्ती की सलाह दी जाती है। मरीज़ ठीक भी हो जाए, तब भी बिल देखकर परिवार बीमार हो जाता है। जो दवा बाहर 10 रुपए में मिलती है, वही अस्पताल के बिल में 200 से 300 रुपए की होती है।

यहाँ तक कि मौत के बाद भी लाश को एक-दो दिन रोककर 'मर्चुरी चार्जेस', 'फ्रीजर चार्जेस' आदि के नाम पर अंतिम सांस तक पैसा वसूला जाता है। यह एक क्रूर मजाक है उस परिवार के साथ जो पहले ही अपनों को खो चुका होता है।

सरकार की चुप्पी – क्यों?
इस लूट का सबसे दुखद पहलू यह है कि यह सब किसी को छिपकर नहीं करना पड़ता – सब कुछ खुलेआम होता है। अखबार, सोशल मीडिया, न्यूज चैनल – हर जगह यह मुद्दा उठता है। हर साल प्राइवेट स्कूलों की फीस बढ़ोतरी और हॉस्पिटल बिलों पर शोर होता है, लेकिन हर बार यह शोर धीरे-धीरे दबा दिया जाता है।

क्यों? क्योंकि अधिकतर प्राइवेट स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल – इन सबके पीछे किसी ना किसी नेता का हाथ होता है। चाहे वह सत्ता पक्ष का हो या विपक्ष का – सिस्टम में बैठे अधिकतर लोग कहीं ना कहीं इस खेल में हिस्सेदार होते हैं। नियम-कानून बनते हैं, लेकिन उन पर अमल नहीं होता।

आरटीई (शिक्षा का अधिकार कानून), सीजीएचएस (स्वास्थ्य सुविधा योजना), नैशनल मेडिकल काउंसिल – ये सब नाम भर हैं, जिनका प्रयोग प्रचार में होता है, न कि आम आदमी को राहत देने में।

मध्यम वर्ग की त्रासदी
गरीबों के लिए सरकार कभी-कभी योजनाएँ बना देती है, अमीरों को कोई चिंता नहीं, लेकिन सबसे ज्यादा पिसता है मध्यम वर्ग। न उसे सरकारी स्कूल में भेजना गवारा होता है, न सरकारी अस्पताल में जाना। मजबूरी में वह प्राइवेट विकल्प चुनता है, और फिर उसी जाल में फँस जाता है – एक ऐसा जाल जिसमें न कोई नियंत्रण है, न कोई जवाबदेही।

मध्यम वर्ग न तो सड़क पर उतरता है, न ही आंदोलन करता है। वह हर महीने अपनी जेब काटकर EMI देता है, स्कूल की फीस चुकाता है, हॉस्पिटल के बिल भरता है, और बस यही सोचता है – "और कोई रास्ता भी तो नहीं है।"

समाधान की संभावनाएँ
अगर वास्तव में इस समस्या से निपटना है, तो कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। निजी संस्थानों की पारदर्शिता – स्कूलों और अस्पतालों को अपने शुल्क और सेवाओं की जानकारी सार्वजनिक रूप से वेबसाइट और नोटिस बोर्ड पर लगानी चाहिए। एक स्वतंत्र नियामक संस्था होनी चाहिए जो फीस और सेवा की गुणवत्ता की निगरानी करे। एक ऐसी प्रणाली जहां आम नागरिक अपनी शिकायत दर्ज कर सके और उसका समाधान समयबद्ध तरीके से हो। यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी भी राजनीतिक व्यक्ति या उनके परिवार का हित इन संस्थानों से ना जुड़ा हो। जब तक आम जनता एकजुट होकर आवाज नहीं उठाएगी, तब तक यह लूट का सिलसिला चलता रहेगा।

शिक्षा और स्वास्थ्य कोई 'सेवा' नहीं रह गई है – यह अब एक 'सर्विस' है, जिसका मूल्य तय होता है आपकी जेब देखकर। यह स्थिति किसी भी संवेदनशील और लोकतांत्रिक समाज के लिए शर्मनाक है। जब तक हम खुद नहीं जागेंगे, आवाज नहीं उठाएंगे, और सिस्टम से जवाबदेही नहीं माँगेंगे – तब तक यह प्राइवेट सिस्टम हमें ऐसे ही लूटता रहेगा।

हमें यह समझना होगा कि दिखावे की दौड़ में शामिल होकर हम अपने बच्चों का बचपन, अपने परिवार की शांति, और अपने भविष्य की स्थिरता दाँव पर लगा रहे हैं। यह समय है सवाल पूछने का, व्यवस्था को आईना दिखाने का – वरना जेब तो जाएगी ही, आत्मसम्मान भी खो जाएगा।

वरिष्ठ नागरिक सप्ताह की शुभकामनाएं

कम करें:
1. नमक
2. चीनी
3. ब्लीच किया हुआ आटा
4. डेयरी उत्पाद
5. प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ

जरूरी आहार:
1. सब्जियाँ
2. दालें
3. फलियाँ
4. मेवे
5. कोल्ड-प्रेस्ड तेल (जैतून, नारियल, आदि)
6. फल

तीन चीजें जो आपको भूलने की कोशिश करनी चाहिए:
1. अपनी उम्र
2. अपना अतीत
3. अपनी शिकायतें

जरूरी चीजें जिन्हें संजो कर रखें:
1. अपना परिवार
2. अपने मित्र
3. अपने सकारात्मक विचार
4. स्वच्छ और सुखद घर

तीन आदतें जो अपनानी चाहिए:
1. हमेशा मुस्कुराएँ / हँसें
2. अपनी गति से नियमित शारीरिक गतिविधि करें
3. अपने वजन को नियंत्रित रखें

छह आवश्यक जीवनशैली आदतें:
1. प्यास लगने का इंतजार न करें, पानी पीते रहें
2. थकान होने का इंतजार न करें, समय पर आराम करें
3. बीमार पड़ने का इंतजार न करें, नियमित चिकित्सा जांच करवाएँ
4. चमत्कार की प्रतीक्षा न करें, ईश्वर पर विश्वास रखें
5. खुद पर विश्वास कभी न खोएँ
6. सकारात्मक रहें और हमेशा बेहतर भविष्य की आशा रखे

यदि आपके भी मित्र 47-90 वर्ष के हैं तो यह संदेश उन्हें भेजें। 60 +आयु वाली महान हस्तियों को सादर नया पदनाम ₹₹भाग्यशाली व्यक्ति₹₹ देते हुए हुए उन्हें शतायु होने की परमात्मा से कामना करता हूँ।

जीवन में चार का महत्व

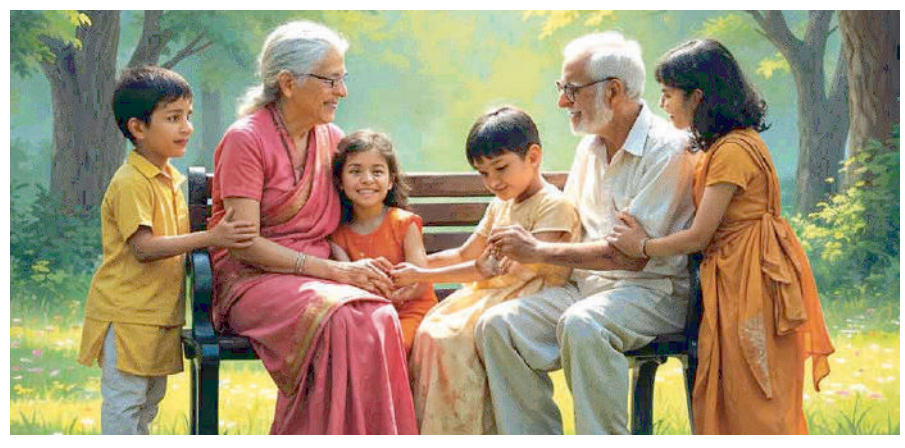

१. चार बातों को याद रखे :- बड़े बूढ़ो का आदर करना, छोटों की रक्षा करना एवं उनपर स्नेह करना, बुद्धिमानो से सलाह लेना और मूर्खो के साथ कभी न उलझना !

२. चार चीजें पहले दुर्बल दिखती है परन्तु परवाह न करने पर बढ़कर दुःख का कारण बनती है :- अग्नि, रोग, ऋष्टा और पाप !

3. चार चीजो का सदा सेवन करना चाहिए :- सत्संग, संतोष, दान और दया !

४. चार अवस्थाओ में आदमी बिगड़ता है :- अहम, पाप का धन, अधिकार और अविवेक !

५. चार चीजे मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलते है :- भगवान को याद रखने की लगन, संतो की संगती, चरित्र की निर्मलता और उदारता !

६. चार गुण बहुत दुर्लभ है :- धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकार में निराभिमानता !

७. चार चीजो पर भरोसा मत करो :- बिना जीता हुआ मन, शत्रु की प्रीति, स्वार्थी की खुशामद और बाजारू ज्योतिषियों की भविष्यवाणी !

८. चार चीजो पर भरोसा रखो :- सत्य, पुरुषार्थ, स्वार्थहीन और मित्र !

९. चार चीजे जाकर फिर नहीं लौटती :- मुह से निकली बात, कमान से निकला तीर, बीती हुई उम्र और मिटा हुआ ज्ञान !

१०. चार बातों को हमेशा याद रखे :- दूसरे के द्वारा अपने ऊपर किया गया उपकार, अपने द्वारा दूसरे पर किया गया अपकार, मृत्यु और भगवान !

११. चार के संग से बचने की चेस्टा करे :- नास्तिक, अन्याय का धन, पर(परायी) नारी और परनिन्दा !

१२. चार चीजो पर मनुष्य का बस नहीं चलता :- जीवन, मरण, यश और अपयश !

१3. चार पर परिचय चार अवस्थाओं में मिलता है :- दरिद्रता में मित्र का, निर्धनता में स्त्री का, रण में शूरवीर का और कष्ट में बंधू-बान्धवो का !

१४. चार बातों में मनुष्य का कल्याण है :- वाणी के सयंम में, अल्प निद्रा में, अल्प आहार में और एकांत के भवत्स्मरण में !

१५. शुद्ध साधना के लिए चार बातो का पालन आवश्यक है :- भूख से कम खाना, लोक प्रतिष्ठा का त्याग, निर्धनता का स्वीकार और ईश्वर की इच्छा में संतोष !

१६. चार प्रकार के मनुष्य होते है : (क) मक्खीचूस - न आप खाय और न दुसरो को दे ! (ख) कंजूस - आप तो खाय पर दुसरो को न दे ! (ग) उदार - आप भी खाय और दूसरे को भी दे ! (घ) दाता - आप न खाय और दूसरे को दे ! यदि सब लोग दाता नहीं बन सकते तो कम से कम उदार तो बनना ही चाहिए !

१७. मन के चार प्रकार है :- धर्म से विमुख जीव का मन मुर्दा है, पापी का मन रोगी है, लोभी तथा स्वार्थी का मन आलसी है और भजन साधना में तत्पर का मन पूर्ण स्वस्थ है।

तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण: भारत की एक बड़ी सफलता !

आतंकवाद भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए आज भी एक नासूर है और हाल ही में इस नासूर पर लगाम लगाने के क्रम में मुंबई धमाकों 2008 के साजिशकर्ता तहव्वुर राणा को अमेरिका से भारत लाया गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह भारत की आतंकवाद के खिलाफ एक बड़ी जीत है।सच तो यह है कि यह भारत सरकार के अथक रणनीतिक प्रयासों का ही परिणाम है कि तहव्वुर राणा को भारत लाया जा सका है। पाठकों को बताता चलूं कि मुंबई आतंकवादी हमले में सैकड़ों लोग मारे गए थे, जिनमें 26 विदेशी नागरिक भी थे और इस हमले की विश्वव्यापी निंदा हुई थी। वास्तव में भारत का यह कदम आतंकवादी संगठनों, विशेषकर पाकिस्तान के लिए एक सशक्त/सख्त संदेश है कि किसी एक देश का आतंकवादी किसी अन्य देश में बेफिक्र होकर नहीं घूम सकता। पाठक अच्छी तरह से जानते होंगे कि आतंकवाद का मतलब है, किसी राजनीतिक, धार्मिक, या वैचारिक मकसद को पूरा करने के लिए हिंसा या धमकी का इस्तेमाल करना। वास्तव में आतंकवाद का मकसद, सरकार को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करना या लोगों को डराना होता है। वास्तव में सच तो यह है कि आतंकवाद को एक तरह की हिंसात्मक गतिविधि माना जाता है। संक्षेप में कहें तो यह मानवता के विरूद्ध एक गंभीर अपराध है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इस कदम से अमेरिका का आतंकवाद के प्रति दृष्टिकोण भी और अधिक स्पष्ट हो गया है। सच तो यह है कि आतंकवाद व आतंकवादी किसी भी राष्ट्र के मित्र नहीं हो सकते हैं। यदि हम यहां पर आतंकवाद की खास बातों पर विचार करें तो यह व्यक्तियों के बीच की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह तो एक प्रकार से सामाजिक समूहों और राजनीतिक शक्तियों के बीच संघर्ष है। वास्तव में सच तो यह है कि आतंकवादियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति, असीमित युद्ध का एक रूप ही तो है।कहना ग़लत नहीं होगा कि आतंकवाद को संरक्षण देने वाले देश स्वयं इसके दुष्परिणामों से अछूते नहीं रह सके हैं और विशेषकर पाकिस्तान इसका जीता-जागता उदाहरण है।आतंकवाद बहुत ही घृणित और विनाशकारी अपराध है। गौरतलब है कि तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण आतंकवाद के प्रति वैश्विक परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। साथ ही, भारत सरकार ने आतंकवाद के प्रति अपनी जीरो टोलरेंस(शून्य सहनशीलता) नीति को भी वैश्विक स्तर पर दृढ़ता से प्रमाणित किया है। अब सरकार से यह अपेक्षा की जा सकती है कि भविष्य में भी इसी प्रकार से अन्य आतंकवादियों और आर्थिक अपराधियों के प्रत्यर्पण को भी सुनिश्चित किया जाएगा। बहरहाल, पाठकों को यह याद होगा कि कुछ समय पहले ही व्हाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में तहव्वुर राणा को भारतीय कानून का सामना करने के लिए भारत भेजने पर सहमति व्यक्त की थी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार राणा पेशे से चिकित्सक है, जिसका जन्म पाकिस्तान में हुआ था तथा बाद में वह कनाडा चला गया था और वहां का नागरिक बन गया। मुंबई आतंकवादी हमले के मुख्य साजिशकर्ताओं में एक अमेरिकी नागरिक डेविड कोलमैन हेडली उर्फ दाउद गिलानी का राणा करीबी सहयोगी रहा है। उल्लेखनीय है कि हेडली ने मुंबई हमले की रेकी की थी और इस साजिश को साकार करने में राणा ने उसकी मदद की थी।पाठकों को बताता चलूं कि उस समय मुंबई के ताज होटल, सीएसटी और कामा अस्पताल समेत कई जगहों पर हमला हुआ था। इस दौरान पुलिस व सेना की जवाबी कार्रवाई में आतंकी अजमल कसाब जीवित पकड़ा गया था तथा उसे कानूनी प्रक्रिया में दोषी पाये जाने के बाद वर्ष 2012 में उसे 21 नवंबर 2012 में फांसी दे दी गई। गौरतलब है कि कसाब के विरुद्ध दायर चार्जशीट में राणा, हेडली के नामों का भी उल्लेख किया गया है।आरोप है कि राणा ने पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा और हरकत-उल-जिहादी इस्लामी के आतंकवादियों के साथ मिल कर देश की आर्थिक राजधानी मुंबई पर हमले की साजिश रची थी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अमेरिका की खुफिया एजेंसी एफबीआई ने वर्ष 2020 में राणा को गिरफ्तार किया था। दरअसल, उसकी गिरफ्तारी भारत के कूटनीतिक दबाव के कारण हुई थी। बाद में जांच एजेंसियों की पूछताछ में यह सामने आया कि मुंबई आतंकी हमले में राणा का भी हाथ रहा है। हाल फिलहाल, एनआईए को तहव्वुर राणा की 18 दिन की रिमांड मिली है और इस संबंध में पटियाला हाउस कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है।

उम्मीद की जा सकती है कि पूरी जांच के बाद मुंबई हमले में पाकिस्तान की भूमिका की भी पुख्ता जानकारी भारत को मिल सकेगी। हालांकि, यह बात अलग है कि यह पहले भी प्रमाणित हो चुका है कि इस हमले की साजिश पड़ौसी देश पाकिस्तान में ही रची गई थी। भारत के पास इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं, लेकिन पाकिस्तान यह कभी भी स्वीकार नहीं करेगा। हालांकि, पाकिस्तान का चेहरा अब पूरी दुनिया के समक्ष एक्सपोज हो चुका है कि वह आतंकवाद और आतंकियों का असली गढ़ है। हाल फिलहाल, 26/11 के मुंबई आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा का अमरीका से भारत प्रत्यर्पण एक कानूनी सफलता भर नहीं है, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का प्रमाण भी है कि हम आतंकवाद को किसी भी हाल और सूरत में स्वीकार करने वाले नहीं हैं। जैसा कि ऊपर भी यह कह चुका हूं कि यह भारत की आतंकवाद के प्रति ज़ीरो टोलरेंस की नीति को स्पष्टतया दिखाता है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि भारत ने न केवल राणा की आतंकी हमले में संलिप्तता के ठोस प्रमाण प्रस्तुत किए, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि उसके साथ अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप व्यवहार किया जाएगा। इसके बाद, अमरीकी अदालतों में लंबी कानूनी प्रक्रिया चली। राणा ने भारत में निष्पक्ष सुनवाई न होने का तर्क देने के साथ अपनी जान को खतरा बताते हुए प्रत्यर्पण का विरोध भी किया था। अंत में यही कहूंगा कि मुंबई हमला देश की आत्मा पर हुआ एक ऐसा घातक वार था, जिसके जख्म आज भी हमारे मन में हरे हैं। वास्तव में तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण वैश्विक एकजुटता को भी दर्शाता है जो कि आतंकवाद के खिलाफ आवश्यक है। अमरीका के इस सहयोग से दोनों देशों(भारत-अमेरिका) के रणनीतिक संबंधों को भी गति मिल सकेगी और दोनों देशों का भरोसा भी इससे कहीं न कहीं मजबूत हो सकेगा। हाल फिलहाल तहव्वुर राणा भारत की न्यायिक प्रक्रिया के अधीन है, अतः यह आवश्यक है कि उसके खिलाफ मुकदमा पारदर्शिता और निष्पक्षता से चलाया जाए। यह भारत की न्याय प्रणाली के प्रति आमजन के विश्वास को और मजबूत करेगा। साथ ही, मुंबई हमले के उन पीड़ित परिवारों के लिए ढांढस बढ़ाएगा, जिन्हें उस आतंकी हमले ने अपूरणीय क्षति पहुंचाई।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

मारवाड़ी युवा मंच पर्ल महिला शाखा सिकंदराबाद द्वारा 2624 वाँ भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के उपलक्ष में नुमाइश मैदान में फ्रूट वितरण किए गए!!

सिकंदराबाद प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा मंत्री सुमन घोड़ेला ने बताया कि शाखा अध्यक्षक्षा शीतल जैन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कार्यक्रम जन सेवा के तहत भगवान महावीर जन्मकल्याण महोत्सव में 800 प्लेट फ्रूट वितरण किया गए ! कार्यक्रम में पधारे जैन सेवा संघ के अध्यक्ष योगेश जी सिंघी , अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच जोन 5 के पूर्व उपाध्यक्ष युवा ललित जी जैन का शाखा की और से गलपट्टा पहनाकर स्वागत किया !

आज के इस कार्यक्रम के लाभार्थी परिवार श्री अमित जी , शीतल जी मनोत का भी गलपट्टा पहनाकर स्वागत किया ! शाखा की और से लाभार्थी परिवार का बहुत बहुत आभार !

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में शाखा के सभी सदस्यों का विशेष सहयोग रहा ! कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथिगण एवं शाखा सदस्यो का जन सेवा संयोजक मोनिका सोनी और कविता मांडन ने विशेष आभार व्यक्त किया !

महात्मा ज्योतिबा फुले को उनकी जयंती पर विनम्र श्रद्धांजलि दी

परिवहन विशेष न्यूज

हाँसी। आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल ने कहा कि आज महात्मा ज्योतिबा फुले की 198वीं जयंती पर जब देश उन्हें श्रद्धाभाव एवं मान- सम्मान के साथ याद कर रहा है, तो कुछ घटनाएं हमारे समाज की असल तस्वीरों को भी कुरेद रही हैं।

अपने विचारों को प्रचारित करने के लिए फुले ने सबसे प्रसिद्ध कृति गुलामगिरी (गुलामी) है, जो 1873 में प्रकाशित हुई थी। यह भारत की जाति व्यवस्था पर हमला है, इसमें निचली जातियों के सदस्यों की स्थिति की तुलना संयुक्त राज्य अमेरिका में गुलाम लोगों से की गई है ।

ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल, 1827 को हुआ था. वह एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता, व्यवसायी, जाति-विरोधी समाज सुधारक और लेखक थे, उन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबों, दलितों, महिलाओं और पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए लगा दिया।

शिक्षा का दीपक तब तक नहीं जल सकता जब तक आवाज़ों को दबाया जाता रहेगा।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने कहा था कि-

विद्या बिना माटी गई, मति बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, वित्त बिना गति गई, वित्त बिना सूद गया, तीन अनर्थ, एक अविद्या ने की। महात्मा ज्योतिबा फुले ने कहा था कि पूजा-पाठ करना धर्म नहीं, धंधा है: बाल काटना नाई का धर्म नहीं धंधा है चमड़े की सिलाई करना मोची का धर्म नहीं धंधा है इसी तरह पूजा पाठ करना या करवाना ब्राह्मण का धर्म नहीं धंधा है। जातिवाद को मिटाना हमारा सामाजिक दायित्व है। "सभी मनुष्य समान हैं, जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। सद्भावना और सहानुभूति ही मानव जीवन का आधार है।

नरेश गुणपाल, आरटीआई एक्टिविस्ट

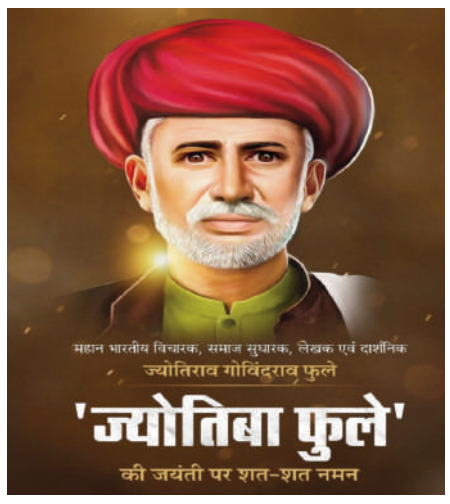

बदली वैश्विक परिस्थितियों में भारत की सधी चाल वैश्विक नेता बना सकती है

पंकज गांधी जायसवाल

वर्तमान में पूरी दुनिया में अमेरिकी टैरिफ के कारण जो उथल पुथल दिखाई दे रही है और वैश्विक शेयर बाज़ारों में जो हलचल देखने को मिल रही है, वह कई देशों के लिए चिंता का विषय हो सकती है लेकिन भारत के लिए यह एक सुनहरा अवसर बनकर उभर रहा है। पूरी दुनिया द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इकॉनमी के मामले में रिसेट मोड में आ गई है. अमेरिका अब अपनी बड़े भाई के रोल की जगह बराबर के साझेदार की भूमिका में आना चाहता है. दुनिया के कोतवाल से ज्यादा उसे अब अमेरिका फर्स्ट के तहत व्यापारिक सौदों में अमेरिका को अपने हितों का त्याग नहीं करना है. दुनिया के आर्थिक और राजनैतिक समीकरण तेजी से बदल रहें हैं. यदि भारत इस बदलते परिदृश्य में रणनीतिक सूझ-बूझ और संतुलित दृष्टिकोण अपनाता है तो वह निकट भविष्य में वैश्विक आर्थिक नेतृत्व की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है। सुकून की बात है कि भारत ने कोई त्वरित और उतावलेपन वाली प्रतिक्रिया नहीं दी है. प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में जयशंकर, निर्मला सीतारमण से लगायत पीयूष गोयल तक सब सधी हुई प्रतिक्रिया दे रहें हैं और इसी की दरकार है. एक आक्रामक प्रतिक्रिया माहौल को भारत के खिलाफ ले जा सकती है. अभी इस माहौल को भारत के हित के हिसाब से ले आना है. यह भारत के लिए एक अवसर भी हो सकता है.

नीचे कुछ प्रमुख कारण दिए गए हैं जो इस संभावना को सशक्त आधार प्रदान करते हैं. पहला चाइना वन पॉलिसी' के तहत भारत एक रणनीतिक विकल्प के रूप में अपने आपको स्थापित कर सकता है. विश्व स्तर पर अमेरिका और चीन को लेकर अनेक देशों की नीतियां पुनः मूल्यांकन के दौर में हैं। 'चाइना वन पॉलिसी' के चलते कई देश वैकल्पिक आपूर्ति स्रोत की तलाश में हैं और भारत इस स्थिति में एक विश्वसनीय साझेदार बनकर उभर सकता है। उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला और राजनीतिक स्थिरता के लिहाज से भारत एक भरोसेमंद विकल्प बन सकता है।

मौजूदा टैरिफ वार से चीन के उत्पादों की लागत अमेरिका में बढ़ सकती है और यह भारत के लिए संभावनाओं का द्वार खोलती है. अमेरिका में चीन के उत्पादों पर टैरिफ, लॉजिस्टिक बाधाएं और राजनीतिक तनावों के कारण उनकी लागत में वृद्धि हो रही है। ऐसे में अमेरिकी कंपनियां भारत से आपूर्ति को प्राथमिकता दे सकती हैं। इससे भारतीय निर्यातकों के लिए एक नया द्वार खुल सकता है, विशेषकर मैन्युफैक्चरिंग, फार्मा और टेक सेक्टर में। इसके अलावा वैश्विक निवेशक भी चाइना के विकल्प में अपना मैन्युफैक्चरिंग बेस भारत शिफ्ट कर सकते हैं. रिजर्व बैंक द्वारा ब्याज दरों में कटौती और निवेश को प्रोत्साहन एक अच्छा कदम है. भारतीय रिज़र्व बैंक अगर 'accommodative approach' अपनाते हुए ब्याज दरों में कटौती करता है तो यह घरेलू निवेशकों के लिए एक सकारात्मक संकेत होगा। इससे बाजार में तरलता बढ़ेगी, छोटे उद्योगों को सहारा मिलेगा और उपभोक्ता खर्च में वृद्धि होगी जो समग्र आर्थिक विकास को गति देगा।

भारत में घरेलू मांग ज्यादा होना निर्यात के मुकाबले भारत की ताकत बन रहा है. बकौल वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भारत की अर्थव्यवस्था एक बड़ी उपभोक्ता अर्थव्यवस्था है। अधिकांश उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत का निर्यात पर कम निर्भर रहना एक ताकत है। जब वैश्विक मांग में सुस्ती हो, तब भी भारत की घरेलू मांग उसे स्थिर रख सकती है। इससे शेयर बाज़ार में स्थायित्व आने की संभावना है।

इस बार अच्छे मानसून की संभावना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का संबल भी भारत को संभाल रहा है. अच्छे मानसून की भविष्यवाणी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उम्मीद की किरण जगाई है। इससे कृषि उत्पादन बेहतर रहेगा, ग्रामीण मांग में वृद्धि होगी और उपभोक्ता सेंटीमेंट्स सकारात्मक बने रहेंगे। यह सभी तत्व भी शेयर बाजार को स्थायित्व देने में सहायक होंगे।

सरकार भी अमेरिका के साथ मजबूत द्विपक्षीय संबंधों को आकार दे रही है। इससे रणनीतिक साझेदारी, निवेश सहयोग, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यापार के नए मार्ग खुल सकते हैं। यदि भारत इस अवसर का विवेकपूर्ण उपयोग करता है, तो वह अन्य विकासशील देशों की तुलना में एक मजबूत और अग्रणी स्थिति में आ सकता है। कुल मिलाकर निष्कर्ष यह निकल कर आ रहा है कि बाजार में अनिश्चितता के इस दौर में जहां कई देश असमंजस की स्थिति में हैं, भारत के पास स्पष्ट रणनीति, घरेलू मांग, अंतरराष्ट्रीय विश्वास और सकारात्मक सेंटीमेंट्स जैसे मजबूत आधार मौजूद हैं। यदि नीति निर्माता सधी चाल चलते हैंब्याज दर, व्यापार नीति और वैश्विक संबंधों पर संतुलित दृष्टिकोण रखते हैं तो भारत न केवल खुद को सुरक्षित रख सकता है, बल्कि वैश्विक बाजार में नेतृत्व की भूमिका भी निभा सकता है। अब समय है भारत के उठ खड़े होने का सधे कदम, संतुलित नीति और वैश्विक सोच के साथ।

पंकज गांधी जायसवाल

विजय आनंद क्रिकेट मैदान अत्तापुर में सम्पन्न

आतापुर शेखावाटी किंग्स के धुरंधर खिलाड़ी आज अपना जलवा दिखायेगे और टीम को विजय दिलायेगें,गौरव सैनी (कप्तान) पंकज, हंशु,क्रिश,शेखर,सुनील,सुशील,निश्चय,किशोर,अनमोलरोहन,सौरभ, मोंटी,रियांश,अभिषेक,अमित,दिनेश खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने हेतु विकाश शर्मा अपने मित्रमंडल के साथ पहुँचे।

वक्फ विधेयक बिल की बजे से बिजेड़ी दल का बिभाजन शुरु हुआ है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : वक्फ विधेयक मुद्दे के बाद अब राज्य की राजनीति बीजद को लेकर जोरों पर है। ओबीसी विधेयक को लेकर बीजद सांसदों के बीच मतभेद अब बढ़ गया है। जिस तरह पहले सस्मित को लेकर काफी चर्चा हुई थी, अब पांडियन फिर से चर्चा का विषय बन गए हैं।पांडियन इसलिए सुर्खियों में आ गए हैं क्योंकि देबाशीष सामंतराय सहित बीजद के कई शीर्ष नेताओं ने बीजद में इस तरह के संघर्षों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पांडियन को जिम्मेदार ठहराया है। हालात ये हैं कि हाल ही में देबाशीष को अपनी ही पार्टी के सांसदों ने घेर लिया है। यही कारण है कि देबाशीष ने पांडियन को निशाना बनाया।

इस सब के बीच, पार्टी सुप्रीमो नवीन पटनायक ने पांडियन को क्लीन चिट दे दी। पांडियन के खिलाफ बोलने वाली नेता और वरिष्ठ नेता पार्वती त्रिपाठी ने कहा कि वह पार्टी से नहीं हैं। वर्तमान में सोशल मीडिया और सभी मीडिया आउटलेट्स पर क्या चर्चा हो रही है ? पांडियन के खिलाफ कार्रवाई कहां हो रही है ? नवीन पटनायक ने वीके पांडियन का समर्थन किया बीजद अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री नवी पटनायक ने बुधवार को पांडियन से जुड़े विवाद पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि पांडियन पिछले 10 महीनों से पार्टी से दूर हैं और पार्टी की गतिविधियों में शामिल नहीं हुए हैं। नवीन ने अपने आवास पर संवाददाताओं से कहा, 'पांडियन ने ओडिशा और बीजद के लिए बहुत अच्छा काम किया है। उनकी किसी भी प्रकार की अनुचित आलोचना नहीं की जानी चाहिए। नवीन पटनायक ने मैं यहां कहना चाहता हूं कि मैं पार्टी सदस्यों द्वारा होटलों में आयोजित किसी भी बड़ी बैठक के खिलाफ हूं। उनका अपना पार्टी कार्यालय शंख भवन है, जो एक बड़ा स्थान है जहां उन्हें कहा गया है कि उन्हें अपनी बैठकें आयोजित करनी चाहिए और वे ऐसा करते हैं। मैं यहां यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि पूर्व विधायक सरवण त्रिपाठी को कुछ साल पहले बीजद से निष्कासित कर दिया गया था क्योंकि वह चिटफंड मामले में आरोपी थे और कुछ साल जेल में भी रहे थे। वह पार्टी से नहीं है । नवीन पटनायक ने वीके पांडियन का समर्थन करते हुए कहा कि पांडियन ने न केवल राज्य के लिए बल्कि अतीत में पार्टी के लिए भी बहुत अच्छा काम किया है। इसलिए किसी भी बात के लिए उसकी आलोचना या दोष नहीं लगाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 10 महीने से अधिक समय पहले पार्टी छोड़ दी थी और अब वे किसी भी पार्टी कार्य में शामिल नहीं हैं।

इसके साथ ही नवीन ने पार्टी के भीतर चल रहे असंतोष को लेकर भी कड़ा फैसला लिया है। हाल ही में, वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025 को लेकर राज्यसभा में पार्टियों के बीच मतभेद उभरने के बाद विवाद हो गया था। इस बारे में नवीन ने कहा, हम एक धर्मनिरपेक्ष पार्टी हैं और मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि हर राय सुनी जाए और चिंताओं का समाधान किया जाए। उन्होंने पार्टी नेताओं को निर्देश दिया है कि वे होटलों में बड़ी बैठकें करने के बजाय पार्टी कार्यालय शंख भवन में चर्चा करें। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि किसी ने पार्टी के खिलाफ कुछ भी किया तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। वक्फ विधेयक संसद के दोनों सदनों में पारित हो चुका है तथा अधिसूचित भी हो चुका है। हालाँकि, राज्यसभा में बीजद की आपत्ति के मुद्दे पर पैदा हुआ बवाल थमने का नाम नहीं ले रहा है। पिछले चार दिनों से बीजद के राज्यसभा सदस्यों और कुछ वरिष्ठ व कनिष्ठ नेताओं के बीच वाकयुद्ध चल रहा है। और कभी वरिष्ठ नेता होटलों में मिलते हैं तो कभी विधायकों के घर पर। बीजद की इस स्थिति ने जमीनी स्तर से लेकर शीर्ष तक सभी के मन में प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है।

पटियाला के एक निजी होटल में बीजद नेताओं की बंद कमरे में बैठक हुई। कार्यक्रम में वरिष्ठ नेता शशिभूषण बेहरा, अशोक चंद्र पांडा, चंद्रसारथी बेहरा, नृसिंह साहू, भूपिंदर सिंह और पार्वती त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित थे. बैठक के बाद शशिभूषण ने कहा, बीजद एक अनुशासित पार्टी है। हमारे नेता नवीन पटनायक हैं। यदि बाहरी ताकतें पार्टी को कमजोर करने की कोशिश करेंगी तो सुप्रीम कोर्ट इसे बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने आगे कहा कि बीजद एक बड़ी क्षेत्रीय पार्टी है। इसने कई वर्षों से राज्य के लोगों का विश्वास और भरोसा अर्जित किया है। किसी भी परिस्थिति में बीजद की आलोचना नहीं होने दी जाएगी। नवीन पर हमला करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। शशि ने कहा कि जो लोग समस्याएं पैदा कर रहे हैं, उन्हें बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023